ॐ श्री भीडभञ्जन महादेव पञ्चाङ्गम् ॐ

विक्रम सम्वत् 2081 * ईस्वी सन् 2024-2025

'कालयुक्त' नाम सम्वत्सर

राजा - मंगल मन्त्री - शनि

तपोनिष्ठ परमादरणीय 108 श्रीमत्स्वामी
विश्वात्मानन्द गिरि जी महाराज
संस्थापक व अध्यक्ष - तत्त्वमसि आश्रम

✻ ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः॥ ✻

✻ ॥ ॐ श्री भीडभञ्जन महादेवाय नमः॥ ✻

✻ ॥ ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः॥ ✻

ॐ श्री भीडभञ्जन महादेव पञ्चाङ्गम्

‘कालयुक्त’ नाम सम्वत्सर

राजा – मंगल **मन्त्री – शनि**

विक्रम सम्वत् 2081, शाङ्कराब्द 1237
कलिवर्ष 5125, शक सम्वत् 1946
ईस्वी सन् 2024–2025

‘कालयुक्त’ नामक इस सम्वत्सर के दशाधिकारी

राजा–मंगल, मन्त्री–शनि, सस्येश–मंगल, धान्येश–सूर्य,

मेघेश–शुक्र, रसेश–गुरु, नीरसेश–मंगल,

फलेश–शुक्र, धनेश–चन्द्र, दुर्गेश–शुक्र

तत्त्वमसि आश्रम

पीपलवाली गली, रानी गली,
भूपतवाला, हरिद्वार–249410
उत्तराखण्ड, भारत
www.tattvamasi-ashram.org

सम्पादक – स्वामी परमानन्द गिरि
संकलनकर्ता – आचार्य रवीन्द्र किशोर शास्त्री

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पूज्य महाराज श्री के आशीर्वचन

ॐ नमः शिवाय बैंक

आश्रम द्वारा ॐ नमः शिवाय बैंक नामक एक अनुष्ठान का आरम्भ किया है जिसमें भक्तगणों एवं इच्छित व्यक्तियों को ॐ नमः शिवाय मन्त्र लिखने के लिये खाली पुस्तकें दी जाती है जो वे नित्य नियमपूर्वक अथवा समयानुसार भरकर वापस करते है जिसे आश्रम में उनके नाम से जमा किया जाता है।

ॐ नमः शिवाय मन्त्र का दशांश सहित पुरश्चरण करने के लिये 6,70,000 जप करने पड़ते हैं जोकि 134 पुस्तको में पूरा होता है।

पुरश्चरण की पूर्ति पर आश्रम द्वारा जपकर्ता के नाम से श्री सोमनाथ ज्योतिर्लिङ्ग में अभिषेक कराया जायेगा।

नाम स्मरण की इतनी महिमा है कि स्वयं गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी श्री रामचरितमानस में कहा है कि -

कलियुग केवल नाम अधारा। सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा।।
कहँ लगि कहौं मैं नाम बड़ाई। राम न सकहिं नाम गुण गाई।।

यदि इस दैवी अनुष्ठान में भाग लेने की किसी की इच्छा हो तो वह आश्रम से पत्र अथवा ई-मेल द्वारा सम्पर्क कर सकता है।

हर बार की तरह इस बार भी यह पञ्चाङ्ग आप सभी की सेवा में रखते हुये मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है।

।। इत्यों शम् ।।

विषय सूची

पूज्य महाराज श्री के आशीर्वचन 2
निर्देश 5
सम्वत् एवं दशाधिकारी फल 6-10
द्वादश राशि फल 11-14
प्रमुख व्रत-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ 15-19
संदिग्ध प्रमुख व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय 20-22
कुम्भ-महापर्व-प्रयागराज 23-24
श्री अम्बे जी की आरती 25-26
महिषासुरमर्दिनी-स्तोत्रम् 27-29
श्री शिव जी की आरती 30
श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम् 31-36
रुद्राष्टकम् 37
बिल्वाष्टकम् 38
लिङ्गाष्टकम् 39
श्री शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् एवं द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणम् 40
शिवताण्डवस्तोत्रम् 41
श्री गङ्गाष्टकम् 42
वर्गीकृत तिथि सूचना (दिनाङ्क अनुसार) 43
तिथि वारादि पञ्चाङ्ग 44-91
शुभ व्यापार आरम्भ मुहूर्त्त 92
यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त्त 93
चूडाकर्म मुहूर्त्त 94
शुभ विवाह मुहूर्त्त 95-100
गृहारम्भ मुहूर्त्त 101
नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त 102
राहु काल / यम काल / सर्वार्थ सिद्धि योग / अमृत सिद्धि योग 103
सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल 104-106
गुप्त नवरात्रि / कलंक चौथ चन्द्रदर्शन दोषनिवारक मन्त्र 106
अमृत सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल 107
गण्डमूल के नक्षत्र / गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल 108-109
शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार 109-110
कुम्भ एवं मकर राशि में शनि का गोचर फल 110-111

विषय सूची

पाद (पाया) फल विचार एवं शनि शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय 112
नामाक्षरानुसार नक्षत्र राशिज्ञान चक्र 113
यात्रा विचार प्रकरण / राहु वास चक्र. 114
दिक्शूल परिहार / यात्रा में चन्द्रमा विचार. 115
सूर्योदय से चौघड़िया दिन के प्रति अंश में यात्रा का फल 115
सूर्यास्त से चौघड़िया रात्रि के प्रति अंश में यात्रा का फल 116
भद्रा लोक वास / भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल 117-119
यज्ञोपवीत धारण करने एवं त्यागने का मन्त्र 119
पञ्चक नक्षत्र विचार / पञ्चकारम्भ एवं समाप्तिकाल. 120
दीपावली (श्री महालक्ष्मी पूजन) 121-122
अथ संक्षिप्त-सन्ध्योपासना-विधिः 123-126
देवपूजा सम्बन्ध में कुछ शास्त्रोक्त बातें 127-130
विविध द्रव्यों द्वारा शिवपूजन से अभीष्ट प्राप्ति 131-132
नव ग्रहों के जपार्थ वैदिक मन्त्र. 132
51 शक्तिपीठ. 133-137
18 पुराण (एक परिचय) / 84 लाख योनियाँ 138
भारत के चार धाम / उत्तराखण्ड के चार धाम 138
14 लोक / सप्तर्षि / दशावतार 139
षोडश संस्कार (एक संक्षिप्त परिचय) 140
आध्यात्मिक जीवन में गुरु का महत्त्व. 141
गुरु से मन्त्र ग्रहण तथा जप विधि (संक्षिप्त) 141
होमादि में अग्निवास 142
होमादि में शिववास 143
चतुर्युगों की व्यवस्था का वर्णन 144
आपको किस दिन क्या करना शुभ है 145
अन्य विविध मुहूर्त. 146-147
ग्रह राशि सम्बन्धी रत्न विचार 148
ग्रह कृत अनिष्ट फल निवारण हेतु सूर्यादि ग्रहों के दानादि पदार्थ 149
ग्रह दोष निवारण हेतु बीज मंत्र. 150
नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम् / नवग्रहस्तोत्रम्. 151
वास्तु प्रकरण. 152-155
प्राकृतिक उपचार 156-160
मेथी के गुणकारी लाभ 160

निर्देश

- यह पश्चाङ्ग 30:44 अक्षांश के आधार पर है। तिथि, नक्षत्र की समाप्ति का काल घण्टा, मिनट के अनुसार है।
- दोपहर 12 बजे के बाद 1 बजे का मान पाठकों की सुविधा के लिये 13 दिया गया है। उसी प्रकार दोपहर 2 बजे के लिये 14।
- जहाँ पर 24, 25, 26 आदि अंक लिखे हैं, वहाँ 24 रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26 को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंको में भी 24 घटाकर अर्धरात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक **भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार पिछली तारीख का दिन ही माना जाता है।**
- तिथि एवं नक्षत्र का समय समाप्ति-काल में दिया गया है।
- करण तथा योग प्रातःकालीन सूर्योदय के ही लिखे गये हैं।
- पूर्णिमा के लिये 15 और अमावस्या के लिये 30 लिखा गया है, गते को सौरमास की प्रतिष्ठा जानें।
- भद्रा तथा सर्वार्थ सिद्धियोग पर्वनाम में दिये गये हैं। कहीं-कहीं उनका मान 24 घण्टा 30 मिनट लिखा हो तो उसका अर्थ हैं रात्रि के 12 बजकर 30 मिनट।
- मुहूर्त्त जिस दिन के शुभ हैं उसी दिन के दिये गये हैं।
- **हवन करते समय अग्निवास का बड़ा महत्त्व है तथा जिस दिन अग्निवास पृथ्वी पर हो उसी दिन हवन किया जाता है अतः जिस दिन अग्निवास पृथ्वी पर है उस दिन के पर्वनाम में का चिह्न दिया गया है।**

✻ सम्वत् एवं दशाधिकारी फल वि.सं. 2081 ✻
॥ सम्वत्सर – कालयुक्त, राजा – मंगल, मन्त्री – शनि ॥

नव विक्रमी संवत् 2081 के आरम्भ (9 अप्रैल, 2024 ई.) में बार्हस्पत्यमान (गुरुमान) से शिव (रुद्र) विंशति के अन्तर्गत 'एकादश युग' का द्वितीय 'कालयुक्त' नामक (सम्वत्सरों में 52वाँ) सम्वत्सर का प्रारम्भ हो चुका होगा। (कालयुक्त-संवत्सर का आरम्भ लगभग 19 मार्च, 2024 ई.से हो चुका होगा)

नव विक्रमी संवत् का प्रवेश 8 अप्रैल, 2024 ई. सोमवार को रात्रि 11 बजकर 51 मिनट पर (23:51), **रेवती नक्षत्र तथा वैधृति योग कालीन वृश्चिक लग्न** में होगा। शास्त्र एवं प्रचलित परम्परानुसार नवसंवत् का प्रारम्भ तथा राजा का निर्णय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वार-अनुसार ही किया जाता है। **'मंगलवार'** से नवसंवत् का प्रारम्भ होने के कारण आगामी वर्ष (संवत्) का राजा भी **'मंगल'** होगा। सम्वत्सर का निर्णय भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (संवत् के आरम्भ) में विद्यमान् सम्वत्सर को ही लिया जाता है। तदनुसार **'कालयुक्त'** नामक नव वि. संवत् 2081 तथा चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 9 अप्रैल, मंगलवार (27 चैत्र प्रविष्टे), रेवती नक्षत्र कालीन होगा।

चैत्र (वासन्त) नवरात्र अर्थात् 9 अप्रैल, मंगलवार से जप, पाठ, पूजन, दान, व्रतानुष्ठान, यज्ञादि, धार्मिक अनुष्ठान कर्मों के आदि में संकल्पादि प्रयोग कार्यों में **14 मार्च, 2025 ई. तक 'कालयुक्त'** नामक नव सम्वत्सर का प्रयोग होगा। ता. 14 मार्च, 2025 ई. के बाद **सभी प्रकार के संकल्प कार्यों में संवतारम्भे 'कालयुक्त' परं वर्तमाने 'सिद्धार्थ' नाम सम्वत्सरे** का प्रयोग करना चाहिए।

'कालयुक्त' नामक सम्वत्सर का फल शास्त्रों में इस प्रकार वर्णित है-

रोगवृद्धिः प्रजायेत कालयुक्ते विशेषतः।
राजयुद्धं भवेद् घोरं वृष्टिर्घोरा वरानने॥

अर्थात् **'कालयुक्त'** नामक संवत्सर में विभिन्न प्रकार के पेचीद रोगी में विशेष वृद्धि के कारण प्रजा में कष्ट तथा हाहाकार रहे। विभिन्न देशों के राजाओं (शासकों) में क्षुब्धता, टकराव तथा बिखराव के कारण युद्ध जैसी स्थिति निरन्तर बनी रहेगी। कुछ विशेष स्थानों पर भयंकर वर्षा होने से खड़ी फसलों को हानि तथा बाढ़ादि की स्थिति बने।

रोहिणी का वास-वि.संवत् 2081 में मेष संक्रान्ति का प्रवेश **'मृगशिरा'** नक्षत्रकालीन हुआ है। अतएव **'वर्षप्रबोध'** ग्रन्थानुसार रोहिणी का वास **'सन्धि'** पर होगा। यथा-

संधिसंस्थ यदा ब्राह्म भंजायते। खण्डवृष्टिस्तदा सर्वधान्याम्रयः॥

अर्थात् **'रोहिणी का वास' 'सन्धि'** पर होने से इस वर्ष देश में खण्ड वृष्टि अर्थात् असमान वर्षा होगी'। कुछ क्षेत्रों/प्रदेशों में अत्याधिक वर्षा के कारण बाढ़ का प्रकोप हो। भूस्खलन, अग्निकाण्ड, विस्फोट आदि के कारण लोगों की क्षति हो, जन-धन-कृषि आदि की हानि तथा कुछ प्रदेशों में बहुत कम वर्षा होने के कारण कहीं सूखा, कहीं अनाज एवं

कहीं पेयजल की कमी के कारण जन-धन कि हानि, अनाज की कमी हो। सब्जियों' दालों के मूल्यों में विशेष वृद्धि हो।

परन्तु '**मेघमहोदय**' नामक ग्रन्थानुसार '**मृगशिरा**' नक्षत्रकालीन वैशाख संक्रान्ति प्रवेश होने से रोहिणी-वास '**तट**' पर होगा। '**तट**' पर रोहिणी का वास होने से वर्ष में उपयोगी एवं उत्तम (अच्छी) वर्षा होने के योग बनेंगे। फलस्वरूप धान्य, चावल, चने, गन्ने, वृक्ष, घास व अन्य जड़ी बूटियों, पौधों की पैदावार भी अच्छी होगी। प्रजा में अन्न, धन एवं अन्य सुख-साधनों व प्रसाधनों की वृद्धि होगी। '**तटे वृष्टिः सुशोभना**' अनुसार भी सन्तोषजनक एवं पर्याप्त वर्षा होगी।

संवत् (समय) का वास—रोहिणी का वास '**सन्धि**' पर होने की स्थिति में संवत्सर पर वास '**वैश्य**' के घर रहेगा, जिसके प्रभावस्वरूप धन का प्रसार अधिक रहे। सर्वत्र उपयोगी एवं अनुकूल वर्षा की कमी रहे अर्थात् खण्ड-वर्षा एवं विपरीत जलवायु रहने से सभी प्रकार के अनाजों, धान्यादि के मूल्यों में और अधिक तेजी होगी। राजनीतिक और व्यापारादि सभी क्षेत्रों में लोभ व स्वार्थपरता बढ़ेगी। खाद्यान्न व्यवसाय में संलग्न व्यापारी वर्ग विशेष रूप से लाभान्वित होंगे। सामान्य लोगों में भी लोभ-लालच का प्रभाव रहेगा।

(ii) रोहिणी का वास '**तट**' पर होने की स्थिति में संवत् का वास '**धोबी**' (रजक) के घर रहेगा। फलस्वरूप वर्षा विपुल एवं उत्तम मात्रा में होगी-**रजके वृष्टिरूत्तमा**'॥ धान्य चावल, गेहूं, चने, गन्ना, ईख, मक्की, हरी सब्जियों, वृक्षों, व फलों का उत्पादन अच्छा होगा। लोगों में सुख एवं ऐश्वर्य के साधन बढ़ेंगे। कुएँ, तालाब, नदी-नाले, बावड़ियां, दरिया आदि जलापूरित रहेंगे।

संवत् (समय) का वाहन—वि. संवत् 2081 का राजा '**मंगल**' (भौम) होने से सम्वत् का वाहन '**वृषभ**' **(बैल)** होगा। फलस्वरूप वर्षा पर्याप्त एवं अच्छी होगी, विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में वर्षा की बहुलता रहेगी। नदियों में पानी का वेग (बहाव) अधिक होगा, कहीं बाढ़ादि के कारण क्षति हो। वृक्षों पर फल-फूल की पैदावार अच्छी हो तथा पशुओं का चारा-घास, तृणादि भी बहुलता में हो। राजनेताओं में परस्पर आरोप-प्रत्यारोप लगने से कुछ राज्यों में अस्थिरता का वातावरण बने।

मतान्तर से कुछ विद्वान (संहिताकार) राजा मंगल होने से संवत् का वाहन '**नाव**' **(नौका)** को मानते हैं। संवत् का वाहन नौका होने से सर्वत्र सभी प्रकार की फसलों के उत्पादन में कमी तथा अकालजन्य परिस्थितियां बनें। लोगों का इधर-उधर अर्थात् एक राज्य से दूसरे राज्यों में पलायन, देश में आतंकी प्रयोजित साम्प्रदायिक घटनाओं का भय तथा सभी चौपायों को कष्ट हो।

(1) राजा मंगल का फल -

अग्नि–तस्कर–रोगाढयो नृपविग्रहः दायकः।
गतसस्यो बहुव्यालो भौमाब्दो बालहा भृशम्॥

अर्थात् संवत्सर का राजा '**मंगल**' होने से इस वर्ष वायु-वेग (आंधी-तूफान) तीव्र रहेगा, वायुयान दुर्घटनाएँ, अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि प्राकृतिक उत्पातों में विशेष वृद्धि

होगी। आतंकी-साम्प्रदायिक घटनाओं, तस्करी, ठगी, लूटपाट तथा विभिन्न पेचिदा रोगों में वृद्धि से साधारण जनता परेशान व पीड़ित रहेगी। तीव्र वायुवेग एवं बादल होने पर भी वर्षा की कमी अनुभव होगी तथा तूफान, चक्रवात, आँधी, ओलावृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं से कृषि-उत्पादन में कमी तथा पशुधन की भी हानि होगी। प्रजा में पित्त रक्त एवं विषाणु जनित रोगों की बहुलता रहेगी। बालक-बालिकाओं के प्रति क्रूरता तथा अपहरण सम्बन्धी घटनाएँ अपमृत्यु तथा प्रियजन-विछोह से लोग दुःखी रहें। सर्पादि जीव खबरों में बने रहेंगे। **अन्य संहिताकार के मतानुसार–**

भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव-विग्रहश्च।
दुःखं प्रजा-व्याधि-वियोगपीड़ा स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः॥

अर्थात् वर्ष का राजा **मंगल** होने से देश में चोरी ठगी बेईमानी भ्रष्टाचार हिंसा-उपद्रव की घटनाएं तथा प्राकृतिक उत्पात-विशेष रूप से भूकम्प व अग्निकाण्ड/विस्फोट से विशेष जन-धन हानि की घटनाएं घटित होंगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध एवं टकराव रहे। प्रजा अनेक विविध रोगों-व्याधियों वायरल अपहरण तथा प्रियजन-विछोह से दुःखी एवं पीड़ित रहे। देश आगजनी साम्प्रदायिक हिंसा उग्रवाद जन्य घटनाओं से जन-धन हानि होगी। कहीं अनावृष्टि या अतिवृष्टी से दुर्भिक्ष (सूखा) एवं कहीं बाढ़ की स्थिति बने। लोगों में धर्म-कर्म की ओर रूचि कम रहे।

(2) मन्त्री शनि का फल -

रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवा विनय संरहिता बहुदुःखदाः।
न जलदा जलदा जनतापदा जनपदेषु सुखं न धनं क्वचित्॥

अर्थात् वर्ष का मन्त्री '**शनि**' होने से प्रशासक वर्ग एवं राजनेताओं का व्यवहार सामान्य लोगों (प्रजा) के प्रति अत्यन्त कठोर, नीति-विरुद्ध तथा निर्दयतापूर्ण रहेगा, जिससे लोगों को कष्ट व असन्तोष रहे। देश के कुछ भागों में वर्षा की कमी रहने से खाद्यान्नों में कमी एवं प्राकृतिक प्रकोप होने का भय व्याप्त रहे। सामान्य लोगों के पास धन-सम्पदा एवं पर्याप्त सुख-संसाधनों की कमी हो एवं उनमें गहन असन्तोष की भावनाएँ व्याप्त हों। लोहा, स्टील, ताम्बा, जिस्त, सिक्का, तैल आदि खाद्यान्न पदार्थ पैट्रोल डीजलादि तेज भाव होंगे।

विशेष–राजा एवं मन्त्री-दोनों मुख्य पदाधिकार-दो परस्पर विरोधी ग्रहों '**मंगल-शनि**' के पास होने से राजनीतिक एवं सामाजिक पटल पर परस्पर वैर-विरोध एवं विरोधाभासी घटनाएँ अधिक होंगी। जातीय एवं साम्प्रदायिक हिंसा की घटनाओं से वातावरण विषाक्त रहेगा। विश्व में भी अनेक देशों के मध्य युद्ध एवं जनहानि के समाचार मिलेंगे।

(3) सस्येश मंगल का फल -

अथ च सस्यपतौ धरणीसुते गजतुरंगखरोष्ट्रगवामपि।
भवति रोगहतिश्च घना जलं ददति नैव तुषान्नविनाशनम्॥

सस्येश (चौमासा फसलों का स्वामी) '**मंगल**' होने से हाथी, घोड़े, गधे आदि

चौपायों तथा गाय, बैल, भैंस, ऊंठ आदि दुधारू पशुओं में भी विचित्र प्रकार के रोग फैलने की आशंका रहेगी। कहीं उपयुक्त वर्षा की कमी के कारण खड़ी फसलों (जैसे-धान्य, जौं, चना, सोयाबीन आदि), अनाज, सब्जियों आदि की फसलों को हानि पहुंचेगी एवं इनके भावों में विशेष तेजी बनेगी।

(4) धान्येश सूर्य का फल -

पश्चाद् धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद धान्यं तदानहि।
विग्रहं भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वरपीडनम्॥

धान्यपति '**सूर्य**' हो तो पीछे वाले धान्य अर्थात् शीतकाल में पैदा होने वाली फसलों (जैसे-मूंग, मोठ, बाजरा, ईख, धान्य, तिलहन, दलहनादि) की पैदावार में कमी हो, अथवा प्राकृतिक प्रकोपों के कारण फसलों व कृषि-उत्पादन को हानि पहुँचे। फलतः दलहन तिलहन व धान्यादि अनाजों के मूल्यों में वृद्धी होगी। प्रशासकों (राजनेताओं) मे परस्पर वैर-विरोध, टकराव एवं विवाद उत्पन्न होंगे। देश में कटु राजनैतिक वातावरण एक युद्ध जैसा वातावरण बना देगा। सर्व प्रकार के अनाज तेज भाव हों, लोगों में विचित्र प्रकार के ज्वर एवं रोगों आदि के कारण कष्ट रहे।

(5) मेघेश शुक्र का फल -

भृगुसुतो जलदस्यपतिः यदा जलमुचो जलदादि-विशोभजनाः।
धन-निधानयुता द्विजपालकाःनृपतयो जनता सुखदायकाः॥

अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) '**शुक्र**' होने से आगामी वर्ष वर्षा बहुत अच्छी होगी। उच्चप्रतिष्ठित राजनेता एवं शासकवर्ग ब्राह्मणों एवं विद्वानों का हित व सम्मान करने में प्रयत्नशील रहेंगे। अधिकांश राजनेता एवं प्रशासक धन-धान्य से समृद्ध होंगे। कुछ विशिष्ट नेता व प्रशासक- वर्ग प्रजा की भलाई व कल्याण हेतु प्रयासरत रहेंगे तथा नई-नई कल्याणकारी नीतियों की घोषणा होंगी।

(6) रसेश गुरु का फल -

यदि गुरौ रसपे सुखिनो जनाः समधिकेन फलादियुता द्रुमाः।
जनपदा जननायक-सैनिका हव-हयायुध वाह-विगाहिताः॥

अर्थात् यदि गुरु रसाधिपति हो तो उस वर्ष विशिष्ट साधन-सम्पन्न लोगों में भौतिक सुखों में विशेष वृद्धि होगी। घास तृण फल फूलदार आदि वृक्षों की पैदावार अच्छी होगी। जनसाधारण विद्वान् पण्डितों-ब्राह्मणों की सेवा-सत्कार में तत्पर हों। परन्तु (साम्प्रदायिक दंगों के कारण) किसी जनपद अथवा सीमावर्त्ती प्रान्त में शासक-प्रशासक पुलिस-सैन्याधिकारी अपने वाहनों एवं शस्त्रबलों की परेड व परीक्षण करें।

(7) नीरसेश मंगल का फल -

नीरसेशो-यदा-भौमः प्रवाल-रक्त-वाससाम्।
रक्त-चन्दन-ताम्राणां-अर्घ-वृद्धिर्दिने-दिने॥

नीरसेश अर्थात् धातुओं का स्वामी मंगल होने से माणिक्य, मूँगा, पुखराज, हीरे आदि रत्न, लाल-वस्त्र, गर्म-वस्त्र, लाल-चन्दन, सोना, पीतल, ताँबा, लाख, खल-बिनौले

आदि तथा अन्य लाल वर्ण के पदार्थ व धातुएं दिन-प्रतिदिन महँगे होंगे।

(8) फलेश शुक्र का फल -

यदि फलस्यपतौ भृगुजे धरा-मृदुकुमार-मही-रुहराशयः।
बहुफला-नरनाथ-सुभोगदा-द्विजवराः श्रुतिपाठ-परायणाः॥

अर्थात् फलों का स्वामी '**शुक्र**' हो, तो उस साल वर्षा अच्छी होगी। पृथ्वी पर कोमल घास, तृण, फल-फूल एवं लघु पौधों के समूहों की पैदावार अधिक होगी अर्थात् इनका श्रेष्ठ प्ररोहण होगा। राजनेता एव प्रशासक लोग विभिन्न प्रकार की धन-सम्पदा एवं ऐश्वर्यों से सम्पन्न होंगे। द्विजवर्ग अर्थात् कर्मकाण्डी, पण्डित पाठ, यज्ञादि अनुष्ठान आदि कृत्य करते हुए लाभान्वित होंगे।

(9) धनेश चन्द्र का फल -

धनपतिः मृगलांछनको यदा रसचय-क्रय-विक्रयतो धनम्।
वसनशालि सुगन्धरसं बहु द्रविण-तैलयुतं नृपसौख्यदम्॥

जिस वर्ष धनपति (कोशपति) चन्द्रमा हो, तो उस वर्ष रसादि पदार्थों (दूध, घी, शर्बत, गुड़, जूस, तैल, सेब, मौसम्बी आदि रसकस) के क्रय-विक्रय (खरीद/बेच) द्वारा धन का लाभ अच्छा होगा। इसके अतिरिक्त वस्त्र, अनाज, तैल, सुगन्धित तैल, दूध, घी, गुड़, चावल, इत्र, खुशबू , मिठाई आदि तथा करियाना वस्तुओं के व्यापार से भी अच्छे लाभ की सम्भावना बढ़ती है। अवसरवादी नेता विशेष प्रकार के सुख-साधनों से सम्पन्न होंगे और प्रजा कानूनों का सहर्ष पालन करते हुए अपने योग्य करों/टैक्सों का उचित भुगतान करंगे।

(10) दुर्गेश शुक्र का फल -

नगर-देश विशेष पतिर्यदा भृगुसुतो बहुसौख्यकरो मतः।
विनयवाणिज-गोहसमः सुखोनगवने निकटेऽपि च दूरतः॥

दुर्गेश अर्थात् सेनापति '**शुक्र**' हो, तो देश के विशिष्ट राजनेता तथा विशिष्ट वर्ग के लोग ही सुख-साधनों से सम्पन्न एवं समृद्ध होंगे। दृढ़ शासन तथा सर्वत्र शान्ति बनी रहेगी। विनय एवं वाणी के व्यवहार से गृह जैसा सुख एवं शान्ति प्राप्ति होगी। दूरस्थ जनों एवं पर्वतीय स्थलों पर भी सर्व प्रकार की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध होंगी अर्थात् दूरस्थ पर्वतीय स्थलों में भी आवागमन के साधन सुलभ होंगे।

नोट- वर्ष के उपरोक्त **दशाधिकारियों** का फल यद्यपि सर्वत्र होता है, परन्तु **राजा का फल** विशेष रूप से काश्मीर, बांग्लादेश, अफ़गानिस्तान, चीन, तिब्बत एवं हिमालय के निकटवर्ती क्षेत्र, **मन्त्री का फल** आन्ध्र प्रदेश, मालवा, उज्जैन आदि मध्य प्रदेशों में विशेष फल होता है। वैसे सामान्यतः राजा व मन्त्री का फल देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में होता है।

॥ द्वादश राशि फल विक्रम सम्वत् 2081 ॥

मेष-चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

वर्षारम्भ से वर्षान्त तक इस राशि पर शनि की नीच दृष्टि रहने से मानसिक तनाव एवं गुप्त चिन्ताएं बनी रहेंगी। बनते हुए कार्यों में अड़चनें, स्वास्थ्य कष्ट तथा निकटस्थ सम्बन्धियों से मनमुटाव रहे। 30 अप्रैल तक गुरु का संचार इस राशि पर होने से मान-सम्मान तथा सर्विस/कारोबार में तरक्की (प्रोमोशन) भी होगी। 23 अप्रैल से 31 मई तक मंगल द्वादशस्थ राहुयुक्त होने से सोचे हुए कार्यों में विघ्न-बाधाएं, विलम्ब हों, घरेलु कलह-क्लेश, गुप्त चिन्ताएँ, धन का खर्च अधिक तथा यात्राओं में परेशानियां रहें। ता. 20 अक्टूबर से वर्षान्त तक मंगल कर्क (नीच) राशिगत रहने से बनते कार्यों में उलझनें, धनहानि व परेशानियों का सामना रहे। स्वास्थ्य भी खराब रहे। **उपाय- प्रत्येक मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को कच्ची लस्सी में शहद, तिल, चावल आदि डालकर श्रीहरिहर-अष्टोत्तर-शतनामस्तोत्र का पाठ करके पीपल पर चढ़ावें।**

वृष-इ, उ, ए, ओ, व, वि, वु, वे, वो।

31 मार्च से 24 अप्रैल तक शुक्र उच्च राशिस्थ (मीन) में होने से धन लाभ व उन्नति के आसार बनेंगे। ता. 1 मई से गुरु इस राशि पर संचार करने से देश-विदेश में जाने का मन बनेगा। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ मेल होगा। 19 मई से शुक्र के इसी राशि में संचार करने से मान-सम्मान, धन लाभ एवं पदोन्नति होने के अवसर प्राप्त होंगे। 24 अगस्त से शुक्र के नीच राशि में केतुयुक्त संचार करने से मानसिक तनाव एवं विद्या के सम्बन्ध में विघ्न-बाधाओं का सामना रहे। **उपाय - वर्षभर प्रत्येक शुक्रवार छोटी कन्याओं का पूजन करके उन्हें बर्फी, फलादि भेंट देकर स्वयं व्रत रखें।**

मिथुन-क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह।

9 अप्रैल से 9 मई के मध्य बुध नीच (मीन) रशिगत एवं राहुयुक्त होकर संचार करने से स्वास्थ्य हानि, अत्यधिक खर्च, तनाव एवं बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। 31 मार्च से 14 जुन के मध्य बुध 12वें होने से वृथा, दौड़धूप, धन-हानि होने के योग हैं। ता. 23 सितम्बर से 9 अक्टूबर राशिस्वामी बुध उच्चस्थ (कन्या) होने से अचानक धन प्राप्ति के योग हैं। ता. 29 अक्टूबर से वर्षान्त तक बुध छठे में होने से स्वास्थ्य कष्ट, चोटादि का भय है। **उपाय - बुधवार को श्रीविष्णु-सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ व अगस्त 2024 ई. के बाद प्रत्येक बुधवार गौओं को हरा चारा तथा पत्तियाँ खिलावें।**

कर्क-हि, हु, हे, हो, डा, डी, ड, डे, डो।
कर्क राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव वर्षभर रहने से वृथा दौड़-धूप, अनावश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएं, रोग, शोक, कलह-क्लेश, धन-हानि, बन्धु-विरोध, कार्यों में विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा। ता. 15 मार्च से 22 अप्रैल तक मंगल अष्टमस्थ रहने से बनते कार्यों में अड़चनें रहेंगी। ता. 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य सूर्य इसी राशि में संचार करने से भी स्वास्थ्य कष्ट, स्वभाव में क्रोध व उत्तेजना बढ़ेगी। ता. 20 अक्टूबर से मंगल इस राशि पर नीचावस्था में संचार करने से स्वास्थ्य विकार, मानसिक तनाव तथा चिड़चिड़ापन अधिक रहे। **उपाय - शनि की ढैय्या के निवारण हेतु प्रत्येक शनिवार को शनि मन्दिर में तेल चढ़ाना तथा दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।**

सिंह-म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।
वर्षभर सिंह राशि पर शनि की शत्रु सप्तम दृष्टि रहने से मानसिक तनाव, भाई-बन्धुओं से मन-मुटाव या विरोध रहे। गुप्त चिन्ताएँ, घरेलू तथा व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें व परेशानियां बढ़ेंगी। 30 अप्रैल तक गुरु की दृष्टि रहने से भाग्यवश कुछ रुकावटों के बावजूद बिगड़े/रुके हुए कार्य बनेंगे। 22 अप्रैल तक मंगल की भी अशुभ दृष्टि रहने से मानसिक तनाव, दौड़-धूप अधिक रहे, क्रोध व उत्तेजना से बचें। 14 अप्रैल से सूर्य भाग्यस्थान में उच्चस्थ होने से आय से स्रोतों में वृद्धि तथा धन लाभ के अवसर बनेंगे। परन्तु शनि की शत्रु दृष्टि के कारण तनाव बहुत रहे। आय व खर्च बढ़ेंगे। **उपाय - हर शनिवार शनि मन्दिर में तेल, काले तिल चढ़ाना और दशरथकृत 'शनि स्तोत्रम्' का पाठ करना शुभ रहेगा।**

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो।
वर्षारम्भ से वर्षान्त तक इस राशि पर केतु का संचार रहने से वृथा मानसिक तनाव, परेशानियां तथा धन हानि होगी। जीवनसाथी के साथ भी मन-मुटाव रहे। 9 अप्रैल से 9 मई तक बुध नीच राशि में तथा 2 अप्रैल से 24 अप्रैल के मध्य वक्री रहने से स्वास्थ्य भी ठीक न रहे तथा अपने नज़दीकी सम्बन्धी भी परायों जैसे व्यवहार करेंगे। 1 मई से गुरु की दृष्टि रहने से उलझनों के बावजूद काम होते रहेंगे। ता. 10 से 30 मई तक बुध अष्टमस्थ, फिर 29 जून से 18 जुलाई तक कर्क राशिगत (पुनः 22 अगस्त से 3 सितम्बर तक) रहने से आर्थिक उलझनें, स्वास्थ्य कष्ट रहे। 23 सितम्बर से 9 अक्टूबर तक बुध इसी राशि (कन्या) में रहने से मान-सम्मान में वृद्धि तथा धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। **उपाय - श्रीगणेश चतुर्थी का संकल्पपूर्वक व्रत रखना।**

तुला-रा, री, रु, रे, रो, ता, ति, तु, ते।
वर्षारम्भ से 30 अप्रैल तक गुरु की इस राशि पर शत्रु दृष्टि रहने से सेवा अथवा व्यवसाय में नित्य नई-नई परेशानियों का सामना रहे, शत्रु प्रबल रहेंगे। परन्तु 31 मार्च से 24 अप्रैल तक शुक्र उच्च (मीन) राशिस्थ संचार करने से उच्चस्तरीय लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे परन्तु राहु युक्त होने के कारण लाभ व उन्नति के मार्ग में रुकावटें रहेंगी। 7 जुलाई से 24 अगस्त के मध्य शुक्र क्रमशः कर्क व सिंह राशि में संचारित होने से मिश्रित फल प्राप्त होंगे। आय होने पर भी खर्च बहुत अधिक बढ़ेंगे। ता. 25 अगस्त से 17 सितम्बर के मध्य शुक्र द्वादश भाव में नीच राशिस्थ संचारित होगा। यह अवधि तुला राशि वाले जातकों के लिए विशेष घटनाप्रद होगी। 18 सितम्बर से 12 अक्टूबर तक शुक्र तुला राशि में ही संचार करने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। निर्वाह योग्य व्यय के साधन बनेंगे। **उपाय - प्रत्येक शुक्रवार को माता का विधिवत व्रत रखना और नवरात्रों में श्रीदुर्गा-सप्तशती का पाठ करना।**

वृश्चिक-तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।
वृश्चिक राशि पर शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव वर्षभर रहेगा। ता. 1 मई से पंचमेश गुरु की शुभ सप्तम दृष्टि रहने से गत किए गए प्रयासों में सफलता प्राप्ति के संकेत हैं। कार्य-व्यवसाय में कुछ परिवर्तन की योजना बनेगी। ता. 1 जून से 25 अगस्त तक मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से भी विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 20 अक्टूबर से मंगल भाग्यस्थ नीच (कर्क) राशिगत संचार करने एवं 6 दिसम्बर से मंगल वक्री रहने से संघर्षपूर्ण एवं तनावपूर्ण परिस्थितियां रहेंगी। **उपाय - वर्षभर प्रत्येक शनिवार काँसे की कटोरी में तेल का छायापात्र करना, शनि मन्दिर में काले तिल एवं तेल (शनि का बीज मन्त्र पढ़ते हुए) चढ़ाना शुभ रहेगा।**

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे।
वर्षारम्भ से 30 अप्रैल तक इस राशि पर गुरु की स्वगृही दृष्टि रहने से विपरीत परिस्थितियों के बावजूद बिगड़े हुए काम बनेंगे। धर्म-कर्मादि शुभ कृत्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। उच्चविद्या एवं प्रतियोगिता में सफलता प्राप्ति के योग बनेंगे। यद्यपि पंचम भाव पर शनि की नीच दृष्टि के कारण सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता तनाव, अत्यधिक खर्च एवं घरेलु उलझनें भी रहेंगी। 1 मई से वर्षान्त तक राशिस्वामी गुरु छठे स्थान में शत्रुराशिगत संचार करेगा। ता. 14 जून से 19 अक्टूबर तक धनु राशि पर क्रमशः सूर्य एवं मंगल की संयुक्त दृष्टियां रहेंगी। जिस कारण धनु राशि वाले जातक/जातिकाओं को अत्यधिक क्रोध एवं आवेश के कारण नज़दीकी लोगों के साथ कलह-क्लेश होने का भय होगा। **उपाय - भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें तथा प्रत्येक बृहस्पतिवार का व्रत रखे व केसर का तिलक लगाए।**

मकर-भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी।
`शनि-साढ़ेसाति` का प्रभाव इस राशि पर वर्षभर रहेगा तथा 30 अप्रैल तक चतुर्थस्थ गुरु पर शनि की नीच दृष्टि भी रहेगी। फलतः अनेक घरेलु एवं व्यवसायिक उलझनें रहेंगी। निकटस्थ लोगों के साथ तनाव व झगड़े रहें, स्वास्थ्य सम्बन्धी नवीन परेशानियां उभरती रहेंगी। ता. 1 मई से वर्षान्त तक गुरु की नीच दृष्टि इस राशि पर रहने से धन लाभ अल्प तथा सोची हुई योजनाओं के क्रियान्वयन में विघ्न-बाधाएं रहेंगी। ता. 26 अगस्त से 19 अक्टूबर के माध्य मंगल की अष्टम दृष्टि रहने से क्रोध, उत्तेजना अधिक रहेगी। 20 अक्टूबर से वर्षान्त तक मंगल की स्व-उच्च दृष्टि रहेगी, जिससे अत्यधिक संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। **उपाय - शनिवार को गरीब अन्ध तथा कुष्ट रोगियों की दवाई, अनाज, वस्त्रों आदि से सेवा करना शुभ रहेगा। शनिवार को सरसों के तेल में अपना चेहरा (मुख) देखकर मन्त्र पढ़ते हुए सायंकाल के समय शनि मन्दिर में चढ़ाएं। मन्त्र-`ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।`**

कुम्भ-गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द।
वर्षभर राशिस्वामी शनि इसी राशि पर संचार करने से `शनि-साढ़ेसाति` का प्रभाव रहेगा। फलतः किसी नए कार्य की योजना बनेगी। गत किए गए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। परन्तु साढ़ेसाति होने से मानसिक तनाव, घरेलु, उलझनें एवं खर्च अधिक होंगे। पारिवारिक एवं निकटस्थ बन्धुओं के साथ मन-मुटाव भी रहेगा। ता. 15 मार्च से 22 अप्रैल तक `मंगल-शनि` योग इसी राशि पर होने से मानसिक एवं गुप्त चिन्ताएँ, किसी बन्धु से तकरार या झगड़ा तक हो सकता है। सावधानीपूर्वक व्यवहार करें। 16 अगस्त से 15 सितम्बर के मध्य इस राशि पर सूर्य-बुध की अलग-अलग दृष्टियां पड़ने से उपरोक्त अवधि में कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी विशेष परेशानियां होंगी। **उपाय - उपरोक्त मकर राशि के उपाय ही यहाँ भी लागू होंगे।**

मीन-दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि।
वर्षभर इस राशि पर राहु का संचार तथा शनि-साढ़ेसाति का प्रभाव रहने से प्रत्येक बनते हुए एवं शुभ कार्य के आरम्भ में अड़चनों/रुकावटों का सामना करना पड़े, धन का अपव्यय तथा क्रोध की भावना अधिक रहेगी। 23 अप्रैल से 31 मई तक `मंगल-राहु` योग इस राशि पर रहने से पारिवारिक एवं व्यवसायिक जीवन में बड़ी उथल-पुथल वाली परिस्थितियां बनेंगी। ता. 1 मई से राशिस्वामी गुरु तृतीय भाव में वृष राशिस्थ रहेगा, जिससे कार्य-व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग बनेंगे। शनि की कोष (द्वितीय) भाव पर नीच दृष्टि के कारण वर्षभर आर्थिक क्षेत्र में अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना होगा। **उपाय - भगवान् शंकर की पूजा करके शिवलिङ्ग पर हल्दी मिलाकर जल `ॐ नम शिवाय` मन्त्र पढ़ते हुए बेलपत्र सहित चढ़ाना शुभ होगा। प्रतिदिन गुरु गायत्री मन्त्र का 108 बार जाप करके भगवान् सूर्य को `ॐ घृणिः सूर्याय नमः` मन्त्र पढ़कर अर्घ्य प्रदान करना। गुरु गायत्री मन्त्र-`ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरु प्रचोदयात्॥` वर्षभर प्रतिदिन पक्षियों को बाजरा डालना शुभ रहेगा।**

✻ प्रमुख व्रत-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2024 ई०) ✻

दिनाङ्क	वार	पर्व
अप्रैल 2024		
9 अप्रैल	**मंगल**	**वि.संवत् 2081 आरम्भ। चैत्र (वासन्त) नवरात्र आरम्भ। तैलाभ्यंग ध्वजारोहण।**
11 अप्रैल	गुरु	गौरी तृतीया (गणगौर)।
12 अप्रैल	शुक्र	श्री (लक्ष्मी) पंचमी। हय-व्रत।
13 अप्रैल	**शनि**	**वैशाखी पर्व। नाग-पंचमी। स्कन्द षष्ठी व्रत।**
15 अप्रैल	सोम	अशोकाष्टमी।
16 अप्रैल	मंगल	श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति।
17 अप्रैल	**बुध**	**वासन्त नवरात्र समाप्त। श्रीरामनवमी।**
18 अप्रैल	**गुरु**	**नवरात्र व्रत पारणा।**
19 अप्रैल	शुक्र	लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव।
20 अप्रैल	शनि	श्रीविष्णु दमनोत्सव।
21 अप्रैल	रवि	अनङ्ग त्रयोदशी। श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)।
22 अप्रैल	सोम	शिव-दमनोत्सव।
23 अप्रैल	**मंगल**	**श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण)। वैशाखस्नान प्रारम्भ।**
मई 2024		
10 मई	**शुक्र**	**अक्षय-तृतीया। भगवान् परशुराम जयन्ती।**
12 मई	**रवि**	**आद्यगुरु शंकराचार्य जयन्ती।**
14 मई	मंगल	श्रीगङ्गा-जयन्ती।
16 मई	गुरु	श्रीबगुलामुखी जयन्ती। जानकी जयन्ती।
21 मई	मंगल	श्री नृसिंह-जयन्ती।
23 मई	गुरु	श्रीकूर्म-जयन्ती। वैशाख-बुध पूर्णिमा। वैशाखस्नान समाप्त।
जून 2024		
2 जून	रवि	भद्रकाली एकादशी (स्मा.)।
6 जून	गुरु	वटसावित्री व्रत (अमा.पक्ष)। ज्येष्ठ, भावुका अमावस्या। शनैश्चर-जयन्ती।
8 जून	शनि	रम्भा तृतीया व्रत।
12 जून	बुध	अरण्य षष्ठी। विन्ध्यवासिनी पूजा।
14 जून	शुक्र	श्रीदुर्गाष्टमी,धूमावती जयन्ती। मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर)।
16 जून	**रवि**	**श्रीगङ्गा दशहरा पर्व।**
18 जून	**मंगल**	**निर्जला एकादशी व्रत।**

✻ प्रमुख व्रत–त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2024 ई०) ✻

दिनाङ्क	वार	पर्व
		जून 2024
21 जून	शुक्र	वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा)।
22 जून	शनि	सन्त कबीर जयन्ती। ज्येष्ठ पूर्णिमा।
		जुलाई 2024
6 जुलाई	**शनि**	**गुप्त नवरात्र आरम्भ।**
7 जुलाई	रवि	श्रीजगन्नाथ रथयात्रा-पुरी।
11 जुलाई	गुरु	कुमार-षष्ठी।
12 जुलाई	शुक्र	विवस्त् सप्तमी।
15 जुलाई	**सोम**	**गुप्त नवरात्र समाप्त।**
17 जुलाई	**बुध**	**हरिशयनी एकादशी व्रत। श्रीविष्णुशयनोत्सव।**
20 जुलाई	शनि	श्रीशिव-शयनोत्सव। कोकिला व्रत।
21 जुलाई	**रवि**	**गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा।**
22 जुलाई	**सोम**	**श्रावण सोमवार व्रत आरम्भ।**
		अगस्त 2024
2 अगस्त	**शुक्र**	**श्रावण-शिवरात्रि।**
4 अगस्त	**रवि**	**हरियाली अमावस्या।**
5 अगस्त	सोम	मे. चिन्तपूर्णी-हि.प्र. आरम्भ।
7 अगस्त	बुध	मधुस्रवा-हरियाली तीज।
9 अगस्त	शुक्र	नाग-पञ्चमी।
10 अगस्त	शनि	श्रीकल्कि जयन्ती।
13 अगस्त	मंगल	श्रीदुर्गाष्टमी (मेला-चिन्तपूर्णी-हि.प्र. समाप्त)।
15 अगस्त	**गुरु**	**स्वतन्त्रता दिवस (78वां)।**
19 अगस्त	**सोम**	ऋक्-उपाकर्म। यजु.अथर्ववेदि उपाकर्म। श्रावण पुर्णिमा। **रक्षाबन्धन (राखी)** भद्रा बाद।श्रीअमरनाथ यात्रा समा.।
21 अगस्त	बुध	कज्जली तृतीया।
22 अगस्त	गुरु	श्रीगणेश बहुला चतुर्थी।
24 अगस्त	शनि	चन्दन षष्ठी व्रत।
26 अगस्त	**सोम**	**श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत। श्रीकृष्ण-जयन्ती योग।**
27 अगस्त	मंगल	गोकुलाष्टमी। नन्दोत्सव। श्रीगुग्गा-नवमी।
30 अगस्त	शुक्र	वत्स द्वादशी (पूजा)।

✻ प्रमुख व्रत–त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2024 ई०) ✻

दिनाङ्क	वार	पर्व
सितम्बर 2024		
2 सितम्बर	सोम	कुशाग्रहणी पिठोरी अमावस्या। सोमवती अमावस्या।
5 सितम्बर	गुरु	सामवेदि उपाकर्म।
6 सितम्बर	शुक्र	हरितालिका तृतीया। कलंक-चतुर्थी।
7 सितम्बर	शनि	सिद्धि विनायक व्रत।
8 सितम्बर	रवि	ऋषि पंचमी व्रत।
10 सितम्बर	मंगल	मुक्ताभरण-संतान सप्तमी।
11 सितम्बर	बुध	श्रीमहालक्ष्मी व्रत आरम्भ। श्रीराधाष्टमी।
12 सितम्बर	गुरु	श्रीचन्दनवमी (उदासीन)।
15 सितम्बर	रवि	श्रीवामन-जयन्ती। श्रवण-द्वादशी। वीष्णुश्रृंखल योग।
17 सितम्बर	मंगल	अनन्त चतुर्दशी व्रत। मेला सोढल, जालन्धर, पंजाब प्रोष्ठपदी-पूर्णिमा श्राद्ध। महालय प्रारम्भ।
18 सितम्बर	बुध	पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ।
24 सितम्बर	मंगल	श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा.।
अक्टूबर 2024		
2 अक्टूबर	बुध	महालय/श्राद्ध समाप्त। सर्वपितृ श्राद्ध। गजच्छाया योग। महात्मा गांधी जयन्ती।
3 अक्टूबर	**गुरु**	**शरद् नवरात्र प्रारम्भ।**
7 अक्टूबर	सोम	उपाङ्ग ललिता व्रत।
9 अक्टूबर	बुध	सरस्वती आवाहन।
10 अक्टूबर	गुरु	सरस्वती पूजन।
11 अक्टूबर	शुक्र	श्रीदुर्गाष्टमी। महानवमी (व्रत,पूजा हेतु)। सरस्वती बलिदान।
12 अक्टूबर	**शनि**	**महानवमी (बलिदान व होम हेतु) नवरात्र समाप्त। विजया दशमी (दशहरा) आयुध (शस्त्र) पूजा। सरस्वती विसर्जन।**
13 अक्टूबर	**रवि**	**नवरात्र व्रत पारणा। भरत मिलाप।**
16 अक्टूबर	बुध	कोजागर व्रत। शरद् पूर्णिमा व्रत।
17 अक्टूबर	गुरु	कार्तिकस्नान प्रारम्भ। महर्षि वाल्मीकि जयन्ती।
20 अक्टूबर	रवि	व्रत करवा-चौथ।
24 अक्टूबर	गुरु	अहोई अष्टमी व्रत।
28 अक्टूबर	सोम	गोवत्स द्वादशी।
29 अक्टूबर	**मंगल**	**यम प्रीत्यर्थ दीपदान। धन त्रयोदशी।**
30 अक्टूबर	**बुध**	**श्रीहनुमान जयंती (उ.भारत)।**
31 अक्टूबर	**गुरु**	**नरक-चतुर्दशी।**

✻ प्रमुख व्रत–त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2024–25 ई०) ✻

दिनाङ्क	वार	पर्व
		नवम्बर 2024
1 नवम्बर	**शुक्र**	**दीपावली। महालक्ष्मी पूजन।**
2 नवम्बर	शनि	विश्वकर्मा दिवस (पं.) अन्नकूट-गोवर्धन पूजा।
3 नवम्बर	**रवि**	**भाई-दूज। यमद्वितीया। श्रीविश्वकर्मा-पूजन।**
7 नवम्बर	**गुरु**	**सूर्य षष्ठी पर्व (विहार)।**
9 नवम्बर	शनि	गोपाष्टमी।
10 नवम्बर	**रवि**	**अक्षय-कूष्माण्ड नवमी।**
11 नवम्बर	सोम	भीष्मपंचक प्रारम्भ।
12 नवम्बर	**मंगल**	**हरिप्रबोधिनी एकादशी। तुलसी विवाह।**
13 नवम्बर	**बुध**	**हरिप्रबोधोत्सव।**
14 नवम्बर	**गुरु**	**वैकुण्ठ चतुर्दशी।**
15 नवम्बर	**शुक्र**	**कार्तिक पूर्णिमा।** भीष्मपंचक समाप्त। श्रीगुरुनानक जयन्ती। त्रिपुरोत्सव। कार्तिक स्नान समाप्त। पद्मक योग।
23 नवम्बर	शनि	श्रीकालभैरवाष्टमी।
		दिसम्बर 2024
6 दिसम्बर	शुक्र	स्कन्द-गुह षष्ठी।
7 दिसम्बर	शनि	चम्पा-षष्ठी (महाराष्ट्र)। मित्र (विष्णु) सप्तमी।
11 दिसम्बर	**बुध**	**मोक्षदा एकादशी व्रत। श्रीगीता-जयन्ती।**
14 दिसम्बर	शनि	श्रीदत्तात्रेय जयन्ती।
21 दिसम्बर	शनि	सूर्य उत्तरायण में।
23 दिसम्बर	सोम	रुक्मिणी-अष्टमी।
25 दिसम्बर	बुध	क्रिसमिस-डे (क्रिश्चि.)।
30 दिसम्बर	**सोम**	**सोमवती (पौष) अमावस्या।**
		जनवरी 2025
1 जनवरी	**बुध**	**इंग्लिश नववर्ष 2025 ई. प्रारम्भ।**
6 जनवरी	सोम	मार्त्तण्ड सप्तमी। श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती।
10 जनवरी	शुक्र	पुत्रदा एकादशी व्रत।
13 जनवरी	सोम	पौष-पूर्णिमा। लोहडी पर्व। माघस्नान प्रारम्भ।
14 जनवरी	**मंगल**	**मकर (माघ) संक्रान्ति। प्रथम शाही स्नान-कुम्भ महापर्व- (प्रयागराज)।**
17 जनवरी	शुक्र	श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी।

✻ प्रमुख व्रत–त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (2025 ई०) ✻

दिनाङ्क	वार	पर्व
		जनवरी 2025
26 जनवरी	**रवि**	गणतन्त्र दिवस (76वाँ)।
29 जनवरी	**बुध**	**माघ (मौनी)अमावस्या। द्वितीय (प्रमुख) शाही स्नान कुम्भ महापर्व (प्रयागराज)।**
30 जनवरी	**गुरु**	**गुप्त नवरात्र प्रारम्भ।**
31 जनवरी	शुक्र	बाबा श्रीलाल दयाल-जयन्ती (ध्यानपुर, पं.)
		फरवरी 2025
1 फरवरी	शनि	गौरी तृतीया (गोंतरी) तिल-कुन्द चतुर्थी।
2 फरवरी	**रवि**	**वसन्त (श्री) पंचमी। लक्ष्मी-सरस्वती पूजन।**
2/3 फरवरी		तृतीय (अन्तिम) शाही स्नान। कुम्भ महापर्व (प्रयागराज)।
4 फरवरी	मंगल	रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)। आरोग्य-पुत्र सप्तमी।
5 फरवरी	बुध	भीष्माष्टमी।
6 फरवरी	**गुरु**	**गुप्त नवरात्र समाप्त।**
9 फरवरी	रवि	भीष्म द्वादशी, तिल 12।
12 फरवरी	बुध	माघ पूर्णिमा। माघस्नान समाप्त। श्रीगुरु रविदास जयन्ती।
23 फरवरी	रवि	स्वा.दयानन्द सरस्वती जयन्ती।
26 फरवरी	**बुध**	**श्रीमहाशिवरात्रि व्रत।**
		मार्च 2025
7 मार्च	शुक्र	होलाष्टक प्रारम्भ। अन्नपूर्णा-अष्टमी।
10 मार्च	सोम	गोविन्द द्वादशी।
13 मार्च	गुरु	होलिका-दहन (भद्रा-बाद)।
14 मार्च	शुक्र	होलाष्टक समाप्त। होली पर्व।
15 मार्च	शनि	वसन्तोत्सव। होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब)।
19 मार्च	बुध	श्रीरंग-पंचमी।
20 मार्च	गुरु	महाविषुव दिवस।
22 मार्च	शनि	शीतलाष्टमी व्रत।
27 मार्च	गुरु	वारुणी पर्व।
28 मार्च	शुक्र	मेला पिहोवातीर्थ (हरि.)।
29 मार्च	**शनि**	**वि.संवत् 2081 पूर्ण।**

॥ संदिग्ध प्रमुख व्रत–पर्वों का शास्त्रीय निर्णय वि.सं. 2081॥

(1) निर्जला एकादशी व्रत (ज्येष्ठ शुक्ल 11)-(18 जून)

इस वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी पहले दिन षष्टि-घट्यात्मक (पूरा दिन – 60 घड़ी) है और दूसरे दिन भी वह (एकादशी) विद्यमान् है। यहाँ द्वादशी का क्षय भी नहीं है। इस स्थिति में नारद के निम्न वाक्यानुसार स्मार्त्त और वैष्णव-दोनों को उत्तरवर्त्ती द्वादशीयुता एकादशी के दिन ही **निर्जला एकादशी** का व्रत करना चाहिए।

सम्पूर्णेकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा।
सर्वैरेवोत्तरा कार्या परतो द्वादशी यदि॥

इस शास्त्र-निर्णयानुसार इस वर्ष 18 जून, 2024 ई. को ही स्मार्त्त और वैष्णव-दोनों का ही एकादशी व्रत लगाया गया है।

******

(2) ऋक् उपाकर्म (19 अगस्त, सोमवार)

ऋग्वेदियों के उपाकर्म के तीन मुख्य काल माने गये है - **(1) श्रावण शुक्ल में श्रवण नक्षत्र (2) श्रावण शुक्ल पंचमी (3) श्रावण शुक्ल में हस्त नक्षत्र।**

इस वर्ष श्रावण पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र यद्यपि त्रिमुहूर्त्तन्यून है तथा पहले दिन (18 अगस्त) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र से विद्ध है, परन्तु 19 अगस्त (अगले दिन) दो मुहूर्त्त से अधिक होने के कारण ऋग्वेदियों के श्रावणी उपाकर्म इसी दिन **(19 अगस्त, सोमवार)** होंगे। **अतः 19 अगस्त, सोमवार को त्रिमुहूर्त्तन्यून होने के बावजूद परन्तु द्विमुहूर्त्त से अधिक होने से ऋक् आदि उपाकर्म इसी दिन होंगे।**

******

(3) रक्षा-बन्धन (19 अगस्त, सोमवार)

रक्षाबन्धन का पवित्र कार्य भद्रारहित अपराह्ण व्यापिनी पूर्णिमा में करने का शास्त्र विधान है-

'भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा...।'

इस वर्ष 19 अगस्त, 2024 ई., सोमवार को शावण-पूर्णिमा के दिन रक्षाबन्धन का पवित्र कार्य होगा, परन्तु इस दिन दोपहर 1^घं.^-31^मिं.^ (13^घं.^-31^मिं.^) तक भद्रा व्याप्ति (पाताल में) रहेगी।

स्पष्ट है-शास्त्रानुसार तो 19 अगस्त को दोपहर 1 बजकर 31 मिनट (13घं.-31मिं.) के बाद ही अपराह्ण-काल में रक्षाबन्धन का शुभ कार्य करना प्रशस्त होगा।

[पंजाब, हिमाचल, जम्मू आदि प्रदेशों में 19 अगस्त, 2024 ई. को दोपहर 13घं.-48मिं. से 16घं.-25मिं. तक अपराह्ण-काल रहेगा।]

******

(4) श्रीकृष्ण-जयन्ती योग (भाद्रपद कृष्ण 8) (26 अगस्त, 2024 ई.)

अर्धरात्रिव्यापिनी भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को चन्द्रोदय के समय रोहिणी नक्षत्र से संयोग होने पर श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी को '**श्रीकृष्ण-जयन्ती**' के नाम से भी संबोधित किया जाता है। **इस वर्ष 26 अगस्त, सोमवार को अर्धरात्रिव्यापिनी चन्द्रोदयकालीन अष्टमी रोहिणीयुता है। अतएव यहाँ 'श्रीकृष्ण-जयन्ती' नामक पुण्यतम योग बना है।**

******

(5) साम-उपाकर्म (5 सितम्बर, गुरुवार)

सामवेदियों का भाद्रपद शुक्लपक्ष में अपराह्ण-व्यापिनी हस्तनक्षत्र में उपाकर्म का मुख्यकाल है। शास्त्रानुसार यदि हस्तनक्षत्र केवल पहले ही दिन अपराह्ण-काल को पूर्णरूपेण या आंशिकरूपेण व्याप्त करे तो उपाकर्म पहले दिन ही होगा।

इस वर्ष भाद्रपद शुक्लपक्ष में हस्त नक्षत्र केवल 5 सितम्बर, गुरुवार को ही अपराह्ण-व्यापिनी है। **अतः सामवेदियों का उपाकर्म इसी दिन होगा।**

******

(6) कलंक-चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध) (6 या 7 सितम्बर)

इस वर्ष (वि. संवत् 2081) '**सिद्धि विनायक व्रत**' मध्याह्न-व्यापिनी **7 सितम्बर, शनिवार को है।** परन्तु चतुर्थी तिथि 6 सितम्बर, शुक्रवार की दोपहर 15घं.-02मिं. से प्रारम्भ हो रही है तथा इसदिन चतुर्थी के समय ही रात्रि 20घं.-20मिं. पर चन्द्रास्त होगा। जबकि 7 सितम्बर को चतुर्थी तिथि सायं 17घं.-38मिं. तक ही है तथा इस दिन चन्द्रास्त 20घं.-47मिं. पर होगा, जबकि उस समय पंचमी तिथि व्याप्त होगी। **इस प्रकार उत्तरी भारत में तो लोग शास्त्रनिर्देशानुसार 6 सितम्बर, शुक्रवार को ही चन्द्रदर्शन का निषेध मानेंगे।**

******

(7) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (आश्विन कृष्ण चतुर्थी)

चन्द्रोदय-व्यापिनी कृष्ण चतुर्थी को श्रीगणेश-चतुर्थी व्रत होता है। दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी न हो तो यह व्रत दूसरे दिन होता है। इस वर्ष आश्विन कृष्ण चतुर्थी दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी नहीं है। इसलिए यहाँ **श्रीगणेशचतुर्थी व्रत दूसरे दिन 21 सितम्बर, 2024 ई., शनिवार को लिखा गया है।**

******

(8) सोम प्रदोष व्रत (आश्विन कृष्णपक्ष)

प्रत्येक पक्ष की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी वाले दिन `प्रदोष व्रत` किया जाता है। सूर्यास्त के बाद त्रिमुहूर्त-व्यापिनी त्रयोदशी ग्रहण करनी चाहिये।

इस वर्ष (सं. 2081 में) आश्विन कृष्ण त्रयोदशी 29 और 30 सितम्बर, 2024 ई. दोनों दिन प्रदोष में विद्यमान है (इन दोनों दिनों प्रदोषकाल लगभग 18:10 से 20:37 तक है।) यद्यपि दूसरे दिन 30 सितम्बर 2024 ई. को त्रयोदशी प्रदोष को अपेक्षाकृत कम व्याप्त कर रही है, तथापि **"दिनद्वये वाथवांशेन व्याप्तिः-"** निर्देशानुसार **यहाँ इस वर्ष त्रयोदशी-प्रदोष व्रत 30 सितम्बर को ही किया जायेगा। अपि च** - इसदिन त्रयोदशी **`गौण प्रदोषकाल`** माने जाने वाले सायाह्न को तो पूर्णतया व्याप्त कर ही रही है।

(9) पापांकुशा एकादशी व्रत (आश्विन शुक्ल 11)

धर्मसिन्धुकार अनुसार एकादशी तिथि मुख्यतः दो प्रकार की होती है (1) विद्धा और (2) शुद्धा। (1) सूर्योदय काल में दशमी का वेध हो अथवा अरुणोदयकाल (सूर्योदय से लगभग 4 घड़ी पूर्व) में एकादशी तिथि दशमी द्वारा विद्ध हो, तो वह एकादशी विद्धा कहलाती है। (2) अरुणोदय-काल में दशमी तिथि के वेध से रहित एकादशी हो तो उसे शुद्धा तिथि माना जाता है।

इस प्रकार शास्त्रविवेचन से स्पष्ट है कि द्वादशी तिथि का क्षय होने के कारण ही स्मार्तों का पापांकुशा एकादशी व्रत। 13 अक्टूबर 2024 ई. को तथा वैष्णवों का एकादशी व्रत 14 अक्टूबर 2024 ई. को लिखा गया है।

******

✻ कुम्भ–महापर्व–प्रयागराज 2025 ई. ✻

मानव-जीवन का परम एवं चरम लक्ष्य है – अमृतत्व की प्राप्ति। '**अमृत**' परम व्योम में व्याप्त है। '**कुम्भ-रूपी**' जीवात्मा में '**सहस्रार**' ही परम व्योम है। '**कुम्भी**'**-साधक** प्राण-अपान की एकता सम्पादन कर **परम व्योम (सहस्रार)** मैं स्थित '**अमृत**' की प्राप्ति करते हैं। यह '**अमृत**' प्राप्ति ही '**कुम्भी**'-साधक का परम लक्ष्य है।

'**कुम्भ-पर्व**' की परम्परा भारत में अत्यन्त प्राचीन है। यह महापर्व भारत की प्राचीन गौरवमयी वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक है।

भूमण्डल के मनुष्य मात्र के पाप को दूर करना ही कुम्भ की उत्पत्ति का हेतु है। यह पर्व प्रत्येक बारहवें वर्ष हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक – इन चारों स्थानों में होता रहता है।

प्रयाग-कुम्भपर्व में स्नान का माहात्म्य

त्रिवेणी अर्थात् गंगा, यमुना व सरस्वती – तीनों पावन नदियों के संगम पर माघ मास एवं कुम्भ पर्व पर स्नान, जप-पाठ एवं दानादि का धर्मशास्त्रों में विशेष माहात्म्य वर्णित किया गया है। विधिपूर्वक माघ स्नान से बढ़कर कोई पवित्र और पापनाशक पर्व नहीं। माघ मास में कुम्भ पर्व पर प्रयागराज में व्यक्ति तीन दिन भी नियमपूर्वक स्नान कर लेता है, तो उसे एक सहस्त्र अश्वमेघ यज्ञों को करने के बराबर पुण्य प्राप्त हो जाता है।

प्रयाग-कुम्भपर्व 2025 ई. की पुण्य (प्रमुख) स्नानतिथियाँ

(1) पौष शुक्ल एकादशी, शुक्रवार (10 जनवरी, 2025 ई.)

(2) पौष-पूर्णिमा, सोमवार (13 जनवरी, 2025 ई.)

(3) मकर संक्रान्ति (माघ कृष्ण प्रतिपदा), मंगलवार (14 जनवरी, 2025 ई.) (प्रथम शाही-स्नान)। यह कुम्भ-महापर्व (प्रयागराज) का प्रथम शाही स्नान दिन होगा। जिसमें दशनाम अखाड़े के संन्यासी क्रमानुसार स्नान करेंगे।

(4) माघ-कृष्ण एकादशी, शनिवार (25 जनवरी, 2025 ई.)

(5) माघ-कृष्ण त्रयोदशी, सोमवार (27 जनवरी, 2025 ई.)

(6) माघ (मौनी) अमावस्या, बुधवार (29 जनवरी, 2025 ई.)

क्योंकि सन् 2025 ई. में माघी अमावस्या के दिन सूर्य-चन्द्रमा मकर राशि में तथा बृहस्पति वृष राशि में होंगे, **तदनुसार कुम्भ-महापर्व का मुख्य स्नान 29 जनवरी, 2025 ई. को ही होगा। यह इस कुम्भ महापर्व की प्रमुख (शाही) स्नानतिथि है, जिस दिन द्वितीय (प्रमुख) शाही स्नान होगा।**

29 जनवरी 2025 को प्रयागराज में सूर्योदय 6 घं.-47 मिं. से लगभग 1 घं.-36 मिं. पहले प्रातः 5 घं.-11 मिं. से अरुणोदयकाल प्रारम्भ हो जाएगा। अरुणोदय समय (5 घं.-11 मिं.) से कुम्भ-पर्व का स्नान-माहात्म्य प्रारम्भ हो जाएगा। माघी अमावस्या के दिन श्रवण-नक्षत्र भी विद्यमान् रहने से कुम्भ-पर्व का माहात्म्य अनन्त गुणा अधिक रहेगा।

(7) वसन्त-पञ्चमी (माघशुक्ल पंचमी), रवि/सोम (2/3 फरवरी, 2025 ई.) तृतीय (अन्तिम) शाही-स्नान - को प्रातः 9 घं.-15 मिं. बाद पंचमी तिथि पूर्वाह्न-कालिक रहने से **वसन्त-पंचमी** के दिन स्नान-दान का अनूठा महत्त्व रहेगा। **इस दिन तीसरा (अन्तिम) शाही स्नान होगा।**

(8) माघ शुक्ल सप्तमी, मंगलवार (4 फरवरी, 2025 ई.)

(9) माघ शुक्ल अष्टमी, बुधवार (5 फरवरी, 2025 ई.)

(10) माघ शुक्ल एकादशी, शनिवार (8 फरवरी, 2025 ई.)

(11) माघ शुक्ल त्रयोदशी, सोमवार (10 फरवरी, 2025 ई.)

(12) माघ पूर्णिमा, बुधवार (12 फरवरी, 2025 ई.)

(13) फाल्गुन कृष्ण एकादशी, सोमवार (24 फरवरी, 2025 ई.)

(14) फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी/चतुर्दशी, बुधवार (26 फरवरी, 2025 ई.) – को **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत तिथि है। यह तिथि भी चतुर्थ (अन्तिम) स्नान पर्व होगा।**

कुम्भ महापर्व पर त्रिवेणी में स्नान, दानादि की विधि

स्नान - त्रिवेणी संगम में प्रवेश करने से पूर्व पुष्पाक्षत, नारियल एवं रूपिया/मुद्रा सहित अर्पित करते हुये यह मन्त्र पढ़े -

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ तीर्थ-राजाय प्रयागाय नमः। ॐ अक्षय-वट-शोभित-त्रिवेणी-सङ्गमाय नमः।

दानादि – स्नानोपरान्त घृत सहित अन्नादि से आपूरित कुम्भ (घड़े) को वस्त्र, अलंकार, पुष्पपत्रों से सुसज्जित कर उसकी षोडश या पंचोपचार पूर्वक पूजन करके सुवर्ण, चाँदी या वस्त्र, धनादि की दक्षिणा सहित किसी सुपात्र ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक दान करके, तदुपरान्त धर्म-परायण श्रद्धालुओं तथा साधु महात्माओं को यथाशक्ति दक्षिणा सहित भोजन कराने से अनेकों तीर्थों में जाने का तथा सैंकड़ों गोदान करने का फल मिलता है तथा मनुष्य के पितरों की आत्माएं सन्तुष्ट होती हैं।

❋ श्री अम्बे जी की आरती ❋

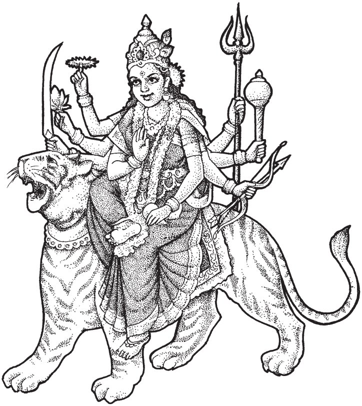

जय अंबे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत (2), हरि ब्रह्मा शिवजी॥
ॐ जय अंबे गौरी...

मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को। (मैया टीको मृगमद को)
उज्ज्वल से दोउ नैना (2), चंद्रवदन नीको॥
ॐ जय अंबे गौरी...

कनक समान कलेवर, रक्तांबर राजै। (मैया रक्तांबर राजै)
रक्तपुष्प गल माला (2), कंठन पर साजै॥
ॐ जय अंबे गौरी...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। (मैया खड्ग खप्पर धारी)
सुर नर मुनिजन सेवत (2), तिनके दुःखहारी॥
ॐ जय अंबे गौरी...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। (मैया नासाग्रे मोती)
कोटिक चंद्र दिवाकर (2), राजत सम ज्योती॥
ॐ जय अंबे गौरी...

शुंभ-निशुंभ बिदारे, महिषासुर घाती। (मैया महिषासुर घाती)
धूम्र विलोचन नैना (2), निशदिन मदमाती॥
ॐ जय अंबे गौरी...

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। (मैया शोणित बीज हरे)
मधु-कैटभ दोउ मारे (2), सुर भयहीन करे॥
ॐ जय अंबे गौरी...

ब्रह्माणी, रूद्राणी, तुम कमला रानी। (मैया तुम कमला रानी)
आगम निगम बखानी (2), तुम शिव पटरानी॥
ॐ जय अंबे गौरी...

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरव। (मैया नृत्य करत भैरव)
बाजत ताल मृदंगा (2), अरू बाजत डमरू ॥
ॐ जय अंबे गौरी...

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। (मैया तुम ही हो भरता)
भक्तन की दुख हरता (2), सुख संपति करता॥
ॐ जय अंबे गौरी...

भुजा चार अति शोभित, वरमुद्रा धारी। (मैया वरमुद्रा धारी)
मनवांछित फल पावत (2), सेवत नर नारी॥
ॐ जय अंबे गौरी...

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। (मैया अगर कपूर बाती)
श्रीमालकेतु में राजत (2), कोटि रतन ज्योती॥
ॐ जय अंबे गौरी...

श्री अंबेजी की आरति, जो कोइ नर गावे। (मैया जो कोइ नर गावे)
कहत शिवानंद स्वामी (2), सुख-संपति पावे॥
ॐ जय अंबे गौरी...

जय अंबे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत (2), हरि ब्रह्मा शिवरी॥
ॐ जय अंबे गौरी...

❋ महिषासुरमर्दिनी-स्तोत्रम् ❋

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दनुते
गिरिवरविंध्यशिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥1॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥2॥

अयि जगदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखरिशिरोमणितुङ्गहिमालयशृङ्गनिजालय मध्यगते।
मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि कैटभभञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥3॥

अयि निजहुँकृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते।
शिव शिव शुम्भ निशुम्भमहाहव तर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥4॥

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्ड गजाधिपते
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते।
निजभुजदण्ड निपातितखण्डविपातितमुण्डभटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥5॥

धनुरनुसङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्ग नटत्कटके
कनक पिशङ्गपृषत्कनिषङ्गरसद्भटशृङ्ग हतावटुके।
कृतचतुरङ्ग बलक्षितिरङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥6॥

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचार धुरीणमहाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते।
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदूतकृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥7॥

अयि शरणागतवैरिवधूवर वीरवराभयदायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि शिरोधिकृतामल शूलकरे।
दुमिदुमितामर दुन्दुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥8॥

सुरललनाततथेयितथेयितथाभिनयोत्तरनृत्यरते
हासविलासहुलासमयि प्रणतार्तजनेऽमितप्रेमभरे।
धिमिकिटधिक्कटधिकटधिमिध्वनिघोरमृदंगनिनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥9॥

जय जय जप्य जयेजय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते
भण भण भिञ्जिमि भिङ्कृतनूपुर सिञ्जितमोहित भूतपते।
नटितनटार्ध नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥10॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते।
सुनयनविभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥11॥

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते
विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक झिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते।
सितकृतफुल्लिसमुल्लसितारुणतल्लजपल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥12॥

अविरलगण्डगलन्मदमेदुर मत्तमतङ्गज राजपते
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते ।
अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥13॥

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले।
अलिकुल सङ्कुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्बकुलालि कुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥14॥

करमुरलीरववीजितकूजित लज्जितकोकिल मञ्जुमते-
मिलितपुलिन्द मनोहरगुञ्जित रञ्जितशैल निकुञ्जगते।

निजगुणभूत महाशबरीगण सद्गुणसम्भृत केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥15॥

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नख चन्द्ररुचे।
जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुञ्जर कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥16॥

विजित सहस्त्रकरैक सहस्त्रकरैक सहस्त्रकरैकनुते
कृतसुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते।
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥17॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥18॥

कनकलसत्कल सिन्धुजलैरनु सिञ्चिनुते गुण रङ्गभुवं
भजति स किं न शचीकुचकुम्भ तटीपरिरम्भ सुखानुभवम्।
तवचरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥19॥

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥20॥

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते।
यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥21॥

स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्॥22॥

॥इति श्रीमहिषासुरमर्दिनीस्तोत्रं समाप्तम्॥

❊ श्री शिव जी की आरती ❊

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव (2), अर्धाङ्गी धारा।
ॐ जय शिव ओंकारा...

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै। (स्वामी पञ्चानन राजै)
हंसानन गरुड़ासन (2), वृषवाहन साजै।।
ॐ जय शिव ओंकारा...

दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै।। (स्वामी दशभुज ते सोहै)
तीनो रूप निरखता (2), त्रिभुवन जन मोहे।
ॐ जय शिव ओंकारा...

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी। (स्वामी मुण्डमाला धारी)
चन्दन मृगमद चन्दा (2), भाले शशि धारी।
ॐ जय शिव ओंकारा...

श्वेताम्बर पीताम्बर वाघाम्बर अङ्गे। (स्वामी वाघाम्बर अङ्गे)
सनकादिक ब्रह्मादिक (2), भूतादिक सङ्गे।
ॐ जय शिव ओंकारा...

कर मध्ये च कमण्डल चक्र त्रिशूलधर्ता। (स्वामी चक्र त्रिशूलधर्ता)
जगकर्ता जगहर्ता (2), जगपालनकर्ता।
ॐ जय शिव ओंकारा...

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। (स्वामी जानत अविवेका)
प्रणवाक्षर के मध्ये, ओमाक्षर के मध्ये, यह तीनों एका।
ॐ जय शिव ओंकारा...

त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई जन गावे। (स्वामी जो कोई जन गावे)
कहत शिवानन्द स्वामी, भजत हरिहर स्वामी, मनवाँछित फल पावे।
ॐ जय शिव ओंकारा...

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव (2), अर्धाङ्गी धारा।
ॐ जय शिव ओंकारा...

।।इति।।

❋ श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम् ❋

गजाननं भूतगणाधिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

॥ श्री पुष्पदन्त उवाच ॥

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथाऽवाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥ 1॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥ 2॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता॥ 3॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥ 4॥

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः॥ 5॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे॥ 6॥

त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥ 7॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥ 8॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याऽध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता॥ 9॥

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥ 10॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥ 11॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्यापातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः॥ 12॥

यदृद्धिं सूत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥ 13॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥ 14॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः॥ 15॥

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥ 16॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः॥ 17॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥ 18॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषः
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥ 19॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥ 20॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा विधुरमभिचाराय हि मखाः॥ 21॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥ 22॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥ 23॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि॥ 24॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमविधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्॥ 25॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि॥ 26॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥ 27॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते॥ 28॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः॥ 29॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥ 30॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्॥ 31॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥ 32॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार॥ 33॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च॥ 34॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नःस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥ 35॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्॥ 36॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥ 37॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः॥ 38॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥ 39॥

श्री पुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥ 40॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥ 41॥

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥ 42॥

॥ इति श्री पुष्पदन्त विरचितं श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रं समाप्तम्॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

✻ रुद्राष्टकम् ✻

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥1॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम्॥2॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥3॥
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥4॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥5॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥6॥
न यावत् उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥7॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥8॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

॥ इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं संपूर्णम्॥

✻ बिल्वाष्टकम् ✻

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥1॥

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
शिवपूजां करिष्यामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ॥2॥

अखण्ड बिल्व पत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे।
शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ॥3॥

शालिग्राम शिलामेकां विप्राणां जातु चार्पयेत्।
सोमयज्ञ महापुण्यं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥4॥

दन्तिकोटि सहस्राणि वाजपेय शतानि च।
कोटिकन्या महादानं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥5॥

लक्ष्म्यास्तनुत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ॥6॥

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥7॥

काशीक्षेत्रनिवासं च कालभैरवदर्शनम्।
प्रयागे माधवं दृष्ट्वा ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे
अग्रतः शिवरूपाय ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्॥8॥

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्॥

॥ इति बिल्वाष्टकम् ॥

❋ लिङ्गाष्टकम् ❋

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥1॥
देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥2॥
सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥3॥
कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥4॥
कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम्।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥5॥
देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥6॥
अष्टदलोपरि वेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥7॥
सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥8॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ इति लिङ्गाष्टकम् ॥

॥शिवमानसपूजा श्लोकौ॥

किं वानेन धनेन वाजिकरिभि: प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत् क्षणभङ्गुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम्॥
आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद् भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभंगचपला विद्युच्चलं जीवितं
तस्मान्मां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना॥

❊ श्री शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ❊

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥1॥

मन्दाकिनिसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥2॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥3॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥4॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥5॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं समाप्तम्॥

❊ द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणम् ❊

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥1॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥2॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥3॥

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥4॥

एतेशां दर्शनादेव पातकं नैव तिष्ठति।
कर्मक्षयो भवेत्तस्य यस्य तुष्टो महेश्वराः॥

॥ इति द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणं सम्पूर्णम्॥

❇ शिवताण्डवस्तोत्रम् ❇

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥1॥
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥2॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि॥3॥
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥4॥
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥5॥
ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभानिपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः॥6॥
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम॥7॥
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥8॥
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभावलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे॥9॥
अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे॥10॥
जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गलध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः॥11॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्॥12॥
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्॥13॥
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्॥14॥
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥15॥

इति रावण कृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

✻ श्री गङ्गाष्टकम् ✻

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि।
सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानसङ्गे तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद॥1॥
भगवति भवलीलामौलिमाले तवाम्भः कणमणुपरिमाणं प्राणिनो ये स्पृशन्ति।
अमरनगरनारीचामरग्राहिणीनां विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति॥2॥
ब्रह्माण्डं खण्डयन्ती हरशिरसि जटावल्लिमुल्लासयन्ती
स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्रवन्ती।
क्षोणीपृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूर्निर्भरं भर्त्सयन्ती
पाथोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरित्पावनी नः पुनातु॥3॥
मज्जन्मातङ्गकुम्भच्युतमदमदिरामोदमत्तालिजालं
स्नानैः सिद्धाङ्गनानां कुचयुगविगलत्कुङ्कुमासङ्गपिङ्गम्।
सायंप्रातर्मुनीनां कुशकुसुमचयैश्छन्नतीरस्थनीरं
पायान्नो गाङ्गमम्भः करिकलभकराक्रान्तरंहस्तरङ्गम्॥4॥
आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जलं
पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियं
कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते॥5॥
शैलेन्द्रादवतारिणी निजजले मज्जज्जनोत्तारिणी
पारावारविहारिणी भवभयश्रेणीसमुत्सारिणी।
शेषाहेरनुकारिणी हरशिरोवल्लीदलाकारिणी
काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गङ्गा मनोहारिणी॥6॥
कुतो वीचिर्वीचिस्तव यदि गता लोचनपथं त्वमापीता पीताम्बरपुरनिवासं वितरसि।
त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतति यदि कायस्तनुभृतां तदा मातः शातक्रतवपदलाभोऽप्यतिलघुः॥7॥
गङ्गे त्रैलोक्यसारे सकलसुरवधूधौतविस्तीर्णतोये
पूर्णब्रह्मस्वरूपे हरिचरणरजोहारिणी स्वर्गमार्गे।
प्रायश्चित्तं यदि स्यात्तव जलकणिका ब्रह्महत्यादिपापे
कस्त्वां स्तोतुं समर्थस्त्रिजगदघहरे देवि गङ्गे प्रसीद॥8॥
मातर्जाह्नवि शम्भुसङ्गवलिते मौलौ निधायाञ्जलिं
त्वत्तीरे वपुषोऽवसानसमये नारायणाङ्घ्रिद्वयम्।
सानन्दं स्मरतो भविष्यति मम प्राणप्रयाणोत्सवे
भूयाद्भक्तिरविच्युताहरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती॥9॥
गङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतो नरः। सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति॥10॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं श्री गङ्गाष्टकं संपूर्णम् ॥

वर्गीकृत तिथि सूचना 9 अप्रैल 2024 ई० से 29 मार्च 2025 ई० तक (दिनाङ्क अनुसार)

2024 2025	श्री गणेश चतुर्थी	एकादशी (स्मार्त)	अमावस्या (स्नानदान)	पूर्णिमा (उदय व्या.)	प्रदोष व्रत	मास शिवरात्रि	संक्रान्ति	सत्य-नारायण व्रत
अप्रैल	27	5, 19	8	23	6, 21	7	13 (वैशाख)	23
मई	26	4, 19	8	23	5, 20	6	14 (ज्येष्ठ)	23
जून	25	2, 18	6	22	4, 19	4	14 (आषाढ़)	21
जुलाई	24	2, 17, 31	5	21	3, 19	4	16 (श्रावण)	20
अगस्त	22	16, 29	4	19	1, 17, 31	2	16 (भाद्रपद)	19
सितम्बर	21	14, 28	2	18	15, 30	1, 30	16 (आश्विन)	17
अक्टूबर	20	13, 28	2	17	15, 29	30	17 (कार्तिक)	17
नवम्बर	18	12, 26	1	15	13, 28	29	16 (मार्गशीर्ष)	15
दिसम्बर	18	11, 26	1, 30	15	13, 28	29	15 (पौष)	14
जनवरी (25)	17	10, 25	29	13	11, 27	27	14 (माघ)	13
फरवरी	16	8, 24	27	12	10, 25	26	12 (फाल्गुन)	12
मार्च	17	10, 25	29	14	11, 27	27	14 (चैत्र)	13

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
9 अप्रैल से 23 अप्रैल 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
9	27	1	मंगल	20:32	रेवती अश्विनी	7:32 29:07	वैधृति	किंस्तुघ्न
10	28	2	बुध	17:33	भरणी	27:06	विष्कुम्भ	बालव
11	29	3	गुरु	15:04	कृत्तिका	25:38	प्रीति आयुष्मान्	गर
12	30	4	शुक्र	13:12	रोहिणी	24:51	सौभाग्य	विष्टि
13	1 वैशाख	5	शनि	12:05	मृगशिरा	24:49	शोभन	बालव
14	2	6	रवि	11:44	आर्द्रा	25:35	अतिगण्ड	तैतिल
15	3	7	सोम	12:12	पुनर्वसु	27:06	सुकर्मा	वणिज्
16	4	8	मंगल	13:25	पुष्य	29:16	धृति	बव
17	5	9	बुध	15:15	आश्लेषा	पूरादिन	शूल	कौलव
18	6	10	गुरु	17:32	आश्लेषा	7:57	गण्ड	गर
19	7	11	शुक्र	20:05	मघा	10:57	वृद्धि	वणिज्
20	8	12	शनि	22:42	पू.फाल्गुनी	14:04	ध्रुव	बव
21	9	13	रवि	25:12	उ.फाल्गुनी	17:08	व्याघात	कौलव
22	10	14	सोम	27:26	हस्त	20:00	हर्ष	गर
23	11	15	मंगल	29:19	चित्रा	22:32	वज्र	विष्टि

सूर्य उत्तरायण, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु
चैत्र शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
06:01	18:37	मेष में 7:32 से	'कालयुक्त' नाम नव वि.सं. 2081 **आरम्भ। चैत्र (वासन्त) नवरात्र प्रा.। घटस्थापन प्रातः 6:02 से 10:17 तक। संवत्सर फल श्रवण। पंचक समाप्त 7:32। वक्री बुध रेवती (4) मीन में 21:30।** ध्वजारोहण। तैलाभ्यंग। श्रीदुर्गापूजा। गुड़ी-पड़वा। गण्डमूल 29:07 तक।
05:59	18:37	मेष	चन्द्रदर्शन, मु.15, मंगल पू.भा. में 11:08।
05:58	18:38	वृष में 8:40 से	भद्रा 26:08 से। गणगौरी तृतीया। श्रीमत्स्य जयन्ती। आन्दोलन तृतीया।
05:57	18:38	वृष	भद्रा 13:12 तक। दमनक चतुर्थी। **श्री (लक्ष्मी) पंचमी।** हयव्रत।
05:56	18:39	मिथुन में 12:44 से	**सूर्य अश्वि.1 मेष में 21:04। वैशाख संक्रान्ति, मु.30। पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद।** नाग पंचमी। स्कन्द षष्ठी व्रत।
05:55	18:40	मिथुन	कालरात्री पूजा। यमुना जयन्ती व्रत।
05:54	18:40	कर्क में	20:39 से। भद्रा 12:12 से 24:49 तक। अशोकाष्टमी।
05:53	18:41	कर्क	**श्रीदुर्गाष्टमी।** भवान्युत्पत्ति, मेला बाहूफोर्ट नैनादेवी। काँगड़ादेवी। अन्नपूर्णा पूजन। गुरु कृत्ति.(1) में 26:03।
05:52	18:41	कर्क	श्रीदुर्गा-नवमी। **नवरात्र-समाप्त। श्रीरामनवमी। ग.मू.।**
05:51	18:42	सिंह में	7:57 से। **नवरात्र व्रत पारणा।** गण्डमूल विचार।
05:50	18:43	सिंह	भद्रा 6:49 से 20:05 तक। **कामदा एकादशी व्रत।** लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव। सूर्य सायन वृष में 19:30। **ग्रीष्म ऋतु आरम्भ।** वक्री बुध पूर्व में उदय 19:02। ग.मू. 10:57 तक।
05:49	18:43	कन्या में	20:51 से। श्रीविष्णु-दमनोत्सव। **अगस्त्य अस्त।**
05:48	18:44	कन्या	**प्रदोष व्रत। अनङ्ग त्रयोदशी। श्रीमहावीर जयन्ती।**
05:47	18:45	कन्या	भद्रा 27:26 से। श्रीशिव दमनोत्सव। स.सि.यो.। शुक्र वार्धक्य दोष 5:58 से।
05:46	18:45	तुला में 9:19 से	भद्रा 16:23 तक। **चैत्र-पूर्णिमा। वैशाख स्नान आरम्भ। श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण भारत)। मंगल मीन में 8:38।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
24 अप्रैल से 8 मई 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
24	12	1	बुध	पूरादिन	स्वाति	24:41	सिद्धि	बालव
25	13	1	गुरु	6:46	विशाखा	26:24	व्यतिपात	कौलव
26	14	2	शुक्र	7:47	अनुराधा	27:40	वरीयान	गर
27	15	3	शनि	8:19	ज्येष्ठा	28:28	परिघ	विष्टि
28	16	4	रवि	8:22	मूल	28:49	शिव	बालव
29	17	5	सोम	7:58	पूर्वाषाढ़ा	28:43	सिद्ध	तैतिल
30	18	6	मंगल	7:06	उत्तराषाढ़ा	28:09	साध्य	वणिज्
-	-	7	मंगल	29:46	-	-	-	-
1मई	19	8	बुध	28:02	श्रवण	27:11	शुभ	बालव
2	20	9	गुरु	25:54	धनिष्ठा	25:49	शुक्ल	तैतिल
3	21	10	शुक्र	23:25	शतभिषा	24:06	ब्रह्म	वणिज्
4	22	11	शनि	20:39	पू.भाद्रपदा	22:07	ऐन्द्र	बव
5	23	12	रवि	17:42	उ.भाद्रपदा	19:57	वैधृति विष्कुम्भ	कौलव
6	24	13	सोम	14:41	रेवती	17:43	प्रीति	वणिज
7	25	14	मंगल	11:41	अश्विनी	15:32	आयुष्मान्	शकुनि
8	26	30	बुध	8:52	भरणी	13:34	सौभाग्य	नाग

सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु
वैशाख कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:45	18:46	तुला	**शुक्र अश्वि. 1 मेष में 23:58। शुक्र पूर्व में अस्त 5:56।**
5:44	18:46	वृश्चिक में	20:01 से। बुध मार्गी 18:24।
5:43	18:47	वृश्चिक	भद्रा 20:03 से। गण्डमूल 27:40 से। स.सि.यो.।
5:42	18:48	धनु में 28:28 से	भद्रा 8:19 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 22:23।** गण्डमूल।
5:41	18:48	धनु	सति अनसूया जयन्ती। गण्डमूल 28:49 तक। स.सि.यो.।
5:40	18:49	धनु	
5:39	18:50	मकर में	10:37 से। भद्रा 7:06 से 18:26 तक। त्रिपुष्कर योग।
-	-	-	सप्तमी तिथि का क्षय।
5:38	18:50	मकर	गुरु कृत्तिका 2 वृष में 12:57।
5:37	18:51	कुम्भ में	14:33 से। पंचक आरम्भ 14:33।
5:36	18:52	कुम्भ	भद्रा 12:40 से 23:25 तक।
5:36	18:52	मीन में 16:38 से	**वरूथिनी एकादशी व्रत।** श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती।
5:35	18:53	मीन	**प्रदोष व्रत।** गण्डमूल 19:57 से। सर्वार्थ सिद्धि योग। शुक्र भरणी में 19:41।
5:34	18:53	मेष में 17:43 से	भद्रा 14:41 से 25:11 तक। मास शिवरात्रि व्रत। पंचक समाप्त 17:43। **गुरु पश्चिम में अस्त 19:06।**
5:33	18:54	मेष	पितृकार्येषु अमावस्या। श्री टैगोर जयन्ती। गण्डमूल 15:32 तक।
5:32	18:55	वृष में	19:07 से। **वैशाख अमावस्या (स्नानदानादि)।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946 9 मई से 23 मई 2024 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
9	27	1	गुरु	6:22	कृत्तिका	11:56	शोभन	बव
-	-	2	गुरु	28:18	-	-	-	-
10	28	3	शुक्र	26:51	रोहिणी	10:47	अतिगण्ड	तैतिल
11	29	4	शनि	26:05	मृगशिरा	10:15	सुकर्मा	वणिज्
12	30	5	रवि	26:04	आर्द्रा	10:27	धृति	बव
13	31	6	सोम	26:51	पुनर्वसु	11:24	शूल	कौलव
14	1 ज्येष्ठ	7	मंगल	28:20	पुष्य	13:05	गण्ड	गर
15	2	8	बुध	पूरादिन	आश्लेषा	15:25	वृद्धि	विष्टि
16	3	8	गुरु	6:23	मघा	18:14	ध्रुव	बव
17	4	9	शुक्र	8:49	पू.फाल्गुनी	21:18	व्याघात	कौलव
18	5	10	शनि	11:23	उ.फाल्गुनी	24:23	हर्ष	गर
19	6	11	रवि	13:51	हस्त	27:16	वज्र	विष्टि
20	7	12	सोम	15:59	चित्रा	पूरादिन	सिद्धि	बालव
21	8	13	मंगल	17:40	चित्रा	5:46	व्यतिपात	तैतिल
22	9	14	बुध	18:48	स्वाति	7:47	वरीयान	गर
23	10	15	गुरु	19:23	विशाखा	9:15	परिघ	विष्टि

सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु
वैशाख शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:32	18:55	वृष	चन्द्रदर्शन मु.45। श्री शिवाजी जयन्ती।
-	-	-	द्वितीया तिथि का क्षय।
5:31	18:56	मिथुन में 27:26 से	**अक्षय-तृतीया, आश्रम में वार्षिकोत्सव। 24 घंटे अखण्ड रूद्राभिषेक पाठ-पूजा। केदार-बदरीनाथ यात्रा आरम्भ। भगवान परशुराम जयन्ती। बुध अश्वि. 1 में 18:43।**
5:30	18:57	मिथुन	भद्रा 14:28 से 26:05 तक।
5:30	18:57	कर्क में	29:05 से। **आद्यजगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्य जयन्ती।**
5:29	18:58	कर्क	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती।
5:28	18:59	कर्क	भद्रा 28:20 से। **श्रीगङ्गा जयन्ती।** सूर्य वृष में 17:54। **ज्येष्ठ संक्रान्ति, मु.15। पुण्यकाल सं. प्रात 11:30 बाद।** गण्डमूल 13:05 से।
5:28	18:59	सिंह में	15:25 से। भद्रा 17:22 तक। श्रीदुर्गाष्टमी। गण्डमूल।
5:27	19:00	सिंह	**जानकी (सीता) जयन्ती।**
5:26	19:00	कन्या में	28:05 से।
5:26	19:01	कन्या	भद्रा 24:37 से।
5:25	19:02	कन्या	भद्रा 13:51 तक। **मोहिनी एकादशी व्रत। शुक्र वृष में 8:42।** स.सि.यो.।
5:25	19:02	तुला में	16:35 से। **सोम प्रदोष व्रत।**
5:24	19:03	तुला	श्रीनृसिंह जयन्ती।
5:24	19:03	वृश्चिक में	26:56 से। भद्रा 18:48 से। श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती।
5:24	19:04	वृश्चिक	भद्रा 7:06 तक। **वैशाख पूर्णिमा। श्री बुद्ध पूर्णिमा। श्री कूर्म जयन्ती। वैशाख स्नान समाप्त।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
24 मई से 6 जून 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
24	11	1	शुक्र	19:25	अनुराधा	10:10	शिव	बालव
25	12	2	शनि	18:59	ज्येष्ठा	10:36	सिद्ध	तैतिल
26	13	3	रवि	18:07	मूल	10:36	साध्य	वणिज्
27	14	4	सोम	16:54	पूर्वाषाढ़ा	10:14	शुभ/शुक्ल	बव
28	15	5	मंगल	15:24	उत्तराषाढ़ा	9:34	ब्रह्म	तैतिल
29	16	6	बुध	13:40	श्रवण	8:39	ऐन्द्र	वणिज्
30	17	7	गुरु	11:44	धनिष्ठा	7:31	वैधृति	बव
31	18	8	शुक्र	9:39	शतभिषा पू.भाद्रपदा	6:14 28:48	विष्कुम्भ	कौलव
1 जून	19	9	शनि	7:25	उ.भाद्रपदा	27:16	प्रीति	गर
-	-	10	शनि	29:05	-	-	-	-
2	20	11	रवि	26:42	रेवती	25:40	आयुष्मान्	बव
3	21	12	सोम	24:19	अश्विनी	24:05	सौभाग्य	कौलव
4	22	13	मंगल	22:02	भरणी	22:35	शोभ/अति	गर
5	23	14	बुध	19:56	कृत्तिका	21:16	सुकर्मा	विष्टि
6	24	30	गुरु	18:08	रोहिणी	20:17	धृति	चतुष्पाद्

सूर्य उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:23	19:05	वृश्चिक	गण्डमूल 10:10 से।
5:23	19:05	धनु में 10:36 से	श्रीनारद-जयन्ती। वीणादान। गण्डमूल विचार।
5:22	19:06	धनु	भद्रा 6:33 से 18:07 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 22:13।** गण्डमूल।
5:22	19:06	मकर में	16:05 से।
5:22	19:07	मकर	
5:21	19:07	कुम्भ में 20:06 से	भद्रा 13:40 से 24:42 तक। पंचक आरम्भ 20:06।
5:21	19:08	कुम्भ	
5:21	19:09	मीन में 23:10 से	बुध वृष में 12:12।
5:21	19:09	मीन	भद्रा 18:15 से 29:05 तक। मंगल अश्वि.1 मेष में 15:37। गण्डमूल 27:16 से।
-	-	-	दशमी तिथि का क्षय।
5:20	19:10	मेष में 25:40 से	**गुरु पूर्व में उदय 24:40।** पंचक समाप्त 25:40। **अपरा एकादशी व्रत (स्मार्त)।** गण्डमूल।
5:20	19:10	मेष	बुध पूर्व में अस्त 9:02। अपरा एकादशी व्रत(वैष्णव)। गण्डमूल 24:05 तक।
5:20	19:11	वृष में 28:14 से	भद्रा 22:02 से। भौम प्रदोष व्रत। मासशिवरात्रि व्रत।
5:20	19:11	वृष	भद्रा 8:59 तक।
5:20	19:12	वृष	**ज्येष्ठ (भावुका) अमावस्या। शनैश्चर-जयन्ती।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
7 जून से 22 जून 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
7	25	1	शुक्र	16:46	मृगशिरा	19:43	शूल	बव
8	26	2	शनि	15:56	आर्द्रा	19:43	गण्ड	कौलव
9	27	3	रवि	15:45	पुनर्वसु	20:21	वृद्धि	गर
10	28	4	सोम	16:16	पुष्य	21:40	ध्रुव	विष्टि
11	29	5	मंगल	17:28	आश्लेषा	23:39	व्याघात	बालव
12	30	6	बुध	19:17	मघा	26:12	हर्ष	कौलव
13	31	7	गुरु	21:34	पू.फाल्गुनी	29:09	वज्र	गर
14	1 आषाढ़	8	शुक्र	24:05	उ.फाल्गुनी	पूरादिन	सिद्धि	विष्टि
15	2	9	शनि	26:33	उ.फाल्गुनी	8:14	व्यतिपात	बालव
16	3	10	रवि	28:44	हस्त	11:13	वरीयान	तैतिल
17	4	11	सोम	पूरादिन	चित्रा	13:51	परिघ	वणिज्
18	5	11	मंगल	6:25	स्वाति	15:56	शिव	विष्टि
19	6	12	बुध	7:29	विशाखा	17:23	सिद्ध	बालव
20	7	13	गुरु	7:51	अनुराधा	18:10	साध्य	तैतिल
21	8	14	शुक्र	7:32	ज्येष्ठा	18:19	शुभ	वणिज्
22	9	15	शनि	6:38	मूल	17:54	शुक्ल	बव

सूर्य उत्तरायण – दक्षिणायन, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:20	19:12	मिथुन में	7:56 से। श्रीगङ्गा स्नान आरम्भ। करवीर व्रत।
5:20	19:12	मिथुन	रम्भा तृतीया व्रत (पूर्वविद्धा)।
5:20	19:13	कर्क में 14:07 से	भद्रा 28:01 से। महाराणा प्रताप जयन्ती। उमा अवतार।
5:20	19:13	कर्क	भद्रा 16:16 तक। गण्डमूल 21:40 से।
5:20	19:14	सिंह में	23:39 से। गण्डमूल विचार। स.सि.यो.।
5:20	19:14	सिंह	**शुक्र मिथुन में 18:29।** अरण्य षष्ठी। विन्ध्यवासिनी पूजा। गण्डमूल 26:12 तक।
5:20	19:14	सिंह	भद्रा 21:34 से।
5:20	19:15	कन्या में 11:55 से	भद्रा 10:50 तक। **सूर्य मिथुन में 24:27। आषाढ़ संक्रान्ति, मु.45, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 6:52 तक। बुध मिथुन में 23:05। श्रीदुर्गाष्टमी।** धूमावती जयन्ती। मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर)।
5:20	19:15	कन्या	
5:20	19:15	तुला में	24:35 से। **श्रीगङ्गा दशहरा पर्व।** स.सि.यो. 11:13 तक।
5:20	19:16	तुला	भद्रा 17:35 से।
5:20	19:16	तुला	भद्रा 6:25 तक। **निर्जला एकादशी व्रत।**
5:20	19:16	वृश्चिक में 11:05 से	**प्रदोष व्रत।** वट्सावित्री व्रत आरम्भ। चम्पक द्वादशी।
5:21	19:16	वृश्चिक	**सूर्य सायन कर्क में 26:21।** वर्षा ऋतु आरम्भ। गण्डमूल 180:10 से। सायन दक्षिणायन आरम्भ।
5:21	19:17	धनु में 18:19 से।	भद्रा 7:32 से 19:05 तक। **वट्सावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)। श्रीसत्यनारायण व्रत। सूर्य आर्द्रा में 24:06।** ज्येष्ठी योग। गण्डमूल।
5:21	19:17	धनु	**ज्येष्ठ पूर्णिमा।** सन्त कबीर जयन्ती। ग.मू 17:54 तक।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
23 जून से 5 जुलाई 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
-	-	1	शनि	29:14	-	-	-	-
23	10	2	रवि	27:27	पूर्वाषाढ़ा	17:04	ब्रह्म	तैतिल
24	11	3	सोम	25:24	उत्तराषाढ़ा	15:54	ऐन्द्र	वणिज्
25	12	4	मंगल	23:12	श्रवण	14:33	वैधृति	बव
26	13	5	बुध	20:56	धनिष्ठा	13:05	विष्क/प्रीति	कौलव
27	14	6	गुरु	18:40	शतभिषा	11:37	आयुष्मान्	गर
28	15	7	शुक्र	16:28	पू.भाद्रपदा	10:11	सौभाग्य	विष्टि
29	16	8	शनि	14:21	उ.भाद्रपदा	8:49	शोभन	कौलव
30	17	9	रवि	12:20	रेवती	7:34	अतिगण्ड	गर
1 जुलाई	18	10	सोम	10:27	अश्विनी भरणी	6:26 29:27	सुकर्मा	विष्टि
2	19	11	मंगल	8:43	कृत्तिका	28:40	धृति	बालव
3	20	12	बुध	7:11	रोहिणी	28:08	शूल	तैतिल
4	21	13	गुरु	5:55	मृगशिरा	27:55	गण्ड वृद्धि	वणिज्
-	-	14	गुरु	28:58	-	-	-	-
5	22	30	शुक्र	28:27	आर्द्रा	28:07	ध्रुव	चतुष्पाद्

सूर्य दक्षिणायण, वर्षा ऋतु
आषाढ़ कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
-	-	-	प्रतिपदा तिथि का क्षय।
5:21	19:17	मकर में	22:48 से।
5:22	19:17	मकर	भद्रा 14:26 से 25:24 तक।
5:22	19:17	कुम्भ में 25:49 से	पंचक आरम्भ 25:49। **अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 22:26। बुध पश्चिम में उदय 29:05।**
5:22	19:17	कुम्भ	
5:22	19:17	मीन में	28:32 से। भद्रा 18:40 से 29:34 तक।
5:23	19:18	मीन	
5:23	19:18	मीन	**बुध कर्क में 12:26। शनि वक्री 24:29।** गण्डमूल 8:49 से।
5:24	19:18	मेष में 7:34 से	भद्रा 23:34 से। पंचक समाप्त 7:34। गण्डमूल विचार।
5:24	19:18	मेष	भद्रा 10:27 तक। गण्डमूल 6:26 तक।
5:24	19:18	वृष में	11:14 से । **योगिनी एकादशी व्रत।** स.सि.यो.।
5:25	19:18	वृष	**प्रदोष व्रत।** स.सि.यो.।
5:25	19:17	मिथुन में 15:58 से	भद्रा 5:55 से 17:27 तक। मासशिवरात्रि व्रत।
-	-	-	चतुर्दशी तिथि का क्षय।
5:26	19:17	मिथुन	**आषाढ़ अमावस्या।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
6 जुलाई से 21 जुलाई 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
6	23	1	शनि	28:27	पुनर्वसु	28:48	व्याघात	किंस्तुघ्न
7	24	2	रवि	29:00	पुष्य	पूरादिन	हर्ष	बालव
8	25	3	सोम	पूरादिन	पुष्य	6:03	वज्र	तैतिल
9	26	3	मंगल	6:09	आश्लेषा	7:53	सिद्धि	गर
10	27	4	बुध	7:53	मघा	10:15	व्यतिपात	विष्टि
11	28	5	गुरु	10:04	पू.फाल्गुनी	13:04	वरीयान	बालव
12	29	6	शुक्र	12:33	उ.फाल्गुनी	16:09	परिघ	तैतिल
13	30	7	शनि	15:06	हस्त	19:15	शिव	वणिज्
14	31	8	रवि	17:27	चित्रा	22:07	शिव	बव
15	32	9	सोम	19:20	स्वाति	24:30	सिद्ध	बालव
16	1 श्रावण	10	मंगल	20:34	विशाखा	26:14	साध्य	तैतिल
17	2	11	बुध	21:03	अनुराधा	27:13	शुभ	वणिज्
18	3	12	गुरु	20:45	ज्येष्ठा	27:25	शुक्र/ब्रह्म	बव
19	4	13	शुक्र	19:42	मूल	26:55	ऐन्द्र	कौलव
20	5	14	शनि	18:00	पूर्वाषाढ़ा	25:49	वैधृति	गर
21	6	15	रवि	15:47	उत्तराषाढ़ा	24:14	विष्कुम्भ	बव

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु
आषाढ़ शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:26	19:17	कर्क में	22:35 से। **गुप्त नवरात्र आरम्भ। शुक्र कर्क में 28:31।**
5:26	19:17	कर्क	रथयात्रा उत्सव (श्रीजगन्नाथपुरी)। चन्द्रदर्शन मु.30। **शुक्र पश्चिम में उदय 7:02। रविपुष्य योग।**
5:27	19:17	कर्क	गण्डमूल 6:03 से।
5:27	19:17	सिंह में	7:53 से। भद्रा 19:01 से। गण्डमूल विचार।
5:28	19:17	सिंह	भद्रा 7:53 तक। गण्डमूल 10:15 तक। शुक्र बाल्यत्व समाप्त 7:02।
5:28	19:16	कन्या में	19:50 से। **स्कन्द (कुमार) षष्ठी** (पूर्वविद्धा)।
5:29	19:16	कन्या	**मंगल वृष में 18:58।** विवस्वत सप्तमी।
5:29	19:16	कन्या	भद्रा 15:06 से 28:17 तक।
5:30	19:15	तुला में	8:43 से।
5:31	19:15	तुला	भढ़ली नवमी। **गुप्त नवरात्र समाप्त।**
5:31	19:15	वृश्चिक में 19:52 से	**सूर्य कर्क में 11:19। श्रावण संक्रान्ति** मु.45, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से। निरयण दक्षिणायण आ.।
5:32	19:14	वृश्चिक	भद्रा 8:49 से 21:03 तक। **हरिशयनी एकादशी व्रत।** चातुर्मास्य व्रतनियमादि आरम्भ। श्रीविष्णु-शयनोत्सव।
5:32	19:14	धनु में	27:25। गण्डमूल विचार।
5:33	19:13	धनु	**प्रदोष व्रत। बुध मघा 1 सिंह में 20:46।** गण्डमूल 26:55 तक।
5:33	19:13	धनु	भद्रा 18:00 से 28:54 तक। श्रीसत्यनारायण व्रत। वायु-परीक्षा। श्रीसत्यनारायण व्रत। शिवशयनोत्सव। कोकिला व्रत।
5:34	19:13	मकर में	7:27 से। **आषाढ़ी पूर्णिमा। गुरु पूर्णिमा। व्यास पूजा।** सर्वार्थ सिद्धि योग।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
22 जुलाई से 4 अगस्त 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
22	7	1	सोम	13:12	श्रवण	22:21	प्रीति	कौलव
23	8	2	मंगल	10:24	धनिष्ठा	20:18	आयुष्मान्	गर
24	9	3	बुध	7:31	शतभिषा	18:15	सौभाग्य	विष्टि
-	-	4	बुध	28:40	-	-	-	-
25	10	5	गुरु	25:59	पू.भाद्रपदा	16:17	शोभ/अति	कौलव
26	11	6	शुक्र	23:31	उ.भाद्रपदा	14:30	सुकर्मा	गर
27	12	7	शनि	21:20	रेवती	13:00	धृति	विष्टि
28	13	8	रवि	19:28	अश्विनी	11:48	शूल	बालव
29	14	9	सोम	17:56	भरणी	10:55	गण्ड	तैतिल
30	15	10	मंगल	16:45	कृत्तिका	10:23	वृद्धि	विष्टि
31	16	11	बुध	15:56	रोहिणी	10:13	ध्रुव	बालव
1अ	17	12	गुरु	15:30	मृगशिरा	10:24	व्याघात	तैतिल
2	18	13	शुक्र	15:27	आर्द्रा	10:59	हर्ष	वणिज्
3	19	14	शनि	15:51	पुनर्वसु	11:59	वज्र	शकुनि
4	20	30	रवि	16:43	पुष्य	13:26	सिद्धि	नाग

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु
श्रावण कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:34	19:12	मकर	**श्रावण प्रथम सोमवार। नीलकण्ठ कांवड मेला यात्रा आरम्भ।** अशून्यशयन व्रत। स.सि.यो.।
5:35	19:12	कुम्भ में 9:21 से	भद्रा 20:58 से। पंचक आरम्भ 9:21। मंगलागौरी व्रत आरम्भ।
5:36	19:11	कुम्भ	भद्रा 7:31 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:35।**
-	-	-	चतुर्थी तिथि का क्षय।
5:36	19:10	मीन में	10:45 से।
5:37	19:10	मीन	भद्रा 23:31 से। गण्डमूल 14:30 से।
5:37	19:09	मेष में 13:00 से	भद्रा 10:26 तक। पंचक समाप्त 13:00। शीतला सप्तमी। गण्डमूल विचार।
5:38	19:09	मेष	गण्डमूल 11:48 तक। सर्वार्थ सिद्धि योग।
5:38	19:08	वृष में 16:45 से	भद्रा 29:21 से। **श्रावण द्वितीय सोमवार।**
5:39	19:07	वृष	भद्रा 16:45 तक। सर्वार्थ सिद्धि योग।
5:40	19:07	मिथुन में 22:16 से	**कामिका एकादशी व्रत। शुक्र मघा 1 सिंह में 14:33।** सर्वार्थ सिद्धि योग।
5:40	19:06	मिथुन	**प्रदोष व्रत।** लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव।
5:41	19:05	कर्क में 29:42 से	भद्रा 15:27 से 27:39 तक। श्रावण शिवरात्रि व्रत।
5:41	19:04	कर्क	
5:42	19:04	कर्क	**श्रावण (हरियाली) अमावस्या।** गण्डमूल 13:26 से। रविपुष्य योग 13:26 तक।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
5 अगस्त से 19 अगस्त 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
5	21	1	सोम	18:04	आश्लेषा	15:22	व्यतिपात	बव
6	22	2	मंगल	19:53	मघा	17:44	वरीयान	बालव
7	23	3	बुध	22:06	पू.फाल्गुनी	20:31	परिघ	तैतिल
8	24	4	गुरु	24:37	उ.फाल्गुनी	23:34	शिव	वणिज्
9	25	5	शुक्र	27:15	हस्त	26:45	सिद्ध	बव
10	26	6	शनि	29:46	चित्रा	29:49	साध्य	कौलव
11	27	7	रवि	पूरादिन	स्वाति	पूरादिन	शुभ	गर
12	28	7	सोम	7:56	स्वाति	8:33	शुक्ल	वणिज्
13	29	8	मंगल	9:32	विशाखा	10:44	ब्रह्म	बव
14	30	9	बुध	10:24	अनुराधा	12:13	ऐन्द्र	कौलव
15	31	10	गुरु	10:27	ज्येष्ठा	12:53	वैधृति	गर
16	1 भाद्रपद	11	शुक्र	9:40	मूल	12:44	विष्कुम्भ	विष्टि
17	2	12	शनि	8:06	पूर्वाषाढ़ा	11:49	प्रीति	बालव
-	-	13	शनि	29:52	-	-	-	-
18	3	14	रवि	27:05	उत्तराषाढ़ा	10:15	आयु/सौभा	गर
19	4	15	सोम	23:56	श्रवण धनिष्ठा	8:10 29:45	शोभन	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु
श्रावण शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:43	19:03	सिंह में 15:22 से	मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) आरम्भ। **बुध वक्री 10:26। श्रावण तृतीय सोमवार।**
5:43	19:02	सिंह	चन्द्रदर्शन मु.30। गण्डमूल 17:44 तक।
5:44	19:01	कन्या में	27:15 से। मधुस्त्रवा हरियाली सिंघारा तीज। स्वर्णगौरी व्रत।
5:44	19:00	कन्या	भद्रा 11:22 से 24:37 तक। **वरद् चतुर्थी। दूर्वा गणपति व्रत।**
5:45	18:59	कन्या	**नाग-पंचमी।**
5:46	18:58	तुला में	16:18 से। श्रीकल्कि जयन्ती।
5:46	18:58	तुला	**गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती। शीतला सप्तमी।**
5:47	18:57	वृश्चिक में 28:15 से	भद्रा 7:56 से 20:44। **वक्री बुध पश्चिम में अस्त 6:12। श्रावण चतुर्थ सोमवार।**
5:47	18:56	वृश्चिक	श्रीदुर्गाष्टमी। मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी समाप्त।
5:48	18:55	वृश्चिक	गण्डमूल 12:13 से। स.सि.यो. 12:13 तक।
5:48	18:54	धनु में 12:53 से	भद्रा 22:04 से। **भारतीय 78वाँ स्वतन्त्रता दिवस।** गण्डमूल।
5:49	18:53	धनु	भद्रा 9:40 तक। **पवित्रा एकादशी व्रत। सूर्य मघा 1 सिंह में 19:44। भाद्रपद संक्रान्ति मु.30, पुयकाल सं. मध्याह्न बाद।** गण्डमूल 12:44 तक।
5:50	18:52	मकर में	17:29 से। **प्रदोष व्रत।**
-	-	-	त्रयोदशी तिथि का क्षय।
5:50	18:51	मकर	भद्रा 27:05 से।
5:51	18:50	कुम्भ में 19:00 से	भद्रा 13:31 तक। पंचक आरम्भ 19:00। **रक्षाबन्धन (भद्रा बाद)।** श्रीसत्यनारायण व्रत। यजुर्वेदि-अथर्ववेदि-श्रावणी उपाकर्म। ऋषि तर्पण (अपराह्न-काले)। कोकिला व्रत पूर्ण। **दर्शन श्री अमरनाथ गुफा समाप्त। संस्कृत दिवस।** श्री गायत्री जयन्ती। हयग्रीव जयन्ती। **श्रावण पंचम सोमवार।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
20 अगस्त से 3 सितम्बर 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
20	5	1	मंगल	20:33	शतभिषा	27:10	अतिगण्ड	बालव
21	6	2	बुध	17:07	पू.भाद्रपदा	24:34	सुकर्मा	तैतिल
22	7	3	गुरु	13:47	उ.भाद्रपदा	22:06	धृति	विष्टि
23	8	4	शुक्र	10:39	रेवती	19:54	शूल	बालव
24	9	5	शनि	7:52	अश्विनी	18:06	गंड/वृद्धि	तैतिल
-	-	6	शनि	29:31	-	-	-	-
25	10	7	रवि	27:40	भरणी	16:45	ध्रुव	विष्टि
26	11	8	सोम	26:20	कृत्तिका	15:55	व्याघात	बालव
27	12	9	मंगल	25:34	रोहिणी	15:38	हर्ष	तैतिल
28	13	10	बुध	25:20	मृगशिरा	15:53	वज्र	वणिज्
29	14	11	गुरु	25:38	आर्द्रा	16:40	सिद्धि	बव
30	15	12	शुक्र	26:26	पुनर्वसु	17:56	व्यतिपात	कौलव
31	16	13	शनि	27:41	पुष्य	19:40	वरीयान	गर
1 सितं	17	14	रवि	29:22	आश्लेषा	21:49	परिघ	विष्टि
2	18	30	सोम	पूरादिन	मघा	24:20	शिव	चतुष्पाद्
3	19	30	मंगल	7:26	पू.फाल्गुनी	27:11	सिद्ध	नाग

सूर्य दक्षिणायन, वर्षा – शरद् ऋतु
भाद्रपद कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
5:51	18:49	कुम्भ	गायत्री जपम्।
5:52	18:48	मीन में	19:12 से। भद्रा 27:27 से। कज्जली तीज (चं.व्या.)।
5:52	18:47	मीन	भद्रा 13:47 तक। **श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 20:39। वक्री बुध कर्क में 6:38।**
5:53	18:45	मेष में	19:54 से। पंचक समाप्त 19:54। गण्डमूल विचार।
5:54	18:44	मेष	भद्रा 29:31 से। चन्दन षष्ठी व्रत। **शुक्र कन्या में 25:16।** हल-षष्ठी। गण्डमूल 18:06 तक।
-	-	-	षष्ठी तिथि का क्षय।
5:54	18:43	वृष में	22:30 से। भद्रा 16:36 तक। शीतला सप्तमी।
5:55	18:42	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत। मंगल मिथुन में 15:25। वक्री बुध पूर्व में उदय 18:58। श्रीदूर्वाष्टमी।**
5:55	18:41	मिथुन में	27:42 से। श्री गुग्गा नवमी। **गोकुलाष्टमी। नन्दोत्सव।**
5:56	18:40	मिथुन	भद्रा 13:27 से 25:20 तक। **बुध मार्गी 26:42।** स.सि.यो. 15:53 तक।
5:56	18:39	मिथुन	**अजा एकादशी व्रत।**
5:57	18:38	कर्क में	11:34 से। **वत्स द्वादशी (पूजा)।**
5:57	18:36	कर्क	भद्रा 27:41 से। शनि प्रदोष व्रत। कैलास यात्रा आरम्भ। गण्डमूल 19:40 से।
5:58	18:35	सिंह में 21:49 से	मासशिवरात्रि व्रत। गण्डमूल विचार। अघोरी चतुर्दशी।
5:58	18:34	सिंह	**सोमवती अमावस्या। कुशाग्रहणी अमावस्या "ॐ हुं फट् स्वाहा" से कुशोत्पाटनम्। पिठोरी अमावस्या।** गण्डमूल 24:20 तक।
5:59	18:33	सिंह	**भौमवती अमावस्या। भाद्रपद अमावस्या।** स्नानदानादि प्रातः 7:26 तक।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
4 सितम्बर से 18 सितम्बर 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
4	20	1	बुध	9:47	उ.फाल्गुनी	पूरादिन	साध्य	बव
5	21	2	गुरु	12:22	उ.फाल्गुनी	6:15	शुभ	कौलव
6	22	3	शुक्र	15:02	हस्त	9:25	शुक्ल	गर
7	23	4	शनि	17:38	चित्रा	12:34	ब्रह्म	विष्टि
8	24	5	रवि	19:59	स्वाति	15:31	ऐन्द्र	बव
9	25	6	सोम	21:54	विशाखा	18:04	वैधृति	कौलव
10	26	7	मंगल	23:13	अनुराधा	20:04	विष्कुम्भ	गर
11	27	8	बुध	23:47	ज्येष्ठा	21:22	प्रीति	विष्टि
12	28	9	गुरु	23:33	मूल	21:53	आयुष्मान्	बालव
13	29	10	शुक्र	22:31	पूर्वाषाढ़ा	21:36	सौभाग्य	तैतिल
14	30	11	शनि	20:42	उत्तराषाढ़ा	20:33	शोभन	वणिज्
15	31	12	रवि	18:13	श्रवण	18:49	अतिगण्ड	बव
16	1 आश्वि	13	सोम	15:11	धनिष्ठा	16:33	सुकर्मा	तैतिल
17	2	14	मंगल	11:45	शतभिषा	13:53	धृति/शूल	वणिज्
18	3	15	बुध	8:05	पू.भाद्रपदा	11:00	गण्ड	बव

सूर्य दक्षिणायन, शरद् ऋतु
भाद्रपद शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:00	18:32	कन्या में 9:56 से	**बुध मघा 1 सिंह में 11:22।** चन्द्रदर्शन मु.45। **अगस्त्य उदय।**
6:00	18:30	कन्या	सामवेदि उपाकर्म।
6:01	18:29	तुला में 23:01 से	भद्रा 28:20 से। हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया। श्रीवराह जयन्ती। **कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषेध)। चन्द्रास्त 20:15। पत्थर चौथ।**
6:01	18:28	तुला	भद्रा 17:38 तक। **सिद्धि विनायक व्रत।**
6:02	18:27	तुला	**ऋषि-पंचमी।** सम्वत्सरी महापर्व।
6:02	18:26	वृश्चिक में	11:29 से। **सूर्य षष्ठी व्रत।**
6:03	18:24	वृश्चिक	भद्रा 23:13 से। मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत। गण्डमूल 20:04 से।
6:03	18:23	धनु में 21:22 से	भद्रा 11:30 तक। श्रीमहालक्ष्मी व्रत आरम्भ। **श्रीराधाष्टमी। दधीची जयन्ती।**
6:04	18:22	धनु	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन-सम्प्र.)। ग.मू.21:53 तक।
6:04	18:21	मकर में	27:24 से।
6:05	18:19	मकर	भद्रा 9:37 से 20:42 तक। विष्णु शृखंल योग 20:33 से। **पद्मा एकादशी व्रत।**
6:05	18:18	कुम्भ में 29:45 से	पंचक आरम्भ 29:45 से। प्रदोष व्रत। **श्रीवामन-जयन्ती।** श्रवण द्वादशी। विष्णु शृखंल योग 18:13 तक।
6:06	18:17	कुम्भ	**सूर्य कन्या में 19:43। आश्विन संक्रान्ति**, मु.15। **पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद।**
6:06	18:16	मीन में 29:44 से	भद्रा 11:45 से 21:55 तक। **अनन्त चतुर्दशी व्रत।** कदली व्रत-पूजन। श्रीसत्यनारायण व्रत। विश्वकर्मा पूजा। **प्रोष्ठपदी महालय श्राद्ध आरम्भ। पूर्णिमा का श्राद्ध।**
6:07	18:14	मीन	**भाद्रपद पूर्णिमा (स्नानदानादि)। शुक्र तुला में 13:56। प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
19 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
-	-	1	बुध	28:20	-	-	-	-
19	4	2	गुरु	24:40	उ.भाद्रपदा रेवती	8:04 29:15	वृद्धि	तैतिल
20	5	3	शुक्र	21:16	अश्विनी	26:43	ध्रुव	वणिज्
21	6	4	शनि	18:14	भरणी	24:36	व्याघात	बव
22	7	5	रवि	15:44	कृत्तिका	23:03	हर्ष/वज्र	तैतिल
23	8	6	सोम	13:51	रोहिणी	22:08	सिद्धि	वणिज्
24	9	7	मंगल	12:39	मृगशिरा	21:54	व्यतिपात	बव
25	10	8	बुध	12:11	आर्द्रा	22:24	वरीयान	कौलव
26	11	9	गुरु	12:26	पुनर्वसु	23:34	परिघ	गर
27	12	10	शुक्र	13:21	पुष्य	25:21	शिव	विष्टि
28	13	11	शनि	14:50	आश्लेषा	27:38	सिद्ध	बालव
29	14	12	रवि	16:48	मघा	30:19	साध्य	तैतिल
30	15	13	सोम	19:07	पू.फाल्गुनी	पूरादिन	शुभ	वणिज्
1 अक्टू.	16	14	मंगल	21:40	पू.फाल्गुनी	9:16	शुक्ल	विष्टि
2	17	30	बुध	24:19	उ.फाल्गुनी	12:23	ब्रह्म	चतुष्पाद्

सूर्य दक्षिणायन, शरद् ऋतु
आश्विन कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
-	-	-	प्रतिपदा तिथि का क्षय।
6:08	18:13	मेष में 29:15 से	पंचक समाप्त 29:15। द्वितीया तिथि का श्राद्ध। गण्डमूल 8:04 से।
6:08	18:12	मेष	भद्रा 10:58 से 21:16 तक। तृतीया तिथि का श्राद्ध। गण्डमूल 26:43 तक।
6:09	18:11	मेष	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 20:23।** चतुर्थी का श्राद्ध।
6:09	18:09	वृष में	6:09 से। चन्द्र षष्ठी व्रत। पंचमी का श्राद्ध।
6:10	18:08	वृष	भद्रा 13:51 से 25:15 तक। षष्ठी तथा सप्तमी का श्राद्ध। बुध कन्या में 10:10।
6:10	18:07	मिथुन में	9:56 से। श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न। अष्टमी का श्राद्ध।
6:11	18:06	मिथुन	नवमी का श्राद्ध। मातृ नवमी। सौभाग्यवतीनां श्राद्ध। **जीवित्पुत्रिका व्रत।**
6:11	18:04	कर्क में	17:13 से। भद्रा 24:53 से। दशमी का श्राद्ध।
6:12	18:03	कर्क	भद्रा 13:21 तक। एकादशी का श्राद्ध। गण्डमूल 25:21 बाद।
6:12	18:02	सिंह में	27:38 से। **इन्दिरा एकादशी व्रत।** गण्डमूल।
6:13	18:01	सिंह	संन्यासिनां श्राद्ध। द्वादशी का श्राद्ध। गण्डमूल 30:19 तक। मघा श्राद्ध।
6:14	17:59	सिंह	भद्रा 19:07 से। **सोम प्रदोष व्रत।** मासशिवरात्रि व्रत। त्रयोदशी का श्राद्ध।
6:14	17:58	कन्या में 16:02 से	भद्रा 8:02 तक। शस्त्र-विष-दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध।
6:15	17:57	कन्या	**आश्विन /महालय अमावस्या।** सर्वपितृ श्राद्ध। चतुर्दशी/अमावस्या का श्राद्ध। श्राद्ध समाप्त। अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध। पितृ विसर्जन। **महात्मा गाँधी जयन्ती।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
3 अक्टूबर से 17 अक्टूबर 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
3	18	1	गुरु	26:59	हस्त	15:32	ऐन्द्र	किंस्तुघ्न
4	19	2	शुक्र	29:31	चित्रा	18:38	वैधृति	बालव
5	20	3	शनि	पूरादिन	स्वाति	21:33	विष्कुम्भ	तैतिल
6	21	3	रवि	7:50	विशाखा	24:11	प्रीति	गर
7	22	4	सोम	9:48	अनुराधा	26:25	प्रीति	विष्टि
8	23	5	मंगल	11:19	ज्येष्ठा	28:08	आयुष्मान्	बालव
9	24	6	बुध	12:15	मूल	29:15	सौभ/शोभ	तैतिल
10	25	7	गुरु	12:32	पूर्वाषाढ़ा	29:41	अतिगण्ड	वणिज्
11	26	8	शुक्र	12:07	उत्तराषाढ़ा	29:25	सुकर्मा	बव
12	27	9	शनि	10:59	श्रवण	28:28	धृति	कौलव
13	28	10	रवि	9:09	धनिष्ठा	26:52	शूल	गर
14	29	11	सोम	6:42	शतभिषा	24:43	गण्ड	विष्टि
-	-	12	सोम	27:43	-	-	-	-
15	30	13	मंगल	24:20	पू.भाद्रपदा	22:09	वृद्धि	कौलव
16	31	14	बुध	20:41	उ.भाद्रपदा	19:18	ध्रुव/व्या	गर
17	1 कार्ति.	15	गुरु	16:56	रेवती	16:20	हर्ष	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन, शरद् ऋतु
आश्विन शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:15	17:56	तुला में 29:06 से	**शरद् नवरात्रे आरम्भ, घटस्थापन प्रातः 6:17 से 7:25 तक। अभिजित मुहूर्त 11:48 से 12:35 तक।** महाराजा अग्रसेन जयन्ती। मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध।
6:16	17:55	तुला	चन्द्रदर्शन।
6:16	17:53	तुला	स.सि.यो.।
6:17	17:52	वृश्चिक में	17:34 से। भद्रा 20:49 से।
6:18	17:51	वृश्चिक	भद्रा 9:48 तक। उपाङ्ग ललिता व्रत। गण्डमूल 26:25 से। स.सि.यो.।
6:18	17:50	धनु में	28:08 से। गण्डमूल विचार।
6:19	17:49	धनु	सरस्वती आवा, गुरु वक्री 12:30। ग.मू. 29:15 तक।
6:20	17:48	धनु	भद्रा 12:32 से 24:20 तक। सरस्वती पूजन भद्रकाली अवतार।
6:20	17:46	मकर में 11:41 से	**श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी, **महानवमी** (व्रत व पूजा हेतु)। सरस्वती बलिदान (उ.षाभे)।
6:21	17:45	मकर	**महानवमी** (बलिदान व होम)। **नवरात्र समाप्त। विजयादशमी (दशहरा)।** सरस्वती विसर्जन। सीमोल्लंघन। अपराजिता शस्त्रादि पूजन। **शुक्र वृश्चिक में 30:00। प्लुटो मार्गी 5:57।**
6:21	17:44	कुम्भ में 15:44 से	भद्रा 19:56 से। पंचक आरम्भ 15:44। **पापांकुशा एकादशी व्रत (स्मार्त)।** नवरात्र व्रत पारणा। भरत-मिलाप। श्रीमाधवाचार्य जयन्ती।
6:22	17:43	कुम्भ	भद्रा 6:42 तक। पापांकुशा एकादशी व्रत (वैष्णव)।
-	-	-	द्वादशी तिथि का क्षय।
6:23	17:42	मीन में	16:49 से। **भौम प्रदोष व्रत।**
6:23	17:41	मीन	भद्रा 20:41 से। **शरद् पूर्णिमा व्रत।** कोजागर व्रत।
6:24	17:40	मेष में 16:20 से	भद्रा 6:49 तक। **आश्विन पूर्णिमा।** पंचक समाप्त 16:20। महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती। श्रीसत्यनारायण व्रत। **सूर्य तुला में 7:42। कार्तिक संक्रान्ति मु.30। पुण्यकाल सं. दोप. 13:06 तक।** कार्तिक स्नान-नियम आरम्भ।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
18 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
18	2	1	शुक्र	13:16	अश्विनी	13:26	वज्र	कौलव
19	3	2	शनि	9:49	भरणी	10:47	सिद्धि	गर
20	4	3	रवि	6:47	कृत्तिका	8:32	व्यतिपात	विष्टि
-	-	4	रवि	28:18	-	-	-	-
21	5	5	सोम	26:30	रोहिणी मृगशिरा	6:51 29:51	वरीयान	कौलव
22	6	6	मंगल	25:30	आर्द्रा	29:39	परिघ	गर
23	7	7	बुध	25:19	पुनर्वसु	30:16	शिव/सिद्ध	विष्टि
24	8	8	गुरु	25:59	पुष्य	पूरादिन	साध्य	बालव
25	9	9	शुक्र	27:23	पुष्य	7:40	शुभ	तैतिल
26	10	10	शनि	29:24	आश्लेषा	9:46	शुक्ल	वणिज्
27	11	11	रवि	पूरादिन	मघा	12:24	ब्रह्म	बव
28	12	11	सोम	7:51	पू.फाल्गुनी	15:24	ब्रह्म	बालव
29	13	12	मंगल	10:32	उ.फाल्गुनी	18:34	ऐन्द्र	तैतिल
30	14	13	बुध	13:16	हस्त	21:44	वैधृति	वणिज्
31	15	14	गुरु	15:53	चित्रा	24:45	विष्कुम्भ	शकुनि
1 नवंबर	16	30	शुक्र	18:17	स्वाति	27:31	प्रीति	नाग

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु
कार्तिक कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:25	17:39	मेष	गण्डमूल 13:26 तक।
6:25	17:38	वृष में	16:10 से। भद्रा 20:18 से।
6:26	17:37	वृष	भद्रा 6:47 तक। **व्रत करवा चौथ (करक चतुर्थी)। चन्द्रोदय 19:47। श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। मंगल कर्क में 14:22। बुध पश्चिम में उदय 28:12।**
-	-	-	चतुर्थी तिथि का क्षय।
6:27	17:36	मिथुन में 18:15 से	सर्वार्थ सिद्धि योग।
6:27	17:35	मिथुन	भद्रा 25:30 से। स्कन्द षष्ठी व्रत। हेमन्त ऋतु आरम्भ।
6:28	17:34	कर्क में	24:02 से। भद्रा 13:25 तक। शक कार्तिक आ.।
6:29	17:33	कर्क	अहोई अष्टमी व्रत। गुरु पुष्य योग। कालाष्टमी।
6:30	17:32	कर्क	गण्डमूल 7:40 से।
6:30	17:31	सिंह में	9:46 से। भद्रा 16:24 से 29:24 तक।
6:31	17:30	सिंह	कौमुदि महोत्सव आरम्भ। गण्डमूल 12:24 तक।
6:32	17:29	कन्या में 22:11 से	**रमा एकादशी व्रत।** गोवत्स द्वादशी। मंगल पुष्य में 15:57।
6:33	17:28	कन्या	**भौम प्रदोष व्रत। धन-त्रयोदशी। बुध वृश्चिक में 22:39।** धन्वन्तरी जयन्ती। यम प्रीत्यर्थ दीपदान।
6:33	17:27	कन्या	भद्रा 13:16 से 26:35 तक। **श्रीहनुमान जयन्ती।** (उ.भारत) अर्धरात्रि व्यापिनी। यमाय तर्पण। मासशिवरात्रि व्रत।
6:34	17:27	तुला में 11:16 से	**नरक चतुर्दशी** (पूर्व अरुणोदय वाली)। प्रभात स्नान। तैलाभ्यंग। रूप चौदश। काली-पूजा।
6:35	17:26	तुला	**कार्तिक अमावस्या** (देव-पितृकार्येषु अमावस्या)। **दीपावली। श्रीमहालक्ष्मी पूजन।** कुबेर पूजा-**मूहुर्त सायं 5:26 से 7:50। (देखें पृ.121-122)।** दीपदान देवालये। कौमुदि महोत्सव सम्पन्न। श्रीमहावीर निर्वाण।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
2 नवम्बर से 15 नवम्बर 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
2	17	1	शनि	20:22	विशाखा	29:58	आयुष्मान्	किंस्तुघ्न
3	18	2	रवि	22:06	अनुराधा	पूरादिन	सौभाग्य	बालव
4	19	3	सोम	23:25	अनुराधा	8:04	शोभन	तैतिल
5	20	4	मंगल	24:17	ज्येष्ठा	9:45	अतिगण्ड	वणिज्
6	21	5	बुध	24:42	मूल	11:00	सुकर्मा	बव
7	22	6	गुरु	24:35	पूर्वाषाढ़ा	11:47	धृति	कौलव
8	23	7	शुक्र	23:57	उत्तराषाढ़ा	12:03	शूल/गंड	गर
9	24	8	शनि	22:46	श्रवण	11:48	वृद्धि	विष्टि
10	25	9	रवि	21:02	धनिष्ठा	11:00	ध्रुव	बालव
11	26	10	सोम	18:47	शतभिषा	9:40	व्याघात	तैतिल
12	27	11	मंगल	16:05	पू.भाद्रपदा उ.भाद्रपदा	7:52 29:40	हर्ष	विष्टि
13	28	12	बुध	13:02	रेवती	27:11	वज्र	बालव
14	29	13	गुरु	9:44	अश्विनी	24:33	सिद्धि	तैतिल
-	-	14	गुरु	30:20	-	-	-	-
15	30	15	शुक्र	26:59	भरणी	21:55	व्य/वरी	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु
कार्तिक शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:36	17:25	वृश्चिक में 23:24 से	अन्नकूट। **गोवर्धन पूजा।** गोक्रीडा। बलिपूजा।
6:36	17:24	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु.30। **भातृ (भाई) दूज। यमद्वितीया।** विश्वकर्मा पूजन। यमुना-स्नान। कलम-दवात पूजन।
6:37	17:23	वृश्चिक	गण्डमूल 8:04 से।
6:38	17:23	धनु में 9:45 से	भद्रा 11:51 से 24:17 तक। दूर्वा गणपति व्रत। गण्डमूल विचार।
6:39	17:22	धनु	**शुक्र मूल 1 धनु में 27:31।** सौभाग्य-पंचमी। जया-पंचमी। ज्ञान-पंचमी। गण्डमूल 11:00 तक।
6:40	17:21	मकर में	17:54 से। **सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)।**
6:40	17:21	मकर	भद्रा 23:57 से।
6:41	17:20	कुम्भ में 23:28 से	भद्रा 11:22 तक। पंचक आरम्भ 23:28। **गोपाष्टमी।**
6:42	17:19	कुम्भ	**अक्षय-कूष्माण्ड नवमी।** आरोग्य व्रत। आमला-नवमी।
6:43	17:19	मीन में	26:22 से। भद्रा 29:26 से। भीष्मपंचक आरम्भ।
6:44	17:18	मीन	भद्रा 16:05 तक। **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत।** तुलसी विवाह। चातुर्मास्य-व्रत-नियम-समाप्त।
6:44	17:18	मेष में 27:11 से	पंचक समाप्त 27:11। **प्रदोष व्रत।** गण्डमूल 5:40 से। हरिप्रबोधोत्सव।
6:45	17:17	मेष	भद्रा 30:20 से। वैकुण्ठ चतुर्दशी। नेहरू-जयन्ती (बाल-दिवस)। गण्डमूल 24:33 तक।
-	-	-	चतुर्दशी तिथि का क्षय।
6:46	17:17	वृष में 27:17 से	भद्रा 16:40 तक। **कार्तिक पूर्णिमा। श्रीगुरु नानक जयन्ती।** भीष्मपंचक समाप्त। कार्तिक स्नान समाप्त। शनि मार्गी 19:53। आकाश दीपदान समाप्त। कार्तिक व्रतोद्यापन। श्रीसत्यनारायण व्रत। त्रिपुरोत्सव। पद्मक योग (21:55 से 26:59 तक)।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
16 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
16	1 मार्ग	1	शनि	23:51	कृत्तिका	19:28	परिघ	बालव
17	2	2	रवि	21:07	रोहिणी	17:23	शिव	तैतिल
18	3	3	सोम	18:57	मृगशिरा	15:49	सिद्ध	वणिज्
19	4	4	मंगल	17:29	आर्द्रा	14:56	साध्य	बालव
20	5	5	बुध	16:50	पुनर्वसु	14:51	शुभ	तैतिल
21	6	6	गुरु	17:04	पुष्य	15:36	शुक्ल	वणिज्
22	7	7	शुक्र	18:08	आश्लेषा	17:10	ब्रह्म	बव
23	8	8	शनि	19:58	मघा	19:27	ऐन्द्र	कौलव
24	9	9	रवि	22:20	पू.फाल्गुनी	22:17	वैधृति	तैतिल
25	10	10	सोम	25:02	उ.फाल्गुनी	25:24	विष्कुम्भ	वणिज्
26	11	11	मंगल	27:48	हस्त	28:35	प्रीति	बव
27	12	12	बुध	30:24	चित्रा	पूरादिन	आयुष्मान्	कौलव
28	13	13	गुरु	पूरादिन	चित्रा	7:36	सौभाग्य	गर
29	14	13	शुक्र	8:40	स्वाति	10:18	शोभन	वणिज्
30	15	14	शनि	10:30	विशाखा	12:35	अतिगण्ड	शकुनि
1 दिसंबर	16	30	रवि	11:51	अनुराधा	14:24	सुकर्मा	नाग

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:47	17:16	वृष	**सूर्य वृश्चिक में 7:32। मार्गशीर्ष संक्रान्ति, मु.30, पुण्यकाल सं. दोप.13:56 तक।** मृगछोड़ी स्नान आ.। शनि मार्गी 7:35।
6:48	17:16	मिथुन में	28:31 से।
6:49	17:15	मिथुन	भद्रा 8:02 से 18:57 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 19:26।** सौभाग्य सुन्दरी व्रत।
6:49	17:15	मिथुन	सूर्य अनुराधा में 14:53।
6:50	17:15	कर्क में	8:47 से।
6:51	17:14	कर्क	भद्रा 17:04 से 29:36 तक। गण्डमूल 15:36 से। **गुरुपुष्य योग।**
6:52	17:14	सिंह में	17:10 से। गण्डमूल विचार।
6:53	17:14	सिंह	**श्रीकालभैरवाष्टमी।** भैरव-जयन्ती। गण्डमूल 19:27 तक।
6:54	17:13	कन्या में	29:02 से।
6:54	17:13	कन्या	भद्रा 11:41 से 25:02 तक।
6:55	17:13	कन्या	**उत्पन्ना एकादशी व्रत। बुध वक्री 8:12।**
6:56	17:13	तुला में	18:07 से।
6:57	17:13	तुला	**प्रदोष व्रत।** बुध पश्चिम में अस्त।
6:58	17:13	वृश्चिक में 30:03 से	भद्रा 8:40 से 21:35 तक। मास शिवरात्रि व्रत। श्रीबालाजी जयन्ती।
6:59	17:12	वृश्चिक	**पितृकार्येषु अमावस्या।** मेला पुरमण्डल (जम्मू)। देविका-स्नान (ऊधमपुर-जम्मू काश्मीर)।
6:59	17:12	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष अमावस्या (स्नानदानादि)।** गण्डमूल 14:24 बाद।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
2 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
2	17	1	सोम	12:44	ज्येष्ठा	15:46	धृति	बव
3	18	2	मंगल	13:10	मूल	16:42	शूल	कौलव
4	19	3	बुध	13:11	पूर्वाषाढ़ा	17:15	गण्ड	गर
5	20	4	गुरु	12:50	उत्तराषाढ़ा	17:27	वृद्धि	विष्टि
6	21	5	शुक्र	12:08	श्रवण	17:19	ध्रुव	बालव
7	22	6	शनि	11:07	धनिष्ठा	16:51	व्याघात हर्ष	तैतिल
8	23	7	रवि	9:45	शतभिषा	16:03	वज्र	वणिज्
9	24	8	सोम	8:03	पू.भाद्रपदा	14:56	सिद्धि	बव
-	-	9	सोम	30:02	-	-	-	-
10	25	10	मंगल	27:43	उ.भाद्रपदा	13:30	व्यतिपात	तैतिल
11	26	11	बुध	25:10	रेवती	11:48	वरीयान	वणिज्
12	27	12	गुरु	22:27	अश्विनी	9:53	परिघ	बव
13	28	13	शुक्र	19:41	भरणी कृत्तिका	7:50 29:48	शिव	कौलव
14	29	14	शनि	16:59	रोहिणी	27:55	सिद्ध साध्य	वणिज्
15	1 पौष	15	रवि	14:32	मृगशिरा	26:20	शुभ	बव

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:00	17:12	धनु में	15:46 से। शुक्र मकर में 11:57। ग.मू विचार।
7:01	17:12	धनु	चन्द्रदर्शन मु.30। गण्डमूल 16:42 तक।
7:02	17:12	मकर में	23:20 से। भद्रा 25:01 से।
7:02	17:13	मकर	भद्रा 12:50 तक। विनायक व्रत।
7:03	17:13	कुम्भ में 29:07 से	पंचक आरम्भ 29:07 से। श्रीपंचमी। श्रीराम-विवाहोत्सव। नाग-पंचमी। स्कन्द षष्ठी।
7:04	17:13	कुम्भ	**मंगल वक्री 5:01।** चम्पा षष्ठी (महाराष्ट्र)। मित्र सप्तमी (षष्ठीविद्धा)।
7:05	17:13	कुम्भ	भद्रा 9:45 से 20:54 तक। श्रीदुर्गाष्टमी। बुध वक्री।
7:05	17:13	मीन में	9:15 से।
-	-	-	नवमी तिथि का क्षय।
7:06	17:13	मीन	गण्डमूल 13:30 बाद। स.सि.यो. 13:30 तक। बुध पूर्व में उदय 23:38।
7:07	17:14	मेष में 11:48 से	भद्रा 14:27 से 25:10 तक। पंचक समाप्त 11:48। **मोक्षदा एकादशी व्रत। श्रीगीता जयन्ती।**
7:08	17:14	मेष	अखण्ड द्वादशी। गण्डमूल 9:53 तक। स.सि.यो.।
7:08	17:14	वृष में 13:19 से	**प्रदोष व्रत।** शिव चतुर्दशी व्रत।
7:09	17:14	वृष	भद्रा 16:59 से 27:46 तक। पिशाचमोचन श्राद्ध। **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती।** श्रीसत्यनारायण व्रत। त्रिपुरभैरव-जयन्ती। अन्नपूर्णा जयन्ती।
7:09	17:15	मिथुन में 15:04 से	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा। सूर्य मूल 1 धनु में 22:10। पौष संक्रान्ति मु.30, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद। बुध मार्गी 26:26।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
16 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2024 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
16	2	1	सोम	12:28	आर्द्रा	25:14	शुक्ल	कौलव
17	3	2	मंगल	10:57	पुनर्वसु	24:44	ब्रह्म	गर
18	4	3	बुध	10:07	पुष्य	24:59	ऐन्द्र	विष्टि
19	5	4	गुरु	10:03	आश्लेषा	26:00	वैधृति	बालव
20	6	5	शुक्र	10:49	मघा	27:47	विष्कुम्भ	तैतिल
21	7	6	शनि	12:22	पू.फाल्गुनी	30:14	प्रीति	वणिज्
22	8	7	रवि	14:32	उ.फाल्गुनी	पूरादिन	आयुष्मान्	बव
23	9	8	सोम	17:08	उ.फाल्गुनी	9:09	सौभाग्य	कौलव
24	10	9	मंगल	19:53	हस्त	12:17	शोभन	गर
25	11	10	बुध	22:30	चित्रा	15:22	अतिगण्ड	वणिज्
26	12	11	गुरु	24:44	स्वाति	18:10	सुकर्मा	बव
27	13	12	शुक्र	26:27	विशाखा	20:29	धृति	कौलव
28	14	13	शनि	27:33	अनुराधा	22:13	शूल	गर
29	15	14	रवि	28:02	ज्येष्ठा	23:22	गण्ड	विष्टि
30	16	30	सोम	27:57	मूल	23:58	वृद्धि	चतुष्पाद्

सूर्य दक्षिणायन, हेमन्त – शिशिर ऋतु
पौष कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:10	17:15	मिथुन	पौष कृष्णपक्ष आरम्भ।
7:11	17:15	कर्क में	18:48 से। भद्रा 22:32 से। त्रिपुष्कर योग 10:57 तक।
7:11	17:16	कर्क	भद्रा 10:07 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 20:20।** गण्डमूल 24:59 तक।
7:12	17:16	सिंह में	26:00 से। गण्डमूल विचार।
7:12	17:17	सिंह	गण्डमूल 27:47 तक।
7:13	17:17	सिंह	भद्रा 12:22 से 26:10 तक। सायन उत्तरायणआरम्भ। शिशिर ऋतु आरम्भ।
7:13	17:18	कन्या में	12:56 से। स.सि.यो.।
7:14	17:18	कन्या	रुक्मिणी अष्टमी। अष्टका श्राद्ध।
7:14	17:19	तुला में	25:51 से।
7:15	17:19	तुला	भद्रा 9:12 से 22:30 तक। तुलसी पूजन महोत्सव।
7:15	17:20	तुला	**सफला एकादशी व्रत।**
7:15	17:21	वृश्चिक में	13:57 से।
7:16	17:21	वृश्चिक	भद्रा 27:33 से। **शनि प्रदोष व्रत। शुक्र कुम्भ में 23:39।** गण्डमूल 22:13 से।
7:16	17:22	धनु में 23:22 से	भद्रा 15:48 तक। मासशिवरात्रि व्रत। गण्डमूल विचार।
7:16	17:23	धनु	**पौष सोमवती अमावस्या** (मेला हरिद्वार-प्रयागराजादि)। तीर्थस्नान माहात्म्य। गण्डमूल 23:58 तक।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946 31 दिसम्बर 2024 से 13 जनवरी 2025 तक								
ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
31	17	1	मंगल	27:57	पूर्वाषाढ़ा	24:04	ध्रुव	किंस्तुघ्न
1 जन.25	18	2	बुध	26:25	उत्तराषाढ़ा	23:46	व्याघात	बालव
2	19	3	गुरु	25:09	श्रवण	23:11	हर्ष	तैतिल
3	20	4	शुक्र	23:40	धनिष्ठा	22:22	वज्र	वणिज्
4	21	5	शनि	22:02	शतभिषा	21:24	सिद्धि	बव
5	22	6	रवि	20:16	पू.भाद्रपदा	20:18	व्य/वरी	कौलव
6	23	7	सोम	18:24	उ.भाद्रपदा	19:07	परिघ	वणिज्
7	24	8	मंगल	16:27	रेवती	17:50	शिव	बव
8	25	9	बुध	14:26	अश्विनी	16:30	सिद्ध	कौलव
9	26	10	गुरु	12:23	भरणी	15:07	साध्य	गर
10	27	11	शुक्र	10:20	कृत्तिका	13:46	शुभ	विष्टि
11	28	12	शनि	8:22	रोहिणी	12:29	शुक्ल	बालव
-	-	13	शनि	30:34	-	-	-	-
12	29	14	रवि	29:03	मृगशिरा	11:25	ब्र/ऐ	गर
13	30	15	सोम	27:57	आर्द्रा	10:38	वैधृति	विष्टि

सूर्य दक्षिणायन, शिशिर ऋतु
पौष शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:17	17:23	मकर में	पौष शुक्ल पक्ष आरम्भ।
7:17	17:24	मकर	चन्द्रदर्शनम् मु.45। **जन. 2025 आरम्भ।** आरोग्य व्रत।
7:17	17:25	मकर	
7:17	17:26	कुम्भ में 10:48 से	भद्रा 12:25 से 23:40 तक। पंचक आरम्भ 10:48।
7:18	17:26	कुम्भ	**बुध मूल 1 धनु में 12:02।**
7:18	17:27	मीन में	14:35 से।
7:18	17:28	मीन	भद्रा 18:24 से 29:26 तक। मार्तण्ड सप्तमी। **श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती।** गण्डमूल 19:07 से।
7:18	17:29	मेष में	17:50 से। पंचक समाप्त 17:50। गण्डमूल विचार।
7:18	17:29	मेष	श्रीदुर्गाष्टमी। महारुद्र व्रत। गण्डमूल 16:30 तक।
7:18	17:30	वृष में	20:47 से भद्रा 23:22 से।
7:18	17:31	वृष	भद्रा 10:20 तक। **पुत्रदा एकादशी व्रत।**
7:18	17:32	मिथुन में	23:55 से। **शनि प्रदोष व्रत।** स.सि.यो. 12:29 तक।
-	-	-	त्रयोदशी तिथि का क्षय।
7:18	17:33	मिथुन	भद्रा 29:03 से। ईशान व्रत।
7:18	17:33	कर्क में 28:20 से	भद्रा 16:30 तक। **पौष पूर्णिमा। माघ स्नान आरम्भ।** श्रीसत्यनारायण व्रत। लोहड़ी पर्व (पं., हरि., जम्मू, दिल्ली)। **कुम्भ महापर्व (प्रयागराज)।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
14 जनवरी से 29 जनवरी 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
14	1 माघ	1	मंगल	27:22	पुनर्वसु	10:17	विष्कुम्भ	बालव
15	2	2	बुध	27:24	पुष्य	10:28	प्रीति	तैतिल
16	3	3	गुरु	28:07	आश्लेषा	11:17	आयुष्मान्	वणिज्
17	4	4	शुक्र	29:31	मघा	12:45	सौभाग्य	बव
18	5	5	शनि	पूरादिन	पू.फाल्गुनी	14:52	शोभन	कौलव
19	6	5	रवि	7:31	उ.फाल्गुनी	17:30	अतिगण्ड	तैतिल
20	7	6	सोम	9:59	हस्त	20:30	सुकर्मा	वणिज्
21	8	7	मंगल	12:40	चित्रा	23:37	धृति	बव
22	9	8	बुध	15:19	स्वाति	26:34	शूल	कौलव
23	10	9	गुरु	17:38	विशाखा	29:08	गण्ड	गर
24	11	10	शुक्र	19:26	अनुराधा	31:08	वृद्धि	विष्टि
25	12	11	शनि	20:32	ज्येष्ठा	पूरादिन	ध्रुव	बव
26	13	12	रवि	20:55	ज्येष्ठा	8:26	व्याघात	कौलव
27	14	13	सोम	20:35	मूल	9:02	हर्ष	गर
28	15	14	मंगल	19:37	पूर्वाषाढ़ा	8:59	वज्र	विष्टि
29	16	30	बुध	18:06	उत्तराषाढ़ा श्रवण	8:21 31:15	सिद्धि	नाग

सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु
माघ कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:18	17:34	कर्क	**सूर्य मकर में 8:55। मकर (माघ) संक्रान्ति मु.30। पुण्यकाल सं. सूर्योदय से मध्याह्न बाद तक। प्रथम शाही स्नान-कुम्भ महापर्व (प्रयागराज)**
7:18	17:35	कर्क	गण्डमूल 10:28 से।
7:17	17:36	सिंह में	11:17 से। भद्रा 15:46 से 28:07 तक। गण्डमूल विचार।
7:17	17:37	सिंह	**श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:04।** गौरी-वक्रतुण्ड चतुर्थी। गण्डमूल 12:45 तक।
7:17	17:38	कन्या में	21:29 से।
7:17	17:39	कन्या	**बुध पूर्व में अस्त 29:59।** स.सि.यो.।
7:17	17:40	कन्या	भद्रा 9:54 से 23:20 तक।
7:16	17:40	तुला में 10:04 से	स्वा. विवेकानन्द जयन्ती (तिथ्यनुसार)। **वक्री मंगल मिथुन में 10:05।**
7:16	17:41	तुला	
7:16	17:42	वृश्चिक में	22:33 से। भद्रा 30:32 से। सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती।
7:15	17:43	वृश्चिक	भद्रा 19:26 तक। **बुध मकर में 17:38।** गण्डमूल 31:08 से।
7:15	17:44	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत।** गण्डमूल विचार।
7:14	17:45	धनु में 8:26 से	**तिल-द्वादशी। भारत गणतन्त्र दिवस (76वाँ)। गण्डमूल विचार।**
7:14	17:46	धनु	भद्रा 20:35 से। **सोम प्रदोष व्रत। शुक्र मीन में 31:02।** मासशिवरात्रि व्रत। गण्डमूल 9:02 तक।
7:13	17:47	मकर में	भद्रा 8:06 तक।
7:13	17:47	मकर	**माघ (मौनी) अमावस्या। कुम्भ-महापर्व (प्रयागराज)। द्वितीय मुख्य शाही स्नान। तीर्थस्नान माहात्म्य।**

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
30 जनवरी से 12 फरवरी 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
30	17	1	गुरु	16:11	धनिष्ठा	29:51	व्यतिपात	बव
31	18	2	शुक्र	14:00	शतभिषा	28:51	वरीयान	कौलव
1 फरवरी	19	3	शनि	11:39	पू.भाद्रपदा	26:33	परिघ	गर
2	20	4	रवि	9:15	उ.भाद्रपदा	24:53	शिव सिद्ध	विष्टि
-	-	5	रवि	30:53	-	-	-	-
3	21	6	सोम	28:38	रेवती	23:17	साध्य	कौलव
4	22	7	मंगल	26:31	अश्विनी	21:50	शुभ	गर
5	23	8	बुध	24:36	भरणी	20:33	शुक्ल	विष्टि
6	24	9	गुरु	22:54	कृत्तिका	19:30	ब्रह्म	बालव
7	25	10	शुक्र	21:27	रोहिणी	18:40	ऐन्द्र	तैतिल
8	26	11	शनि	20:16	मृगशिरा	18:07	वैधृति	वणिज्
9	27	12	रवि	19:26	आर्द्रा	17:53	विष्कुम्भ	बव
10	28	13	सोम	18:58	पुनर्वसु	18:01	प्रीति	तैतिल
11	29	14	मंगल	18:56	पुष्य	18:34	आयुष्मान्	वणिज्
12	1 फाल्गु	15	बुध	19:23	आश्लेषा	19:36	सौभाग्य	बव

सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु
माघ शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:12	17:48	कुम्भ में 18:35 से	पंचक आरम्भ 18:35 से। **गुप्त नवरात्र आरम्भ।** चन्द्रदर्शन मु.30।
7:12	17:49	कुम्भ	
7:11	17:50	मीन में 20:59 से	भद्रा 22:27 से। **गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत। श्रीगणेश तिल चतुर्थी। वरद् (कुन्द) चतुर्थी।**
7:11	17:51	मीन	भद्रा 9:15 तक। **वसन्त पञ्चमी। श्रीपञ्चमी। सरस्वती-लक्ष्मी पूजन। तृतीय (अन्तिम) शाही स्नान-कुम्भ महापर्व (प्रयाग)।** वागेश्वरी जयन्ती। गण्डमूल 18:43 तक।
-	-	-	पञ्चमी तिथि का क्षय।
7:10	17:52	मेष में 23:17 से	पंचक समाप्त 23:17। **तृतीय (अन्तिम) शाही स्नान-कुम्भ महापर्व (प्रयाग) (मतान्तरे)।**
7:09	17:53	मेष	भद्रा 26:31 से। **गुरु मार्गी 15:10।** रथ सप्तमी व्रत।
7:09	17:53	वृष में	26:16 से। भद्रा 13:34 तक। **भीष्माष्टमी।**
7:08	17:54	वृष	**गुप्त नवरात्र समाप्त।**
7:07	17:55	मिथुन में	30:21 से।
7:06	17:56	मिथुन	भद्रा 8:52 से 20:16 तक। **जया एकादशी व्रत।**
7:06	17:57	मिथुन	**भीष्म-द्वादशी।** तिल द्वादशी।
7:05	17:58	कर्क में	11:57 से। **सोम प्रदोष व्रत।**
7:04	17:58	कर्क	भद्रा 18:56 से 31:10 तक। **बुध कुम्भ में 12:53।** गण्डमूल 18:34 से।
7:03	17:59	सिंह में 19:36 से	**माघ पूर्णिमा। माघस्नान समाप्त। सूर्य कुम्भ में 21:56। फाल्गुन संक्रान्ति मु.30, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद।** श्रीगुरु रविदास जयन्ती। **श्रीललिता जयन्ती।** श्रीसत्यनारायण व्रत।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946 13 फरवरी से 27 फरवरी 2025 तक								
ता॰	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
13	2	1	गुरु	20:22	मघा	21:07	शोभन	बालव
14	3	2	शुक्र	21:53	पू.फाल्गुनी	23:10	अतिगण्ड	तैतिल
15	4	3	शनि	23:53	उ.फाल्गुनी	25:40	सुकर्मा	वणिज्
16	5	4	रवि	26:16	हस्त	28:31	धृति	बव
17	6	5	सोम	28:54	चित्रा	पूरादिन	शूल	कौलव
18	7	6	मंगल	पूरादिन	चित्रा	7:36	गण्ड	गर
19	8	6	बुध	7:33	स्वाति	10:40	वृद्धि	वणिज्
20	9	7	गुरु	9:59	विशाखा	13:30	ध्रुव	बव
21	10	8	शुक्र	11:58	अनुराधा	15:54	व्याघात	कौलव
22	11	9	शनि	13:20	ज्येष्ठा	17:40	हर्ष	गर
23	12	10	रवि	13:56	मूल	18:43	वज्र	विष्टि
24	13	11	सोम	13:45	पूर्वाषाढ़ा	18:59	सिद्धि	बालव
25	14	12	मंगल	12:48	उत्तराषाढ़ा	18:31	व्यति/वरी	तैतिल
26	15	13	बुध	11:09	श्रवण	17:23	परिघ	वणिज्
27	16	14	गुरु	8:55	धनिष्ठा	15:44	शिव	शकुनि
-	-	30	गुरु	30:15	-	-	-	-

सूर्य उत्तरायण, शिशिर – वसन्त ऋतु
फाल्गुन कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
7:02	18:00	सिंह	गण्डमूल 21:07 तक।
7:02	18:01	कन्या में	29:45 से।
7:01	18:02	कन्या	भद्रा 10:53 से 23:53 तक।
7:00	18:02	कन्या	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:35।** स.सि.यो.
6:59	18:03	तुला में	18:03 से।
6:58	18:04	तुला	वसन्त ऋतु आरम्भ।
6:57	18:05	वृश्चिक में	30:50 से। भद्रा 7:33 से 20:46 तक।
6:56	18:05	वृश्चिक	जानकी व्रत (मध्याह्न-व्यापिनी)।
6:55	18:06	वृश्चिक	गण्डमूल 15:54 से।
6:54	18:07	धनु में	17:40 से। भद्रा 25:38 से।
6:53	18:08	धनु	भद्रा 13:56 तक। गण्डमूल 18:43 तक।
6:52	18:08	मकर में 24:56 से	**विजया एकादशी व्रत। मंगल मार्गी 7:32 से।**
6:51	18:09	मकर	**भौम प्रदोष व्रत। त्रिपुष्कर योग 12:48 तक।**
6:50	18:10	कुम्भ में 28:37 से	भद्रा 11:09 से 22:02 तक। पंचक आरम्भ 28:37। **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत। आश्रम में श्रीभीडभञ्जन महादेव की रात में 4 प्रहर की पूजा एवं अभिषेक।**
6:49	18:11	कुम्भ	**फाल्गुन अमावस्या।** (स्नानदानादि प्रातः 8:55 बाद)। **बुध मीन में 23:45।**
-	-	-	अमावस्या तिथि का क्षय।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946
28 फरवरी से 14 मार्च 2025 तक

ता॰	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
28	17	1	शुक्र	27:17	शतभिषा	13:40	सिद्ध	किंस्तुघ्न
1 मार्च	18	2	शनि	24:10	पू.भाद्रपदा	11:23	साध्य	बालव
2	19	3	रवि	21:03	उ.भाद्रपदा रेवती	9:00 30:39	शुभ	तैतिल
3	20	4	सोम	18:03	अश्विनी	28:30	शुक्ल/ब्रह्म	वणिज्
4	21	5	मंगल	15:17	भरणी	26:38	ऐन्द्र	बालव
5	22	6	बुध	12:52	कृत्तिका	25:09	वैधृति	तैतिल
6	23	7	गुरु	10:51	रोहिणी	24:06	विष्कुम्भ	वणिज्
7	24	8	शुक्र	9:19	मृगशिरा	23:32	प्रीति	बव
8	25	9	शनि	8:17	आर्द्रा	23:29	आयुष्मान्	कौलव
9	26	10	रवि	7:46	पुनर्वसु	23:55	सौभाग्य	गर
10	27	11	सोम	7:45	पुष्य	24:52	शोभन	विष्टि
11	28	12	मंगल	8:15	आश्लेषा	26:16	अतिगण्ड	बालव
12	29	13	बुध	9:12	मघा	28:06	सुकर्मा	तैतिल
13	30	14	गुरु	10:36	पू.फाल्गुनी	30:20	धृति	वणिज्
14	1 चैत्र	15	शुक्र	12:25	उ.फाल्गुनी	पूरादिन	शूल	बव

सूर्य उत्तरायण, वसन्त ऋतु
फाल्गुन शुक्ल पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:48	18:11	मीन में	29:58 से। फाल्गुन शुक्ल पक्ष आरम्भ।
6:47	18:12	मीन	चन्द्रदर्शन मु.45। **फूलेरा दूज।**(मथुरा-वृन्दावन)। **शुक्र वक्री 30:06।** श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती।
6:46	18:13	मेष में 30:39 से	पंचक समाप्त 30:39। गण्डमूल 9:00 से।
6:45	18:13	मेष	भद्रा 7:33 से 18:03 तक। गण्डमूल 28:30 तक।
6:43	18:14	मेष	याज्ञवल्क्य जयन्ती।
6:42	18:15	वृष में	8:13 से।
6:41	18:15	वृष	भद्रा 10:51 से 22:05 तक।
6:40	18:16	मिथुन में	11:45 से। **होलाष्टक आरम्भ।** अन्नपूर्णा-अष्टमी।
6:39	18:17	मिथुन	
6:38	18:17	कर्क में	17:46 से। भद्रा 19:45 से।
6:37	18:18	कर्क	भद्रा 7:45 तक। **आमलकी एकादशी व्रत। गोविन्द द्वादशी।** गण्डमूल 24:52 बाद।
6:35	18:19	सिंह में 26:16 से	**भौम प्रदोष व्रत।** गण्डमूल विचार। स.सि.यो.।
6:34	18:19	सिंह	महेश्वर व्रत। गण्डमूल 28:06 तक।
6:33	18:20	सिंह	भद्रा 10:36 से 23:31 तक। **होलिका-दहन।** श्रीसत्यनारायण व्रत। लक्ष्मीनारायण व्रत। वृषदान व्रत।
6:32	18:21	कन्या में 12:57 से	**फाल्गुन पूर्णिमा। होली पर्व। होलाष्टक समाप्त। सूर्य मीन में 18:50 चैत्र संक्रान्ति, मु.45, पुण्यकाल संक्रान्ति दोपहर बाद 12:26 बाद।** श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती। होलिका विभूति धारण। धूलिवन्दन।

श्री विक्रम सम्वत् 2081, शाके 1946–47
15 मार्च से 29 मार्च 2025 तक

ता०	गते	तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	करण
15	2	1	शनि	14:34	उ.फाल्गुनी	8:54	गण्ड	कौलव
16	3	2	रवि	16:59	हस्त	11:45	वृद्धि	गर
17	4	3	सोम	19:34	चित्रा	14:47	ध्रुव	विष्टि
18	5	4	मंगल	22:10	स्वाति	17:52	व्याघात	बव
19	6	5	बुध	24:38	विशाखा	20:50	हर्ष	कौलव
20	7	6	गुरु	26:46	अनुराधा	23:32	वज्र	गर
21	8	7	शुक्र	28:24	ज्येष्ठा	25:46	सिद्धि	विष्टि
22	9	8	शनि	29:24	मूल	27:24	व्यतिात	बालव
23	10	9	रवि	29:39	पूर्वाषाढ़ा	28:18	वरीयान	तैतिल
24	11	10	सोम	29:06	उत्तराषाढ़ा	28:27	परिघ	वणिज्
25	12	11	मंगल	27:46	श्रवण	27:50	शिव	बव
26	13	12	बुध	25:43	धनिष्ठा	26:30	सिद्ध	कौलव
27	14	13	गुरु	23:04	शतभिषा	24:34	साध्य शुभ	गर
28	15	14	शुक्र	19:56	पू.भाद्रपदा	22:10	शुक्ल	विष्टि
29	16	30	शनि	16:28	उ.भाद्रपदा	19:27	ब्रह्म	नाग

सूर्य उत्तरायण, वसन्त ऋतु
चैत्र कृष्ण पक्ष

सूर्योदय	सूर्यास्त	चन्द्रमा	पर्वनाम
6:31	18:21	कन्या	**बुध वक्री 12:16। होला-मेला। ध्वजारोहण। वसन्तोत्सव।** धुलैण्डी। आम्रकुसुम प्राशन।
6:29	18:22	तुला में	भद्रा 30:17 से। 25:15 से। **सन्त तुकाराम जयन्ती।**
6:28	18:23	तुला	भद्रा 19:34 तक। **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 21:16।**
6:27	18:23	तुला	श्रीभगवन्नारायण जयन्ती। **अरुण ग्रह वृष में 29:39।**
6:26	18:24	वृश्चिक में 14:07 से	**वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त 17:51। श्रीरंग पंचमी। मेला नवचण्डी।**
6:25	18:24	वृश्चिक	भद्रा 26:46 से। एकनाथ-षष्ठी। गण्डमूल 23:32 से।
6:23	18:25	धनु में 25:46 से	भद्रा 15:35 तक। शीतला सप्तमी (पूजा)। मेला शीतलामाता (कुराली, पंजाब)।
6:22	18:26	धनु	**शक चैत्र एवं सन् 1947 आरम्भ। शीतलाष्टमी व्रत।** गण्डमूल 27:24 तक।
6:21	18:26	धनु	
6:20	18:27	मकर में	10:25 से। भद्रा 17:23 से 29:06 तक।
6:19	18:27	मकर	**पापमोचनी एकादशी व्रत (स्मार्त)। वक्री शुक्र पूर्व में उदय 18:42।**
6:17	18:28	कुम्भ में 15:15 से	पंचक आरम्भ 15:15। पापमोचिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)।
6:16	18:29	कुम्भ	भद्रा 23:04 से। **प्रदोष व्रत। वारुणी पर्व (योग) 23:04 तक।** मासशिवरात्रि व्रत।
6:15	18:29	मीन में 16:48 से	भद्रा 9:30 तक। मेला पृथुदक-पिहोवा (हरियाणा)।
6:14	18:30	मीन	**चैत्र शनिवारी अमावस्या। विक्रमी संवत् 2081 पूर्ण। शनि पू.भा. 4 मीन में 21:44।** गण्डमूल 19:27 से।

📖 शुभ व्यापार आरम्भ मुहूर्त 📖
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024–25 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
11 जुलाई	गुरु	मु. 13:04 बाद
12 जुलाई	शुक्र	मु. 7:09 बाद
17 जुलाई	बुध	ल. 5
21 जुलाई	रवि	ल. 5, अभिजित्
22 जुलाई	चंद्र	ल. 5, 7, अभिजित्
27 जुलाई	शनि	मु. 10:26 से 13:00 तक मृत्युबाण परिहार।
27 जुलाई	शनि	मु. 13:00 बाद
28 जुलाई	रवि	मु. 11:48 तक
31 जुलाई	बुध	ल.5, 7, मु.14:14 तक (रोहिण्यां भौमयुति परिहार)
1 अगस्त	गुरु	मु.10:24 तक
14 अगस्त	बुध	मु. 10:24 से 12:13 तक
24 अगस्त	शनि	ल.7, 8,अभिजित्
28 अगस्त	बुध	भौमयुति परिहार
4 सितम्बर	बुध	ल. 7,8,9
8 सितम्बर	रवि	ल. 7,8, अभिजित्
14 सितम्बर	शनि	ल. 7,8, अभिजित्
7 अक्टूबर	चंद्र	मु. प्रातः 9:48 बाद
11 अक्टूबर	शुक्र	ल.7,8,9,अभिजित्
12 अक्टूबर	शनि	मु.10:59 बाद
18 अक्टूबर	शुक्र	मु.13:26तक,मृत्यु बाण परि.
21 अक्टूबर	चंद्र	मु. 11:11 तक
24 अक्टूबर	गुरु	ल.8,9,अभिजित्

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
3 नवम्बर	रवि	ल.8,9, अभिजित्
4 नवम्बर	चंद्र	मु.8:04 तक
8 नवम्बर	शुक्र	मु. 12:03 बाद
9 नवम्बर	शनि	मु. 11:48 तक
14 नवम्बर	गुरु	मु. प्रातः 9:44 तक, मृत्युबाण परिहार
17 नवम्बर	रवि	ल.9,अभिजित् मृत्युबाण परिहार
18 नवम्बर	चंद्र	ल.9,10, अभिजित् भद्रा-परिहार
25 नवम्बर	चंद्र	ल.9,10, अभिजित्
27 नवम्बर	बुध	ल. 9, 10
5 दिसम्बर	गुरु	मु. 12:50 बाद
6 दिसम्बर	शुक्र	मु.10:43 तक
11 दिसम्बर	बुध	ल. 9:10
12 दिसम्बर	गुरु	मु. प्रातः 9:53 तक
सन् 2025 ई०		
15 जनबरी	बुध	मु.प्रातः 10:28 तक
19 जनवरी	रवि	ल.1, अभिजित् (केतुयुति परिहार)
24 जनबरी	शुक्र	ल. 1,2, अभिजित् (मृत्युबाण परिहार)
7 फरवरी	शुक्र	ल.1,2, अभिजित्
15 फरबरी	शनि	ल. 1,2, अभिजित्
20 फरवरी	गुरु	मु. 13:30 बाद
21 फरवरी	शुक्र	ल. 1, 2, अभिजित्
6 मार्च	गुरु	ल. 1, 2, अभिजित्

यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त्त, वि. सं. 2081 (2024–2025)

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
14 अप्रैल	रवि	ल.2, 3 अभिजित (तिथिदोषपरिहार)
15 अप्रैल	सोम	ल.2, 3 अभिजित (तिथिदोषपरिहार)
18 अप्रैल	गुरु	मु. 7:57 तक।
11 जुलाई	गुरु	ल.5, अभिजित्
सन् 2025 ई०		
15 जनवरी	बुध	ल.11, मु.10:28 तक पुष्य। 10:28 बाद आश्लेषा।
16 जनवरी	गुरु	मु. 11:17 तक।
31 जनवरी	शुक्र	ल.12, 1 अभिजित
7 फरवरी	शुक्र	ल.12, 1 अभिजित
9 फरवरी	रवि	ल.11, 12, 1 अभिजित
14 फरवरी	शुक्र	ल.11, 12, 1 अभिजित

*****

चूडाकर्म मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024-2025 ई॰

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	मुहूर्त्तविवरण
15 अप्रैल	चन्द्र	पुन.	ल.2,3, अभिजित्
16 अप्रैल	मंगल	पुष्य	ल.2,3, अभि. (क्षत्रियाणां केवल)
आश्विन-नवरात्रों में-आवश्यके			
3 अक्टूबर	गुरु	चित्रा	मु.15:32 बाद
8 अक्टूबर	मंगल	ज्ये.	ल.9, अभि. (क्षत्रियाणां केवल)
12 अक्टूबर	शनि	श्रव.	मु. 10:59 बाद, ल.9, अभि.(वैश्यानां केवल)
सन् 2025 ई॰			
15 जनवरी	बुध	पुष्य	मु. प्रातः 10:28 तक
22 जनवरी	बुध	स्वा.	ल.1, 2 (शूल-दोष परिहार)
25 जनवरी	शनि	ज्ये.	ल. 1 अभिजित् (वैश्यानां)
26 जनवरी	रवि	ज्ये.	मु. प्रातः 8:26 तक (ब्राह्मणों के लिए)
31 जनवरी	शुक्र	शत.	ल. 1, अभि.,2
4 फरवरी	मंगल	अश्वि.	ल. 1,2, अभि.(क्षत्रियाणां)
10 फरवरी	चन्द्र	पुन.	ल. 1,2, मु.11:57 तक
18 फरवरी	मंगल	स्वा.	मु. 7:36 बाद, ल. 1,2, अभि.(क्षत्रियाणां केवलम्)
19 फरवरी	बुध	स्वा.	मु. 10:40 तक (भद्रा पातालगते)

मुहूर्त्त सम्बन्धी

✻ बालक के मुण्डन जन्म या गर्भाधान काल से 1,3,5 इत्यादि विषम वर्षों में करने का विधान है। कुछ विद्वान् बालक के जन्म मास एवं जन्म नक्षत्र और विरूद्ध चन्द्र (4,8,12) वें चूड़ाकरण करने का निषेध मानते हैं-(चूड़ामणि) ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में करने का निषेध माना गया है। कुल परम्परानुसार नवरात्रों में सिद्ध शक्ति पीठ या तीर्थ स्थलों पर बिना निर्धारित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि शुभ कार्य सम्पादित कराते हैं।

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
18 अप्रैल	गुरु	दि.ल. 2 (7:57 बाद, सू.मं.दा.), 3 (के.दा.), गोधूलि, रा.ल. 8 (सू.गु.दा.), 9 (रा.दा.), 10 (अष्टमस्थ चंद्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभपदा, चं.शु.दा.)
11 जुलाई	गुरु	दि.ल. 8 (लग्नेश मं. षष्ठस्थ परिहार, मं. पूज्य दान वा), रा.ल. 2 (मं.गु.दा.)-28:09 से परिघ-दोष
12 जुलाई	शुक्र	दि.ल. 4 (7:09 बाद, 7:09 तक परिघ-दोष (बु.शु.दा.), 8 (16:09 तक-अल्पकाले, -लग्नेश मं. षष्ठस्थ परिहार, मं. पूज्य)
14 जुलाई	रवि	मृत्युबाण-दोष रात्रि 21:32 तक, रा.ल. 1 (चं. दान व पूजा)
19 जुलाई	शुक्र	23:10 तक सूर्य-वेध, रा.ल. 1, 26:41 से वैधृति-दोष
20 जुलाई	शनि	27:01 तक विष्कम्भ दोष, रा.ल. 3 (चं.मं.दा.), 28:54 तक भद्रा पाताले
21 जुलाई	रवि	दि.ल. 9 (लग्नेश गुरु षष्ठस्थ एवं अष्टमस्थ शु. परिहार, गु.शु. पूज्य दान वा), रा.ल. 1 (24:14 तक)
21 जुलाई	रवि	रा.ल. 1 (24:14 बाद), 3 (अष्टमस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, चं.मं.गु.दा.), - पादेन बुध वेधऽभावः
22 जुलाई	सोम	रा.ल. 1, 3 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य दान वा), पादेन शुक्र वेधऽभावः
23 जुलाई	मंगल	11:11 से 14:48 तक शुक्र पादवेध, दि.ल. 9 (लग्नेश गु. षष्ठस्थ, एवं शु. अष्टमस्थ-परिहार, गु.-शु. पूज्य दान वा)
27 जुलाई	शनि	दि.ल. 9 (लग्नेश गु. षष्ठस्थ एवं अष्टमस्थ शु. परिहार, गु.शु. दान व पूजा), 22:44 से 24:44 तक शूल दोष, रा.ल. 3 (शु.के.दा.)
30 जुलाई	मंगल	दि.ल. 9 (लग्नेश गु. षष्ठस्थ व अष्टमस्थ शु. परिहार, चं.गु. शु.पूज्य) (षष्ठस्थ चं परिहार), रा.ल. 1, 3 (चं.मं.गु. के.दा.) (भौमयुति परिहार)
31 जुलाई	बुध	14:14 से 18:50 तक व्याघात दोष, रा.ल. 1, 3 (चं.मं.गु.के.दा.)
5 अगस्त	सोम	8:34 से 21:06 तक मृत्युबाण दोष, रा.ल. 1, 3 (मं.गु.शु.दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
6 अगस्त	मंगल	11:00 से 14:00 तक परिघ-दोष, दि.ल. 9 (लग्नेश गु. षष्ठस्थ परिहार, गु. पूज्य, -धनु लग्न 17:44 तक)
7 अगस्त	बुध	रा. ल. 1, 3 (मं.गु.शु.दा.)
8 अगस्त	गुरु	दि.ल. 9 (लग्नेश गुरु षष्ठस्थ परिहार, गु.दा.), रा.ल. 1 (23:44 तक)-भद्रा पातालगते
11 अगस्त	रवि	प्रातः 10:12 से 14:54 तक क्रान्तिसाम्य दोष, दि.ल. 9 (गुरु षष्ठस्थ परिहार, गु.दा.), रा.ल. 1 (चं.दा.), 3 (मं.गु.शु.दा.)
13 अगस्त	मंगल	दि.ल. 9 (षष्ठस्थ गु. परिहार, गु.दा.), रा.ल. 1 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य), 3 (षष्ठस्थ च परिहार, च.बु.गु.शु.दा.)
19 अगस्त	सोम	दि.ल. 9 (लग्नेश गु. षष्ठस्थ परिहार, गु. पूज्य), 10 (अष्टमस्थ शु. परिहार, चं.शु.दा.), रा.ल. 1, 24:47 से 27:11 तक अतिगण्ड दोष
23 अगस्त	शुक्र	19:14 से 22:51 तक क्रान्तिसाम्य दोष, रा.ल. 3 (मं. गु.शु.दा.), 4 (शु.के.दा.)
24 अगस्त	शनि	दि.ल. 9 (लग्नेश गुरु षष्ठस्थ परिहार), 10 (18:06 तक, सू.बु.दा.)
26 अगस्त	सोम	दि.ल. 9 (15:55 बाद, लग्नेश गु. षष्ठस्थ परिहार, गु.दा.), 10 (सू.बु.दा.), रा.ल. 1 (षष्ठस्थ शु. परिहार, सू.शु.दा.), 4 (28:59 तक, बु.शु.दा.)-28:59 से मृत्युबाण-दोष
27 अगस्त	मंगल	17:24 तक मृत्युबाण-दोष, दि.ल. 10 (17:24 बाद, बु.दा.), 20:31 से 24:07 तक वज्र-दोष, रा.ल. 4 (बु. शु.दा.), भौमयुति परिहार
28 अगस्त	बुध	दि.ल. 7 (बुध केन्द्रगत होने से अष्टमस्थ गु. परिहार, गु.शु.दा.)
4 सितम्बर	बुध	दि.ल. 7 (अष्टमस्थ गु. परिहार, गु.शु.दा.), 10 (सू.बु.दा.) रा.ल. 1 (षष्ठस्थ चं.शु. परिहार, चं.शु.दा.), 2, 4 (मं.शु. दा.)
7 सितम्बर	शनि	दि.ल. 10 (बुध पूज्य,-भद्रा पातालगते), रा.ल. 1 (चं. शु.पूज्य, शुक्र षष्ठस्थ परिहार), 2 (गुरु केन्द्रगते षष्ठस्थ चं. परिहार), 4 (शु.दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
8 सितम्बर	रवि	दि.ल. 7 (गुरु पूज्य)
9 सितम्बर	सोम	25:44 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, रा.ल. 4 (शु.दा.)
10 सितम्बर	मंगल	दि.ल. 7 (गुरु पूज्य दान वा), 10 (सू.बु.दा.)
11 सितम्बर	बुध	रा.ल. 1 (21:22 बाद-अल्पकाले, षष्ठस्थ शु. परिहार), 2 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य)
12 सितम्बर	गुरु	दि.ल. 7 (गुरु पूज्य दान वा), 10 (सू.बु.दा.), रा.ल. 1 (षष्ठस्थ शु. परिहार, शु.दा.)
13 सितम्बर	शुक्र	रा.ल. 2 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं.दा.), 4 (27:24 बाद, कर्क लग्न अल्पकाले)-27:24 तक चन्द्रमा षष्ठस्थ है। - पादेन गुरु वेधऽभावः
14 सितम्बर	शनि	दि.ल. 7 (गुरु पूज्य दान वा), 14:48 से 20:33 तक गुरुपादवेध, भद्रा पातालगते, 18:26 से मृत्युबाण दोष
3 अक्टूबर	गुरु	दि.ल. 10 (15:32 बाद), रा.ल. 1 (सू.चं.दा.), 4-28:24 से वैधृति दोष
6 अक्टूबर	रवि	मृत्युबाण सायं 16:56 तक, रा.ल. 4 (मं.दा.), (भद्रा स्वर्गगते)
7 अक्टूबर	सोम	दि.ल. 7 (गुरु पूज्य दान वा), 10, रा.ल. 1 (चं. अष्टमस्थ परिहार, चं.दा.)
11 अक्टूबर	शुक्र	दि.ल. 7 (बु.गु.शु.पूज्य), 10 (चं. पूज्य), 17:33 से 23:29 तक गुरुपादवेध, रा.ल. 4 (मं.दा.)
12 अक्टूबर	शनि	दि.ल. 7 (बु.गु.शु. पूज्य), 10 (सू.बु.दा.), रा.ल. 1 (बु. शु.दा.) (विजयादशमी) 24:22 से 26:22 तक शूल-दोष
20 अक्टूबर	रवि	14:12 तक व्यतिपात दोष, रा.ल. 2 (चं.गु.शु.दा.), 3 (बुध त्रिकोणगते-षष्ठस्थ शु. परिहार, शु.दा.)
21 अक्टूबर	सोम	दि.ल. 8 (चं.गु.शु. पूज्य), 11:11 से 14:11 तक परिघ दोष, रा.ल. 2 (गु.शु.दा.), 3 (बुध त्रिकोणगते षष्ठस्थ शु. परिहार)
26 अक्टूबर	शनि	दि.ल. 8 (अल्पकाले, गु.शु.दा.), 9 (षष्ठस्थ गु. एवं अष्टमस्थ मं. परिहार), 16:24 से भद्रा भुगोल, 30:39 तक क्रान्तिसाम्य दोष
27 अक्टूबर	रवि	दि.ल. 8 (8:57 तक, अल्पकाले) 8:57 से 20:56 तक मृत्युबाण दोष

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
28 अक्टूबर	सोम	गोधूलि, रा.ल. 2 (गु.शु.दा.), 3 (षष्ठस्थ शुक्र परिहार, शु.दा.), दग्धा परिहार
3 नवम्बर	रवि	दि.ल. 8 (चं.बु.गु.शु. पूज्य), 9 (षष्ठस्थ गुरु व अष्टमस्थ मं. परिहार, चं.मं.गु.दा.), गोधूलि, रा.ल. 2 (चं.बु.गु.दा.), तदुपरान्त लग्नऽभावः
4 नवम्बर	सोम	दि.ल. 8 (अल्पकाले 8:04 तक)
6 नवम्बर	बुध	दि.ल. 8 (बु.गु.दा.), 9 (11:00 तक, बु.गु.शु. पूज्य, षष्ठस्थ गु. परिहार)
8 नवम्बर	शुक्र	गोधूलि, रा.ल.3 (लग्नेश बुध षष्ठस्थ, चं. अष्टमस्थ परिहार, चं. पूज्य)
9 नवम्बर	शनि	दि.ल. 8 (बु.गु.दा.), 9 (लग्नेश गुरु षष्ठस्थ परिहार, 11:48 तक, गु. पूज्य)
9 नवम्बर	शनि	गोधूलि, 19:24 से 23:44 तक क्रान्तिसाम्य दोष
10 नवम्बर	रवि	दि.ल. 8 (बु.गु.दा.), 9 (षष्ठस्थ गु. परिहार, गु.शु. पूज्य)
14 नवम्बर	गुरु	दि.ल. 8 (7:51 तक) अल्पकाले-7:51 से 19:45 तक मृत्युबाण, 11:30 से व्यतिपात दोष (भीष्मपंचक विचार)
17 नवम्बर	रवि	मृत्युबाण दोष 19:15 तक, गोधूलि, रा.ल. 3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु.शु.दा.), 7 (अष्टमस्थ गु. परिहार, गु.शु.दा.)
18 नवम्बर	सोम	दि.ल. 9 (षष्ठस्थ गु., अष्टमस्थ मं. परिहार, मं.गु.शु.दा.), भद्रा पातालगते
22 नवम्बर	शुक्र	गोधूलि, रा.ल. 3 (लग्नेश बु. षष्ठस्थ परिहार, बु.गु. पूज्य दान वा), 7 (गु.शु.दा.)
23 नवम्बर	शनि	दि.ल. 9 (गु. पूज्य दान वा), 11:42 से वैधृति-दोष
24 नवम्बर	रवि	रा.ल. 7 (चं.गु.शु.दा. व पूजा) केतु-युति परिहार
25 नवम्बर	सोम	दि.ल. 9 (लग्नेश षष्ठस्थ गु. परिहार, अष्टमस्थ मं. परिहार), 1 (बु.दा.), गोधूलि,-(केतु युति परिहार) दग्धा-परिहार, भद्रा पातालगते
26 नवम्बर	मंगल	रा.ल. 7 (28:35 बाद, गु.शु.दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024 – 2025 ई॰

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
27 नवम्बर	बुध	दि.ल. 9 (लग्नेश गु. षष्ठस्थ एवं अष्टमस्थ मं. परिहार, मं.गु. दा.), 1 (षष्ठस्थ-चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा), गोधूलि, रा.ल. 7 (गु.शु.दा.)
5 दिसम्बर	गुरु	14:09 तक मृत्युबाण दोष, दि.ल. 1 (बु.दा.)
5 दिसम्बर	गुरु	20:07 से 26:00 तक क्रान्तिसाम्य-दोष, रा.ल. 7 (लग्नेश शु. केन्द्रस्थ होने से-अष्टमस्थ गु. परिहार) (गु. पूज्य-दान वा)
6 दिसम्बर	शुक्र	10:43 से 14:19 तक व्याघात दोष, दि.ल. 1 (सू.बु.दा.), गोधूलि
6 दिसम्बर	शुक्र	गोधूलि, रा.ल. 7 (गु. पूज्य दान वा)
7 दिसम्बर	शनि	दि.ल. 1 (सू.बु.दा. व पूजा), गोधूलि (16:51 तक)
11 दिसम्बर	बुध	दि.ल. 1 (सू.बु. दान व पूजा), गोधूलि 18:47 से 21:47 तक परिघ दोष, रा.ल. 7 (चं. पूज्य दान वा)-भद्रा स्वर्गगते
सन् 2025 ई.		
16 जनवरी	गुरु	दि.ल. 1 (मं.दा.), 2 (बु.दा.) (वृष लग्न 15:46 तक-भद्रा पूर्वे) 15:46 से 28:07 तक भद्रा भूलोके, रा.ल. 8 (28:07 बाद, गु.दा.)
17 जनवरी	शुक्र	दि.ल. 1 (12:45 तक)-अल्पकाले
18 जनवरी	शनि	दि.ल. 2 (14:52 बाद, अत्यल्पकाले), गोधूलि, रा.ल. 7 (25:16 तक, अष्टमस्थ- गुरु पूज्य दान वा), 25:16 से 27:40 तक अतिगण्डदोष, 8 (27:40 बाद)-केतु युति परिहार
19 जनवरी	रवि	दि.ल. 1 (षष्ठस्थ चन्द्र परिहार), 2 (गु.दा.) (केतु युति परिहार)
21 जनवरी	मंगल	रा.ल.7 (अष्टमस्थ गु. परिहार, गु.दा.), 27:49 से 29:49 तक शूल-दोष
22 जनवरी	बुध	दि.ल. 1 (चं. दान व पूजा), 2 (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं.बु. गु.दा.), (23:22 से 28:47 तक क्रान्तिसाम्य दोष)
24 जनवरी	शुक्र	16:33 तक मृत्युबाण दोष विचार, रा.ल. 7 (अष्टमस्थ गु. परिहार, गु.दा.)
30 जनवरी	गुरु	18:33 तक व्यतिपात दोष, गोधूलि, तदुपरान्त लग्नऽभाव, रा.ल. 8 (गुरु केन्द्रगते शत्रुराशिगते अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. दान व पूजा)-आवश्यके

शुभ विवाह मुहूर्त
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2025 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्न काल, ग्रह दान-पूजा आदि विवरण।
4 फरवरी	मंगल	दि.ल. 1 (चं.दा.), 2 (चं.गु.दा.)-15:17 से 19:23 तक क्रान्तिसाम्य दोष
7 फरवरी	शुक्र	दि.ल. 1, 2 (चं.शु.दा.), 16:17 से वैधृति-दोष
13 फरवरी	गुरु	प्रातः 7:31 से 9:55 तक अतिगण्ड दोष, दि.ल. 1 (सू.शु.दा.), 2 (सू.गु.दा.), 4 (सू.बु.दा.), 21:41 से मृत्युबाण दोष
14 फरवरी	शुक्र	रा.ल. 10 (चं.दा., 29:45 तक चन्द्र पूज्य)-केतु युति परिहार
15 फरवरी	शनि	दि.ल. 1 (षष्ठस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा), 2, 4 (सू. बु.दा.)-भद्रा पाताले
18 फरवरी	मंगल	दि.ल. 1 (चं. पूज्य), 2 (चं.दा. व पूज्य), 4 (सू. बु.श.दा.), गोधूलि, 19:39 से 21:08 तक बुधपादवेध, रा.ल. 10 (शु.दा.)
19 फरवरी	बुध	दि.ल. 1 (10:40 तक, चं. पूज्य)- भद्रा पातालगते
20 फरवरी	गुरु	11:34 से 15:10 तक व्याघात दोष, दि.ल. 4 (सू. बु.श.दा.), गोधूलि, रा.ल. 10 (शु.दा.)
21 फरवरी	शुक्र	दि.ल. 1 (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं.दा.), 2 (चं.गु.दा.), 4 (कर्क लग्न-अल्पकाले-15:54 तक, सू.बु.दा.)
25 फरवरी	मंगल	प्रातः 8:15 तक व्यतिपात दोष, दि.ल. 1, 2 (गु.दा.), दोपहर 12:48 से कृष्ण त्रयोदशी
3 मार्च	सोम	दि.ल. 1 (चं.शु.दा.), 2 (चं.गु.दा.), 4 (सू.श.दा.),-(भद्रा स्वर्गगते) (18:43 से 30:42 तक मृत्युबाण दोष)
5 मार्च	बुध	विष्कम्भ दोष 24:19 तक, रा.ल. 10 (शु.दा.)
6 मार्च	गुरु	दि.ल. 1, 2 (चं.गु.दा.), 4 (सू.श.दा.)-भद्रा स्वर्गगते
6 मार्च	गुरु	रा.ल. 10 (शु.दा.)
7 मार्च	शुक्र	दि.ल. 1, 2 (चं.गु.दा.), 4 (मं.दा.)
11 मार्च	मंगल	रा.ल. 10 (गुरु त्रिकोणगते अष्टमस्थ चं. परिहार, चन्द्र पूज्य दान वा)
12 मार्च	बुध	दि.ल. 1 (बु.शु.दा.), 2 (गु.दा.), 4 (सू.श.दा.), 18:41 से 30:43 तक मृत्युबाण दोष

गृहारम्भ मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024–2025 ई०

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	मुहूर्त्तविवरण
11 जुलाई	गुरु	उ.फा.	मु. 13:04 बाद
12 जुलाई	शुक्र	उ.फा.	मु. 7:09 बाद, ल.5, अभि.
17 जुलाई	बुध	अनु.	ल. 5, 7, मृत्युबाण 12:29 से
27 जुलाई	शनि	रे/अ	मु.10:26 बाद, (मृत्युबाण परि.)
31 जुलाई	बुध	रो/मृ	ल. 5, 7, मु. 14:14 तक (रोहण्यां भौमयुति परिहार)
1 अगस्त	गुरु	मृग	मु. 10:24 तक
19 अगस्त	चंद्र	धनि.	मु. 8:10 बाद, ल.7,8,अभि.
28 अगस्त	बुध	मृग.	ल. 7, 8
4 सितम्बर	बुध	उ.फा.	ल. 7, 8
14 सितम्बर	शनि	उ.षा.	ल. 7, 8, अभिजित् (भद्रा परिहार)
18 अक्टूबर	शुक्र	अश्वि	ल. 7, 8, 9, अभिजित्
24 अक्टूबर	गुरु	पुष्य	ल. 8, 9, अभिजित्
4 नवंबर	चंद्र	अनु.	मु. प्रातः 8:04 तक
18 नवंबर	चंद्र	मृग.	ल. 9, 10, अभिजित्
25 नवंबर	चंद्र	उ.फा.	ल. 9, 10, अभिजित् (केतु युति परिहार)
27 नवंबर	बुध	चित्रा	ल. 9, 10
7 दिसम्बर	शनि	धनि.	ल. 9, 10
11 दिसम्बर	बुध	अश्वि.	मु.11:48 बाद
12 दिसम्बर	गुरु	अश्वि.	ल.9, 10, मु. 9:53 तक
सन् 2025 ई०			
15 जनवरी	बुध	पुष्य	ल.11, मु. प्रातः 10:28 तक
31 जनवरी	शुक्र	शत.	ल.11, 1, अभिजित्
15 फरवरी	शनि	उ.फा.	ल.1, 2, अभिजित्
19 फरवरी	बुध	स्वा.	मु.प्रातः 10:40 तक
21 फरवरी	शुक्र	अनु.	ल.1, 2, मु. 11:58 तक

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024–2025 ई०

दिनाङ्क	वार	लग्नविवरण
15 अप्रैल	चंद्र	ल.2, 3, अभिजित्
11 जुलाई	गुरु	मु. 13:04 बाद
12 जुलाई	शुक्र	मु. 7:09 बाद,ल.5 अभि.
18 अक्टूबर	शुक्र	ल.8,9,अभिजित् (मृत्युबाण परिहार)
21 अक्टूबर	चंद्र	ल.8,9,मु.11:11 तक
23 अक्टूबर	बुध	ल.8,9 (भौमयुति-परिहार)
24 अक्टूबर	गुरु	ल.8,9, अभिजित्
4 नवम्बर	चंद्र	मु. प्रातः 8:04 तक
8 नवम्बर	शुक्र	मु. 12:03 बाद
9 नवम्बर	शनि	ल.8,9, अभिजित्
18 नवम्बर	चंद्र	ल.9, 10,अभिजित्
20 नवम्बर	बुध	ल. 9, 10
25 नवम्बर	चंद्र	ल.9, 10,अभिजित् (भद्रा-परिहार)
27 नवम्बर	बुध	ल. 9,10
5 दिसं.	गुरु	मु.12:50 बाद, मृत्युबाण परिहार
6 दिसं.	शुक्र	मु. 10:43 तक
7 दिसं.	शनि	ल.9, 10,अभिजित्
11 दिसं.	बुध	मु.11:48बाद,भद्रा-परिहार
12 दिसं.	गुरु	मु. 9:53 तक
सन् 2025 ई०		
15 जनवरी	बुध	ल.11,1
22 जनवरी	बुध	ल.11,1
24 जनवरी	शुक्र	ल.11,1,अभि.,भद्रा परिहार(मृत्युबाण-परिहार)
31 जनवरी	शुक्र	ल.11,1,अभिजित्
7 फरवरी	शुक्र	ल.11,1,अभिजित्
10 फरवरी	चंद्र	ल.11,1,भौमयुति-परिहार 11:57 तक
15 फरवरी	शनि	ल.1,2,अभिजित्
19 फरवरी	बुध	मु.10:40 तक,ल.1, बुधपादवेधऽभावः
21 फरवरी	शुक्र	ल.1,2,अभिजित्
6 मार्च	गुरु	ल.1,2,अभिजित्

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी द्वारा बतलायें गये मुहूर्त्त पर नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति, नवगृह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, सवत्सा गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथाशक्ति भोजन-दानादि तथा कन्या पूजन, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल-गान सहित नव-गृह में प्रवेश करना चाहिये।

✻ राहु काल ✻

वार	समय
रवि	सायं 4:30 से 6:00 तक।
सोम	प्रातः 7:30 से 9:00 तक।
मङ्गल	सायं 3:00 से 4:30 तक।
बुध	दोपहर 12:00 से 1:30 तक।
गुरु	दोपहर 1:30 से 3:00 तक।
शुक्र	प्रातः 10:30 से 12:00 तक।
शनि	प्रातः 9:00 से 10:30 तक।

✻ यम काल ✻

वार	समय
रवि	दोपहर 12:00 से 1:30 तक।
सोम	प्रातः 10:30 से 12:00 तक।
मङ्गल	प्रातः 9:00 से 10:30 तक।
बुध	प्रातः 7:30 से 9:00 तक।
गुरु	प्रातः 6:00 से 7:30 तक।
शुक्र	दोपहर 3:00 से 4:30 तक।
शनि	दिन 1:30 से 3:00 तक।

राहु काल एवं यमकाल प्रतिदिन 1:30 घण्टे का होता हैं, जिसका प्रत्येक वार में निर्धारित समय सारणी में दिया गया है। राहु काल एवं यम काल में शुभ कार्य न करें।

✻ सर्वार्थ सिद्धि योग ✻

वार	नक्षत्र
रवि	पुष्य, अश्विनी, हस्त, मूल, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपदा, उत्तरफाल्गुनी।
सोम	श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा।
मङ्गल	अश्विनी, आश्लेषा, उ.भाद्रपदा, कृत्तिका।
बुध	रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा।
गुरु	रेवती, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य।
शुक्र	रेवती, अनुराधा,अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण।
शनि	श्रवण, रोहिणी, स्वाति।

अमृत सिद्धि योग

वार	नक्षत्र
रवि	हस्त
सोम	मृगशिरा
मङ्गल	अश्विनी
बुध	अनुराधा
गुरु	पुष्य
शुक्र	रेवती
शनि	रोहिणी

सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024 – 2025 ई०

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
7 अप्रैल	12:58	8 अप्रैल	सू.उ.	30 जून	7:34	1 जुलाई	सू.उ.
9 अप्रैल	7:32	10 अप्रैल	5:07	2 जुलाई	सू.उ.	3 जुलाई	4:40
11 अप्रैल	3:06	11 अप्रैल	सू.उ.	3 जुलाई	सू.उ.	4 जुलाई	सू.उ.
16 अप्रैल	3:06	16 अप्रैल	सू.उ.	6 जुलाई	4:07	6 जुलाई	सू.उ.
21 अप्रैल	सू.उ.	22 अप्रैल	सू.उ.	7 जुलाई	सू.उ.	8 जुलाई	6:03
25 अप्रैल	26:24	27 अप्रैल	3:40	9 जुलाई	सू.उ.	9 जुलाई	7:53
28 अप्रैल	सू.उ.	29 अप्रैल	4:49	17 जुलाई	सू.उ.	18 जुलाई	3:13
5 मई	सू.उ.	5 मई	19:57	21 जुलाई	सू.उ.	21 जुलाई	24:14
7 मई	सू.उ.	7 मई	15:32	22 जुलाई	सू.उ.	22 जुलाई	22:21
8 मई	13:34	9 मई	सू.उ.	26 जुलाई	14:30	27 जुलाई	सू.उ.
13 मई	11:24	14 मई	सू.उ.	28 जुलाई	सू.उ.	28 जुलाई	11:48
14 मई	13:05	15 मई	सू.उ.	30 जुलाई	सू.उ.	30 जुलाई	10:23
19 मई	सू.उ.	20 मई	3:16	31 जुलाई	सू.उ.	1 अगस्त	सू.उ.
23 मई	9:15	24 मई	10:10	2 अगस्त	10:59	3 अगस्त	सू.उ.
26 मई	सू.उ.	26 मई	10:36	4 अगस्त	सू.उ.	4 अगस्त	13:26
2 जून	25:40	3 जून	सू.उ.	11 अगस्त	5:49	11 अगस्त	सू.उ.
4 जून	22:35	6 जून	सू.उ.	14 अगस्त	सू.उ.	14 अगस्त	12:13
9 जून	20:21	10 जून	21:40	18 अगस्त	सू.उ.	18 अगस्त	10:15
11 जून	सू.उ.	11 जून	23:39	19 अगस्त	सू.उ.	19 अगस्त	8:10
16 जून	सू.उ.	16 जून	11:13	22 अगस्त	22:06	24 अगस्त	सू.उ.
19 जून	17:23	20 जून	18:10	26 अगस्त	15:55	27 अगस्त	सू.उ.
23 जून	17:04	24 जून	सू.उ.	28 अगस्त	सू.उ.	28 अगस्त	15:53
24 जून	15:54	25 जून	सू.उ.	29 अगस्त	16:40	30 अगस्त	17:56

सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024 – 2025 ई०

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
7 सितंबर	12:34	8 सितंबर	सू.उ.
9 सितंबर	18:4	10 सितंबर	सू.उ.
14 सितंबर	20:33	15 सितंबर	सू.उ.
19 सितंबर	8:04	20 सितंबर	26:43
23 सितंबर	सू.उ.	24 सितंबर	सू.उ.
26 सितंबर	सू.उ.	27 सितंबर	सू.उ.
2 अक्टूबर	12:23	3 अक्टूबर	सू.उ.
5 अक्टूबर	सू.उ.	5 अक्टूबर	21:33
7 अक्टूबर	सू.उ.	7 अक्टूबर	26:25
12 अक्टूबर	5:25	13 अक्टूबर	4:28
15 अक्टूबर	22:9	16 अक्टूबर	सू.उ.
17 अक्टूबर	सू.उ.	18 अक्टूबर	13:26
21 अक्टूबर	सू.उ.	22 अक्टूबर	5:51
24 अक्टूबर	सू.उ.	25 अक्टूबर	सू.उ.
30 अक्टूबर	सू.उ.	30 अक्टूबर	21:44
4 नवम्बर	सू.उ.	4 नवम्बर	8:04
8 नवम्बर	12:03	9 नवम्बर	11:48
12 नवम्बर	7:52	13 नवम्बर	5:40
14 नवम्बर	सू.उ.	14 नवम्बर	24:33
16 नवम्बर	19:28	17 नवम्बर	सू.उ.
18 नवम्बर	सू.उ.	18 नवम्बर	15:49
21 नवम्बर	सू.उ.	21 नवम्बर	15:36
24 नवम्बर	22:17	25 नवम्बर	सू.उ.

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
6 दिसं.	सू.उ.	6 दिसं.	17:19
10 दिसं.	सू.उ.	10 दिसं.	13:30
12 दिसं.	सू.उ.	12 दिसं.	9:53
14 दिसं.	सू.उ.	15 दिसं.	3:55
22 दिसं.	सू.उ.	23 दिसं.	सू.उ.
27 दिसं.	20:29	28 दिसं.	सू.उ.
29 दिसं.	23:22	30 दिसं.	सू.उ.
(सन् 2025 ई. में)			
5 जनवरी	20:18	6 जनवरी	सू.उ.
7 जनवरी	17:50	8 जनवरी	सू.उ.
11 जनवरी	सू.उ.	11 जनवरी	12:29
19 जनवरी	सू.उ.	20 जनवरी	सू.उ.
24 जनवरी	5:08	25 जनवरी	7:08
26 जनवरी	8:26	27 जनवरी	सू.उ.
2 फरवरी	सू.उ.	2 फरवरी	24:53
4 फरवरी	सू.उ.	4 फरवरी	21:50
5 फरवरी	20:33	6 फरवरी	सू.उ.
10 फरवरी	18:01	11 फरवरी	सू.उ.
11 फरवरी	18:34	12 फरवरी	सू.उ.
16 फरवरी	सू.उ.	17 फरवरी	4:31
20 फरवरी	13:30	21 फरवरी	15:54
23 फरवरी	सू.उ.	23 फरवरी	18:43

सर्वार्थ सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2025 ई॰

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
2 मार्च	सू.उ.	2 मार्च	9:00	16 मार्च	सू.उ.	16 मार्च	11:45
3 मार्च	6:39	3 मार्च	सू.उ.	19 मार्च	20:50	20 मार्च	23:32
4 मार्च	26:38	6 मार्च	सू.उ.	24 मार्च	4:18	24 मार्च	सू.उ.
9 मार्च	23:55	10 मार्च	24:52	25 मार्च	4:27	25 मार्च	सू.उ.
11 मार्च	सू.उ.	11 मार्च	26:16				

✻ गुप्त नवरात्रि ✻

आषाढ़ (जून - जुलाई) तथा माघ (जनवरी - फरवरी) मास की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाली नवरात्रि को गुप्त नवरात्रि अथवा गायत्री नवरात्रि भी कहते हैं। इसे मुख्य रूप से हिन्दीभाषी प्रान्त में मनाया जाता है। उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश की मातायें इन नवरात्रों में व्रत उपवास आदि का पालन करती हैं। सभी उपासकों में भी माँ वाराही के उपासकों के लिये इन नवरात्र का महत्व मुख्य रूप से विशेष ही होता है।

हिमाचल प्रदेश में इन्हें गुह्य नवरात्र के नाम से भी जाना जाता है। विशेष अनुष्ठान, जप, पूजन तथा काम्य प्रयोगों के लिये ये नवरात्र श्रेष्ठ माने गये हैं।

✻ कलंक चौथ चन्द्रदर्शन दोषनिवारक मन्त्र ✻

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक! मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥

हे सुंदर सलोने कुमार! इस मणि के लिये सिंह ने प्रसेन को मारा हैं और जाम्बवन्त ने उस सिंह का संहार किया हैं।अतः तुम रो मत। अब इस स्यमंतक मणि पर तुम्हारा ही अधिकार हैं।

अमृत सिद्धि योग का प्रारम्भ व समाप्ति काल
विक्रम सम्वत् 2081, सन् 2024–2024 ई०

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
9 अप्रैल	7:32	10 अप्रैल	5:07
21 अप्रैल	17:08	22 अप्रैल	सू.उ.
7 मई	सू.उ.	7 मई	15:32
19 मई	सू.उ.	20 मई	3:16
16 जून	सू.उ.	16 जून	11:33
19 जून	17:23	20 जून	सू.उ.
17 जुलाई	सू.उ.	18 जुलाई	3:13
26 जुलाई	14:30	27 जुलाई	सू.उ.
14 अगस्त	सू.उ.	14 अगस्त	12:13
23 अगस्त	सू.उ.	23 अगस्त	19:54
23 सितं.	22:08	24 सितं.	सू.उ.
26 सितं.	23:34	27 सितं.	सू.उ.
21 अक्टू.	6:51	22 अक्टू.	5:51

दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
24 अक्टू.	सू.उ.	25 अक्टू.	सू.उ.
16 नवं.	19:28	17 नवं.	सू.उ.
18 नवं.	सू.उ.	18 नवं.	15:49
21 नवं.	सू.उ.	21 नवं.	15:36
14 दिसं.	सू.उ.	15 दिसं.	3:55
(सन् 2025 ई. में)			
7 जनवरी	17:50	8 जनवरी	सू.उ.
11 जनवरी	सू.उ.	11 जनवरी	12:29
19 जनवरी	17:30	20 जनवरी	सू.उ.
4 फरवरी	सू.उ.	4 फरवरी	21:50
16 फरवरी	सू.उ.	17 फरवरी	4:31
16 मार्च	सू.उ.	16 मार्च	11:45
19 मार्च	20:50	20 मार्च	सू.उ.

✻ अमृत सिद्धि योग ✻

कुछ विद्वानों के मतानुसार सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अमृत सिद्धि योग के संयोग से रविवार से शनिवार तक (क्रमशः) 5,6,7,8,9,10,11 तिथियाँ एवं प्रारम्भ की 6 घड़ियाँ विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई है।

❊ गण्डमूल के नक्षत्र ❊

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती
पिता को भय	शान्ति से शुभ	माता को नेष्ट	बडे भ्राता को कष्ट	पितृ नाश	राज्य सम्मान
सुख ऐश्वर्य	धन नाश	पितृभय	छोटे भाई को कष्ट	मातृ नाश	मन्त्रित्व प्राप्ति
मन्त्री पद	मातृ नाश	सुख	मातृ नाश	धन नाश	धन सुख प्राप्ति
राज्य सम्मान	पितृ नाश	विद्या	सुख का नाश	शान्ति से शुभ	अनेक कष्ट

ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं तथा इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक माता, पिता कुल या अपने शरीर को नष्ट करता हैं। स्वयं का शरीर नष्ट न हो तो धन वैभव, ऐश्वर्य हाथी, घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का 27 दिन तक पिता मुख न देखें। प्रसूति स्नान के पश्चात् शुभ मुहूर्त में गौ, स्वर्ण दान आदि शान्ति के पश्चात् ही शुभ वेला में बालक का मुख देखें।

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल
वि.सं. 2081, 9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 ई. तक

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
8 अप्रैल	10:13	10 अप्रैल	5:07	18 जुलाई	3:13	20 जुलाई	2:55
17 अप्रैल	5:16	19 अप्रैल	10:57	26 जुलाई	14:30	28 जुलाई	11:48
27 अप्रैल	3:40	29 अप्रैल	4:49	4 अगस्त	13:26	6 अगस्त	17:44
5 मई	19:57	7 मई	15:32	14 अगस्त	12:13	16 अगस्त	12:44
14 मई	13:05	16 मई	18:14	22 अगस्त	22:06	24 अगस्त	18:06
24 मई	10:10	26 मई	10:36	31 अगस्त	19:40	2 सितम्बर	24:20
2 जून	3:16	3 जून	24:05	10 सितम्बर	20:04	12 सितम्बर	21:53
10 जून	21:40	12 जून	26:12	19 सितम्बर	8:04	21 सितम्बर	2:43
20 जून	18:10	22 जून	17:54	28 सितम्बर	1:21	30 सितम्बर	6:19
29 जून	8:49	1 जुलाई	6:26	8 अक्टूबर	2:25	10 अक्टूबर	5:15
8 जुलाई	6:03	10 जुलाई	10:15	16 अक्टूबर	19:18	18 अक्टूबर	13:26

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल
वि.सं. 2081, 9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 ई. तक

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
25 अक्टूबर	7:40	27 अक्टूबर	12:24
4 नवम्बर	8:04	6 नवम्बर	11:00
13 नवम्बर	5:40	14 नवम्बर	24:33
21 नवम्बर	15:36	23 नवम्बर	19:27
1 दिसम्बर	14:24	3 दिसम्बर	16:42
10 दिसम्बर	13:30	12 दिसम्बर	9:53
18 दिसम्बर	24:59	21 दिसम्बर	3:47
28 दिसम्बर	22:13	30 दिसम्बर	23:58

(सन् 2025 ई.)			
6 जनवरी	19:07	8 जनवरी	16:30
15 जनवरी	10:28	17 जनवरी	12:45
25 जनवरी	7:08	27 जनवरी	9:02
2 फरवरी	24:53	4 फरवरी	21:50
11 फरवरी	18:34	13 फरवरी	21:07
21 फरवरी	15:54	23 फरवरी	18:43
2 मार्च	9:00	4 मार्च	4:30
10 मार्च	24:52	13 मार्च	4:06
20 मार्च	23:32	23 मार्च	3:24
29 मार्च	19:27	31 मार्च	13:45

शनि की साढ़ेसाती, ढ़ैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार वि.सं. 2081

गतवर्ष से (17 जनवरी 2023 ई.) **कुम्भ राशि** में संचरणशील **शनि-देव** आगामी वि. संवत् 2081 **(9 अप्रैल 2024 ई. से 29 मार्च 2025 ई. तक)** के लगभग सम्पूर्ण कालावधि में **कुम्भ राशि** में ही संचार करेंगे।

ता. 29 जून, 2024 ई. को कुम्भ राशि में ही वक्री होकर 15 नवम्बर, 2024 ई. से मार्गी होकर संचार संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह जब किसी राशि में गोचरवश वक्री होकर संचार करते हैं, तो और भी अधिक क्रूर एवं अशुभफलदायक बन जाते हैं, जबकि गुरु, शुक्र आदि सौम्य ग्रह स्व/मित्र राशि में वक्री होने पर और भी अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं-

यदा क्रूर ग्रहो वक्री अतिचारी तु सौम्यकः ।
पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्यं विग्रहम्॥

फलस्वरूप शनि जब गोचरवश वक्री अवस्था में संचार करेंगे, तो जातक/जातिका को मानसिक व शारीरिक कष्ट, आर्थिक परेशानियाँ व उथल-पुथल, रोगादि प्रकट होने लगते हैं। समाज में भी कहीं राजनीतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महँगाई,

राजनैतिक उलट-फेर, क्लिष्ट रोग-भय, उपद्रव, हिंसक घटनायें, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, दुर्भिष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनता हैं।

शनि संचार फल - शनि के राशि परिवर्तन होने पर मेषादि विभिन्न राशियों पर उसका प्रभाव अलग-अलग होता है, जिसका वर्णन नीचे कोष्टक में दिया गया है।

❊ कुम्भ राशि में शनि का गोचर फल – सं.2081 ❊

मेष (लौहपाद)-एकादशस्थ शनि यद्यपि शुभ फलदायक होता है। व्यवसाय में वृद्धि तथा कार्यों में कुछ सफलता प्राप्त होती रहेगी। परन्तु इस राशि पर शनि की नीच दृष्टि तथा पाया भी लौह होने से भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएँ रहें। ता.20 अक्टूबर से 20 जनवरी 2025 ई० तक राशिस्वामी मंगल की शनि पर विशेष शत्रु दृष्टि रहने से निकटस्थ सम्बन्धियों से तनाव, क्रोध व शरीर कष्ट रहे।

वृष (ताम्रपाद)-दशमस्थ शनि शुभ है। संघर्ष एवं परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। पाया ताम्र होने से भी परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार होता जाएगा। आकस्मिक धन लाभ तथा भूमि-वाहनादि सुखों में वृद्धि होगी।

मिथुन (सुवर्णपाद)-नवमस्थ शनि बाधाकारक हैं पारिवारिक तनाव एवं उलझनें बढ़ेंगी। बन्धुओं से विरोध तथा संघर्षपूर्ण परिस्थितियां रहेगी। इस राशि पर शनि का पाया सुवर्ण होने से भी निकट-बन्धुओं से मतभेद पैदा हों। सितम्बर-अक्टूबर में बुध उच्चस्थ रहने से कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी।

कर्क (रजतपाद)-राशि से शनि अष्टमस्थ (ढैय्या) होने से अनावश्यक खर्च, कार्यों में विघ्न-बाधाएं एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा। गृह-कलह, शारीरिक कष्ट, दुर्घटनादि के प्रति सतर्क रहें। परन्तु शनि का पाया चाँदी होने से बीच-बीच में धन लाभ पदोन्नति व विदेश-भ्रमण के चाँस बनेंगे।

सिंह (लौहपाद)- सप्तमस्थ शनि पूज्य है। शनि की विशेष शत्रु दृष्टि रहने से मानसिक तनाव, क्रोध अधिक, कार्य-व्यवसाय में संघर्ष तथा हानि रहेगी। शनि का पाया भी लौह होने से धन-हानि, बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी तथा शत्रु हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे।

कन्या (ताम्रपाद)-षष्ठस्थ शनि अशुभ है, परन्तु शनि का पाया ताम्र (ताँबा) होने से बाधाओं के साथ-साथ कार्यों में आंशिक लाभ एवं सफलता प्राप्त होगी। सम्बन्धियों से अनुकूलता व गृह में शुभ कार्य सम्पन्न होंगे। बीच-बीच में स्वास्थ्य कष्ट, धन-हानि व अनावश्यक खर्च भी बढ़ेंगे।

तुला (रजतपाद)-राशि से शनि पंचमस्थ होने से पूज्य रहेगा। कारोबार में कुछ अस्थिरता के हालात रहेंगे। वृथा कलह तथा बन्धुओं से विरोध रहे। परन्तु शनि का पाया रजत (चाँदी) होने से धन लाभ, पदोन्नति, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि व कार्यों में सफलता के योग हैं। ता. 1 मई के बाद स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

वृश्चिक (सुवर्णपाद)-चतुर्थस्थ शनि होने से शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। कार्य-व्यवसाय अथवा निवास स्थान में कुछ परिवर्तन की योजना बनेगी। अप्रैल के बाद धर्म-कर्म की भी प्रवृत्ति बढ़ेगी। शनि का पाया सुवर्ण होने से संघर्ष अधिक व आय सम्बन्धी चिन्ता बनी रहे व बन्धु विरोध भी रहे।

धनु (लौहपाद)-तृतीयस्थ शनि शुभ है। कठिन समस्याओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु शनि-पाया लौह होने से मानसिक तनाव व आशाओं में विफलताएं रहें। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता व व्यय भी अधिक रहे।

मकर (सुवर्णपाद)-शनि द्वितीयस्थ रहने से शनि-साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव रहेगा। पारिवारिक उलझनें माता को कष्ट, स्वयं को भी स्वास्थ्य-कष्ट, व्यवसाय में लाभ कम रहे। शनि-पाया भी सुवर्ण होने से धन लाभ अल्प तथा सोची योजनाओं के क्रियान्वयन में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी।

कुम्भ (ताम्रपाद)-लग्नस्थ शनि (साढ़ेसाती) पूज्य है। निकट बन्धुओं से वृथा कलह, व्यवसाय एवं धन लाभ प्राप्ति में रुकावटें उत्पन्न होंगी। शरीर कष्ट व चिन्ता बढ़ेगी। परन्तु शनि-पाया ताम्र होने से प्रगतिपद योजनाएं बनें, अकस्मात् धन लाभ तथा परिवार में मंगल कार्य भी सम्पन्न हो।

मीन (रजतपाद)-शनि द्वादशस्थ (साढ़ेसाती) अशुभ है। पारिवारिक एवं व्यवसायिक जीवन में बड़ी उथल-पुथल वाली परिस्थितियां बनेंगी। परन्तु इस राशि पर शनि पाया चाँदी होने से अत्यधिक संघर्ष व कठिनाइयों के बावजूद मनोकामनाओं की पूर्त्ति बिगड़े कार्यों में सुधार तथा आकस्मिक धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

पाद (पाया) फल विचार

लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्॥

सुवर्ण पाया हो तो जातक को उस अवधि में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ता हैं। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें अधिक रहेंगी। शत्रु एवं रोग भय होता हैं।

रजत पाया हो तो जातक को गत किये गये प्रयासों में धीरे धीरे सफलता मिलती है। आकस्मिक धन-लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, स्त्री-सन्तान व भूमि वाहनादि सुख होता है।

ताम्र का पाया हो तो जातक को कार्य व्यवसाय में लाभ व उन्नति। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों का सम्पर्क होता है। उच्च-विद्या में सफलता मिलती है। विवाह एवं पारिवारिक सुख मिलता है।

लौह का पाया हो तो जातक को आर्थिक व पारिवारिक परेशानियाँ अधिक होती है। स्वास्थ्य में गड़बड़, तनाव एवं उलझनें बढ़ती हैं। दुर्घटना से चोटादि का भय रहता हैं।

✻ शनि शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय ✻

शनि कि साढ़ेसाती ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजादान, लौहपात्र में तैल दान, शनि स्तोत्र का पाठ करना भी श्रेयस्कर है।

शनि का बीज मन्त्र - "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

वैदिक मन्त्र - "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये,
शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॐ"।

शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच

ॐ नमस्ते कोण-संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते॥1॥
नमस्ते रौद्र-देहाय, नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यम-संज्ञाय, नमस्ते सौरये विभो॥2॥
नमस्ते मन्द-संज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश, दीनाय प्रणताय च॥3॥

इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढ़ेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती।

✻ नामाक्षरानुसार नक्षत्र राशिज्ञान चक्र ✻

मेष	**अश्विनी** चू-चे-चो-ला	**भरणी** ली-लू-ले-लो	**कृत्तिका 1 पाद** अ-0-0-0
वृष	**कृत्तिका 3 पाद** 0-ई-उ-ए	**रोहिणी** ओ-वा-वी-वू	**मृगशिरा आधा** वे-वो-0-0
मिथुन	**मृगशिरा आधा** 0-0-क-की	**आर्द्रा** कु-घ-ङ-छ	**पुनर्वसु 3 पाद** के-को-ह-0
कर्क	**पुनर्वसु** 0-0-0-ही	**पुष्य** हू-हे-हो-डा	**आश्लेषा** डी-डू-डे-डो
सिंह	**मघा** मा-मी-मू-मे	**पूर्वफाल्गुनी** मो-टा-टी-टू	**उत्तरफाल्गुनी** टे-0-0-0
कन्या	**उत्तरफाल्गुनी** 0-टो-पा-पी	**हस्त** पू-ष-ण-ठ	**चित्रा** पे-पो-0-0
तुला	**चित्रा** 0-0-रा-री	**स्वाति** रू-रे-रो-ता	**विशाखा** ती-तू-ते-0
वृश्चिक	**विशाखा** 0-0-0-तो	**अनुराधा** ना-नी-नू-ने	**ज्येष्ठा** नो-या-यी-यू
धनु	**मूल** ये-यो-भा-भी	**पूर्वाषाढ़ा** भू-धा-फ-ढ	**उत्तराषाढ़ा** भे-0-0-0
मकर	**उत्तराषाढ़ा** 0-भो-जा-जी	**श्रवण** खी-खू-खे-खो	**धनिष्ठा** गा-गी-0-0
कुम्भ	**धनिष्ठा** 0-0-गू-गे	**शतभिषा** गो-सा-सी-सू	**पूर्वभाद्रपदा** से-सो-दा-0
मीन	**पूर्वभाद्रपदा** 0-0-0-दी	**उत्तरभाद्रपदा** दू-थ-झ-ञ	**रेवती** दो-दो-चा-ची

✻ यात्रा विचार प्रकरण ✻

दिक्शूल

दिशा	पूर्व	उत्तर	पश्चिम	दक्षिण	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय
निषिद्ध तिथि	1, 9	2, 10	6, 14	5, 13	8,30	7, 15	4, 3	3, 11
निषिद्ध वार	सोम शनि	मङ्गल गुरु	रवि शुक्र	गुरु	गुरु शनि	मङ्गल	शनि शुक्र	गुरु सोम
निषिद्ध नक्षत्र	श्रवण ज्येष्ठा	हस्त उत्तरा फाल्गुनी	रोहिणी पुण्य	धनि. शत. रेवती पू. भा. उ. भा. अश्विनी	-	-	-	-
निषिद्ध समय	उषा काल	अर्ध रात्रि	गोधूलि (संध्या-काल)	मध्याह्न	-	-	-	-

✻ राहु वास चक्र ✻

सूर्य संक्रान्ति मास	वृश्चिक धनु मकर	मेष कुम्भ मीन	वृष मिथुन कर्क	सिंह कन्या तुला
राहु की वास दिशा	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चिम दिशा	उत्तर दिशा

✻ दिक्शूल परिहार ✻

1. यदि यात्रा मुहूर्त में विलम्ब अथवा समय का उलङ्घन हो तो ब्राह्मण-प्रस्थान समय में जनेऊ, माला; क्षत्रिय-अस्त्र, शस्त्र; वैश्य-मधु, घी, रुपया, पैसा; शूद्र-फल को अपने वस्त्र में बाँध किसी के घर या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रख दें, अथवा अपनी किसी प्रिय वस्तु को रख दें।

2. आवश्यकता पडने पर रविवार को दलिया, घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर व दूध पीकर, मङ्गलवार को गुड खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौ खाकर व दूध पीकर, शनिवार को अदरक या उडद खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

✻ यात्रा में चन्द्रमा विचार ✻

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
राशि (चन्द्रमा की)	मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चिक मीन

✻ सूर्योदय से चौघड़िया दिन के प्रति अंश में यात्रा का फल ✻

घड़ी:वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
03:45	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
07:30	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
11:15	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
15:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
18:45	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
22:30	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
26:15	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
30:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

✻ सूर्यास्त से चौघड़िया रात्रि के प्रति अंश में यात्रा का फल ✻

घड़ी:वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
03:45	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
11:15	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
15:00	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
18:45	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
22:30	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
26:15	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
30:00	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

नियम - चौघड़िया ज्ञात करने के लिये उस दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को 8 भागों में विभाजित करें तथा प्रथम अंश को सूर्योदय के समय के साथ जोडने से पहले चौघड़िये का समय प्राप्त होगा। उसके बाद उस समय में दो अंश जोड़ने से दूसरे चौघड़िये का काल प्राप्त होगा।

उदाहरण - यदि रविवार को सूर्योदय से सूर्यास्त का समय 12 घण्टे का हैं। तो उसका 8वाँ अंश 1.5 घण्टे का होगा और सर्योदय प्रातः 6 बजे हो रहा हो तो प्रथम चौघड़िया “उद्वेग” प्रातः 6 बजे से 7.30 बजे तक होगा। उसी में दूसरा अंश जोडने से 7.30 बजे से 9 बजे तक का दूसरा चौघड़िया “चर” होगा। ऐसे ही रात के चौघड़िये के लिये सूर्यास्त के गणना समझनी चाहिये।

पाठकों की सुविधार्थ यहाँ प्रत्येक चौघड़िये की घड़ी में भी गणना दी गयी हैं।

4 श्वास (24 सेकण्ड)	-	1 पल
60 पल (24 मिनट)	-	1 घड़ी
2.5 घड़ी	-	1 घण्टा
60 घड़ी (24 घण्टे)	-	1 दिवस

इस तरह प्रत्येक दिन और रात मिलाकर 60 घड़ी के होते हैं।

✻ भद्रा लोक वास ✻

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा स्वर्ग लोक में; कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से पाताल में; कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन का चन्द्रमा होने से मर्त्यलोक में निवास करती है।

"स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं, पाताले च धनागमः
मृत्युलोके यदा भद्रा, कार्यसिद्धिस्तदा नहि॥"

अतः मृत्युलोक की भद्रा ही अशुभ होती है।

शुक्लपक्षे वृश्चिकाभद्रा, कृष्णपक्षे भुजङ्गमा।

शुक्लपक्ष की भद्रा का नाम वृश्चिकी है, कृष्णपक्ष की भद्रा का नाम सर्पिणी है।
मतान्तर से दिन की भद्रा सर्पिणी, रात्रि की भद्रा वृश्चिकी है। वृश्चिकी भद्रा का पुच्छ भाग, सर्पिणी भद्रा का मुख भाग नहीं लेना चाहिए।

दिवा भद्रा रात्रौ, रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाऽविष्टिकृतो दोषो न भवेत्सर्व सौख्यदः॥

यदि दिन की भद्रा रात्रि में समाप्त हो, रात्रि की भद्रा दिन में समाप्त हो, तो भद्रा दोषकारक न होकर सौख्यकारक होती है।

(स्व.) = स्वर्गलोक	(पा.) = पाताललोक	(मृ.) = मृत्युलोक

✻ भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (2024) ✻

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
12 अप्रैल (स्व.)	2:08	12 अप्रैल	13:12	15 मई (मृ.)	4:20	15 मई	17:22
15 अप्रैल (स्व.)	12:12	16 अप्रैल	0:49	19 मई (पा.)	0:37	19 मई	13:51
19 अप्रैल (मृ.)	6:49	19 अप्रैल	20:05	22 मई (पा.)	18:48	23 मई	7:06
23 अप्रैल (पा.)	3:26	23 अप्रैल	16:23	23 मई (स्व.)	2:56	23 मई	7:09
26 अप्रैल (स्व.)	20:03	27 अप्रैल	8:19	26 मई (पा.)	6:33	26 मई	18:07
30 अप्रैल (पा.)	7:06	30 अप्रैल	18:26	29 मई (पा.)	13:40	29 मई	20:06
3 मई (मृ.)	12:40	3 मई	23:25	29 मई (मृ.)	20:06	30 मई	0:42
6 मई (मृ.)	14:41	6 मई	17:43	1 जून (मृ.)	18:15	2 जून	5:05
6 मई (स्व.)	17:43	7 मई	1:11	4 जून (स्व.)	22:02	5 जून	8:59
11 मई (स्व.)	14:28	12 मई	2:05	10 जून (मृ.)	4:01	10 जून	16:16

❋ भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (2024) ❋

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल		प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
13 जून (मृ.)	21:34	14 जून	10:50	17 सितं.	11:45	17 सितम्बर	21:55
17 जून (पा.)	17:35	18 जून	6:25	20 सितं. (स्व.)	10:58	20 सितम्बर	21:16
21 जून (स्व.)	7:32	21 जून	19:05	23 सितं. (स्व.)	13:51	24 सितम्बर	1:15
24 जून (पा.)	14:26	25 जून	1:24	27 सितं. (मृ.)	0:53	27 सितम्बर	13:21
27 जून (मृ.)	18:40	28 जून	5:34	30 सितं. (मृ.)	19:07	1 अक्टूबर	8:24
30 जून (स्व.)	23:24	1 जुलाई	10:27	6 अक्टू. (स्व.)	20:49	7 अक्टूबर	9:48
4 जुलाई (स्व.)	5:55	4 जुलाई	17:27	10 अक्टू. (पा.)	12:32	11 अक्टूबर	0:20
9 जुलाई (मृ.)	19:01	10 जुलाई	7:53	13 अक्टू. (मृ.)	19:56	14 अक्टूबर	6:42
13 जुलाई (पा.)	15:06	14 जुलाई	4:17	16 अक्टू. (मृ.)	20:41	17 अक्टूबर	6:49
17 जुलाई (स्व.)	8:49	17 जुलाई	21:03	19 अक्टू. (स्व.)	20:18	20 अक्टूबर	6:47
20 जुलाई (पा.)	18:00	21 जुलाई	4:54	23 अक्टू. (स्व.)	1:30	23 अक्टूबर	13:25
23 जुलाई (मृ.)	20:58	24 जुलाई	7:31	26 अक्टू. (मृ.)	16:24	27 अक्टूबर	5:24
26 जुलाई (मृ.)	23:31	27 जुलाई	10:26	30 अक्टू. (पा.)	13:16	31 अक्टूबर	2:35
30 जुलाई (स्व.)	5:21	30 जुलाई	16:45	5 नवम्बर (पा.)	11:51	6 नवम्बर	0:17
2 अगस्त (स्व.)	15:27	3 अगस्त	3:39	8 नवम्बर (पा.)	23:57	9 नवम्बर	11:22
8 अगस्त (पा.)	11:22	9 अगस्त	0:37	12 नवम्बर (मृ.)	5:26	12 नवम्बर	16:05
12 अगस्त (पा.)	7:56	12 अगस्त	20:44	15 नवं. (स्व.)	6:20	15 नवम्बर	16:40
15 अगस्त (पा.)	22:04	16 अगस्त	9:40	18 नवं. (स्व.)	8:02	18 नवम्बर	18:57
19 अगस्त (पा.)	3:05	19 अगस्त	13:31	21 नवं. (मृ.)	17:04	22 नवम्बर	5:36
22 अगस्त (मृ.)	3:27	22 अगस्त	13:47	25 नवं. (पा.)	11:41	26 नवम्बर	1:02
25 अगस्त (स्व.)	5:31	25 अगस्त	16:36	29 नवं. (पा.)	8:40	29 नवम्बर	21:35
28 अगस्त (स्व.)	13:27	29 अगस्त	1:20	5 दिसं. (पा.)	1:01	5 दिसम्बर	12:50
1 सितम्बर (मृ.)	3:41	1 सितम्बर	16:32	8 दिसं. (मृ.)	9:45	8 दिसम्बर	20:54
7 सितं. (पा.)	4:20	7 सितम्बर	17:38	11 दिसं. (स्व.)	14:27	12 दिसम्बर	1:10
10 सितं. (स्व.)	23:13	11 सितम्बर	11:30	14 दिसं. (स्व.)	16:59	15 दिसम्बर	3:46
14 सितं. (पा.)	9:37	14 सितम्बर	20:42	17 दिसं. (मृ.)	22:32	18 दिसम्बर	10:07

❋ भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (2024–2025) ❋

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
21 दिसं. (मृ.)	12:22	22 दिसम्बर	2:10
25 दिसं. (पा.)	9:12	25 दिसम्बर	22:30
29 दिसं. (स्व.)	3:33	29 दिसम्बर	15:48
सन् 2025 ई०			
3 जनवरी (मृ.)	12:25	3 जनवरी	23:40
6 जनवरी (मृ.)	18:24	7 जनवरी	5:26
9 जनवरी (स्व.)	23:22	10 जनवरी	10:20
13 जन. (स्व.)	5:03	13 जनवरी	16:30
16 जन. (मृ.)	15:46	17 जनवरी	4:07
20 जन. (पा.)	9:54	20 जनवरी	23:20
24 जन. (स्व.)	6:32	24 जनवरी	19:26
27 जन. (पा.)	20:35	28 जनवरी	8:06
1 फरवरी (मृ.)	22:27	2 फरवरी	9:15
5 फरवरी (स्व.)	2:31	5 फरवरी	13:34

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं. मि.	दिनाङ्क	घं. मि.
8 फरवरी (स्व.)	8:52	8 फरवरी	20:16
11 फरवरी (मृ.)	18:56	12 फरवरी	7:10
15 फरवरी (पा.)	10:53	15 फरवरी	23:53
19 फरवरी (पा.)	7:33	19 फरवरी	20:46
23 फरवरी (पा.)	1:38	23 फरवरी	13:56
26 फरवरी (पा.)	11:09	26 फरवरी	22:02
3 मार्च (स्व.)	7:33	3 मार्च	18:03
6 मार्च (स्व.)	10:51	6 मार्च	22:05
9 मार्च (मृ.)	19:45	10 मार्च	7:45
13 मार्च (मृ.)	10:36	13 मार्च	23:31
17 मार्च (पा.)	6:17	17 मार्च	19:34
21 मार्च (स्व.)	2:46	21 मार्च	15:35
24 मार्च (पा.)	17:23	25 मार्च	5:06
27 मार्च (मृ.)	23:04	28 मार्च	9:30

❋ यज्ञोपवीत धारण करने एवं त्यागने का मन्त्र ❋

❋ यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र ❋

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं परस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवितं बलमस्तु तेजः॥

❋ जीर्ण यज्ञोपवीत त्यागने का मन्त्र ❋

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्॥

ॐ

✻ पञ्चक नक्षत्र विचार ✻

वासवोत्तर-दलादि पंचके याम्यदिग्गमनं गृहगोपनम्।
प्रेतदाह-तृण-काष-संचयं शय्यका-वितरणं च वर्जयेत्॥

पञ्चक नक्षत्रों में काष्ठ छेदन (लकड़ी तोड़ना), तिनके तोड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतादि दाहसंस्कार, स्तम्भारोपन, तृण, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि का संचय, दुकान, मकान या झोपड़ी आदि की छत डालना, चारपाई, खाट, चटाई आदि बुनना, बैठक की गद्दियों का निर्माण करना त्याज्य माना गया है। पञ्चकों मे हानि, लाभ एवं व्याधि आदि पाँच गुणा, त्रिपुष्कर में त्रिगुणा तथा द्विपुष्कर में दुगुना लाभ या हानि की सम्भावना होती है। विधिवत् नक्षत्र पूजा, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शुभप्रद होता है। प्रेतदाह अथवा किसी अन्य कारण से हानि की आशंका हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान् ब्राह्मण से पञ्चक शान्ति करवाने का विधान है।

ध्यान रहे, मुहूर्त ग्रन्थों में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू प्रवेश, उपनयन आदि तथा रक्षाबन्धन, भैय्यादूज आदि पर्वों में पञ्चक नक्षत्रों के निषेध के बारे में कहीं भी विचार नहीं किया जाता।

बृहद ज्योतिषानुसार तो धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपदा व रेवती नक्षत्र सभी कार्यों में सिद्धि प्रदायक एवं शुभ माने जाते हैं, जबकि पूर्वभाद्रपदा एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धिकारक माने गये हैं।

✻ पञ्चकारम्भ एवं समाप्तिकाल–संवत् 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 ई. तक)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
5 अप्रैल	7:13	9 अप्रैल	7:32
2 मई	14:33	6 मई	17:43
29 मई	20:06	2 जून	25:40
25 जून	25:49	30 जून	7:34
23 जुलाई	9:21	27 जुलाई	13:00
19 अगस्त	19:00	23 अगस्त	19:54
16 सितं.	5:45	20 सितं.	5:15
13 अक्टू.	15:44	17 अक्टू.	16:20

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
दिनाङ्क	घं.मि.	दिनाङ्क	घं.मि.
9 नवम्बर	23:28	14 नवम्बर	3:11
7 दिस.	5:07	11 दिस.	11:48
(सन् 2025 ई.)			
3 जनवरी	10:48	7 जनवरी	17:50
30 जनवरी	18:35	3 फरवरी	23:17
27 फरवरी	4:37	3 मार्च	6:39
26 मार्च	15:15	30 मार्च	16:35

✻ दीपावली (श्री महालक्ष्मी पूजन) 1 नवम्बर 2024 ई. ✻

प्रदोषव्यापिनी (सूर्यास्त के बाद त्रिमुहूर्त) कार्तिक अमावस्या के दिन ही दीपावली (महालक्ष्मी-पूजन) मनाने की शास्त्राज्ञा है। इसवर्ष (वि.सं. 2081 में) 31 अक्टूबर 2024 ई. के दिन कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी का समाप्तिकाल 15:53 है। अतः चतुर्दशी समाप्ति के साथ ही कार्तिक अमावस्या आरम्भ होकर अगले दिन (1 नवम्बर, शुक्रवार) सायं 18:17 तक व्याप्त है। **स्पष्ट है-**अगले दिन (1 नवम्बर) प्रदोषकाल में अमावस्या की व्याप्ति कम समय के लिये है। जबकि 31 अक्टूबर, 2024 ई. को अमावस्या पूर्णतया प्रदोष एवं निशीथकाल को व्याप्त कर रही है। **परन्तु फिर भी शास्त्रनिर्देशानुसार 'दीपावली पर्व' (महालक्ष्मी पूजन) 1 नवम्बर, शुक्रवार, 2024 ई. को ही मानना शास्त्रसम्मत होगा।**

निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, पुरुषार्थ-चिन्तामणि, तिथि-निर्णय आदि ग्रन्थों में दिये गये शास्त्रवचनों के अनुसार दोनों दिन प्रदोषकाल में अमावस्या की व्याप्ति कम या अधिक होने पर दूसरे दिन ही अर्थात् सूर्योदय से सूर्यास्त (प्रदोषव्यापिनी) वाली अमावस्याके दिन लक्ष्मीपूजन करना शास्त्रसम्मत होगा।

अतएव सभी शास्त्र-वचनों के मतानुसार 1 नवम्बर, 2024 ई., शुक्रवार को ही दीपावली पर्व तथा लक्ष्मीपूजन करना शास्त्रसम्मत होगा। सम्पूर्ण भारत में यह पर्व इसी दिन होगा।

विशेष कृत्य - इस दिन प्रातः ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर दैनिक कृत्यों से निवृत हो पितृगण तथा देवताओं का पूजन करना चाहिये। सम्भव हो तो दूध, दही और घृत से पितरों का पार्वण-श्राद्ध करना चाहिये। गोधूलि वेला में अथवा वृष, सिंह, वृश्चिक आदि स्थिर लग्न में श्रीगणेश, कलश, षोडशमातृका एवं ग्रहपूजनपूर्वक भगवती लक्ष्मी का षोडशोपचार-पूजन करना चाहिये। इसके अनन्तर महाकाली का दवात के रूप में, महासरस्वती का कलम, बही आदि के रूप में तथा कुबेर का तुला के रूप में सविधि पूजन करना चाहिये। इसी समय दीपपूजन कर यमराज तथा पितृगणों के निमित्त संकल्प दीपदान करना चाहिये। तदोपरान्त यथोलब्ध निशीथादि शुभ मुहूर्त्तों में मन्त्र-जप, यन्त्र-सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिये।

दीपावली वास्तव में पाँच पर्वों का महोत्सव माना जाता है, जिसकी व्याप्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) से लेकर कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भाई-दूज) तक रहती है। दीपावली के पर्व पर धन की प्रभूत प्राप्ति के लिए धन की अधिष्ठात्री धनदा भगवती

लक्ष्मी की समारोहपूर्वक आवाहन, पोडशोपचार सहित पूजा की जाती है। आगे दिए गए निर्दिष्ट शुभ कालों में किसी स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर आटा, हल्दी, अक्षत एवं पुष्पादि से अष्टदल कमल बनाकर श्रीलक्ष्मी का आवाहन एवं स्थापना करके देवी की विधिवत् पूजार्चना करनी चाहिए।

आवाहन मन्त्र-

'कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्। (श्रीसूक्तम्)

पूजा मन्त्र-ॐ गं गणपतये नमः॥ लक्ष्म्यै नमः॥ नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरेः प्रिया। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्॥' से लक्ष्मी की, **'एरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मा इन्द्राय ते नमः।'** मन्त्र से इन्द्र की और कुबेर की निम्न मन्त्र से पूजा करें-

कुबेराय नमः, 'धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च। भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादि सम्पदः॥' पूजन सामग्री में विभिन्न प्रकार की मिठाई, फल-पुष्पाक्षत, धूप, दीपादि सुगन्धित वस्तुएँ सम्मिलित करनी चाहिए। दीपावली पूजन में प्रदोष, निशीथ एवं महानिशीथ काल के अतिरिक्त चौघड़ियाँ मुहूर्त्त भी पूजन, बहि-खाता पूजन, कुबेर पूजा, जपादि अनुष्ठान की दृष्टि से विशेष प्रशस्त एवं शुभ माने जाते हैं-

प्रदोष काल- 1 नवम्बर, शुक्रवार को धर्मनिष्ठ लोग सूर्यास्त के बाद अल्पकालिक प्रदोषकाल-व्याप्त अमावस्या के बावजूद सायाह्नकाल से प्रदोषकाल समाप्ति तक (अर्थात् सूर्यास्त से आधा घण्टा पहले) अथवा सूर्यास्त (सायं 5 बजकर 26 मिनट) के बाद लगभग $2^{घं.}$-$24^{मिं.}$ (लगभग रात्रि 7 बजकर 50 मिनट) तक की कालावधि में निःसन्देह होकर लक्ष्मीपूजन कर सकते है। इसी काल में धर्म एवं गृहस्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बाँटना शुभ होगा।

निशीथ काल-1 नवम्बर, 2024 ई. को निशीथकाल रात्रि $23^{घं.}$-$40^{मिं.}$ से $24^{घं.}$-$33^{मिं.}$ तक रहेगा। इस अवधि में श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र तथा लक्ष्मी स्तोत्रादि मन्त्रों का जपानुष्ठान करना चाहिये।

महानिशीथ काल-रात्रि की इस अवधि में काली-उपासना, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि की क्रियाएं, विशेष काम्य प्रयोग, तन्त्र-अनुष्ठान, साधानायें एवं यज्ञादि किए जाते हैं। $24^{घं.}$-$34^{मिं.}$ से शुभ एवं अमृत चौघड़िया भी विशेष प्रशस्त रहेगा।

अथ संक्षिप्त–सन्ध्योपासना–विधिः

आचमन मन्त्र

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।
ॐ हृषीकेशाय नमः कहकर हस्त प्रक्षालन कर लेवें।

शरीरशुद्धि मन्त्र

ॐ अपवित्रःपवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

आसनशुद्धि का विनियोग

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।

मन्त्र

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

सन्ध्या का संकल्प

ॐ श्री विष्णुर्विष्णुर्विष्णुर्नमः परमात्मने तत्सत् श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वतन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माऽहं ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सन्ध्योपासनं करिष्ये।

अघमर्षणमन्त्रः

ॐ ऋतञ्च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

प्राणायाममन्त्रः

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

पापक्षयार्थमन्त्रः

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्यां पापमकर्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना। रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद् दुरितं मयि इदमहममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

मार्जनमन्त्रः

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः, ॐ ता न ऊर्जे दधातन, ॐ महेरणाय चक्षसे, ॐ यो वः शिवतमो रसः, ॐ तस्य भाजते ह नः, ॐ उशतीरिव मातरः, ॐ तस्मा अरङ्गमाम वः, ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ, ॐ आपो जनयथा च नः।

सूर्योपस्थानमन्त्रः

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्। ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतं भूयश्च शतात्॥

गायत्रीमन्त्रः

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

दैनिकतर्पणम्

देवतर्पणम्

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्	ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्
ॐ विष्णुस्तृप्यताम्	ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्
ॐ रूद्रस्तृप्यताम्	ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्
ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्	ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्
ॐ देवास्तृप्यन्ताम्	ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्

ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्	ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्
ॐ संवत्सराः सावयवास्तृप्यन्ताम्	ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्
ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्	ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्
ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्	ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्
ॐ नागास्तृप्यन्ताम्	ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्
ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्	ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्
ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्	ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्
ॐ सरितास्तृप्यन्ताम्	ॐ भूतग्रामाश्चतुर्विधास्तृप्यन्ताम्
ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्	
ॐ यज्ञास्तृप्यन्ताम्	

दिव्यमनुष्यतर्पणम्

ॐ सनकस्तृप्यताम्	ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्
ॐ सनातनस्तृप्यताम्	ॐ कपिलस्तृप्यताम्
ॐ आसुरिस्तृप्यताम्	ॐ बोढुस्तृप्यताम्
ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्	

मरीच्यादितर्पणम्

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्	ॐ अत्रिस्तृप्यताम्
ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्	ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्
ॐ पुलहस्तृप्यताम्	ॐ क्रतुस्तृप्यताम्
ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्	ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्
ॐ भृगुस्तृप्यताम्	ॐ नारदस्तृप्यताम्

पितृतर्पणम्

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् ॐ सोमस्तृप्यताम् ॐ यमस्तृप्यताम् ॐ अर्यमातृप्यताम्	ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम्
ॐ वसुरूषः पिता तृप्यताम् ॐ रुद्ररूपः पितामहस्तृप्यताम् ॐ आदित्यरूपः प्रपितामहस्तृप्यताम्	ॐ गायत्रीरूपा माता तृप्यताम् ॐ सावित्रीरूपा पितामही तृप्यताम् ॐ सरस्वतीरूपा प्रपितामही तृप्यताम्
ॐ मातामहस्तृप्यताम् ॐ प्रमातामहस्तृप्यताम् ॐ वृद्धप्रमातामहस्तृप्यताम्	

ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः।

सूर्यार्घ्यमन्त्रः

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥
अनेन तर्पणाख्येन कर्मणा श्रीशङ्करः प्रीयतां न मम॥

❋ देवपूजा सम्बन्ध में कुछ शास्त्रोक्त बातें ❋

एका मूर्तिर्न सम्पूज्या गृहिणा स्वेष्टमिच्छता।
अनेकमूर्तिसम्पन्नः सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥

कल्याण चाहने वाले गृहस्थी एक मूर्ति की पूजा न करें, अपितु अनेक देवमूर्ति की पूजा करें, इससे कामना पूर्ण होती है।

किन्तु -

गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्यं गणेशत्रितयं तथा।
शङ्खद्वयं तथा सूर्यो नार्च्यं शक्तित्रयं तथा॥
द्वे चक्रे द्वारकायास्तु शालग्रामशिलाद्वयम्।
तेषां तु पूजनेनैव उद्वेगं प्राप्नुयाद् गृहि॥ (पद्मपुराण)

घर में दो शिवलिङ्ग, तीन गणेश, दो शङ्ख, दो सूर्य, तीन दुर्गामूर्ति, दो गोमती चक्र और दो शालिग्राम की पूजा करने से गृहस्थ को अशान्ति मिलती हैं।

सम शालिग्राम (4,6,8 आदि) का पूजन करें, किन्तु सम में 2 शालिग्राम का पूजन तथा विषम शालिग्राम का पूजन निषिद्ध हैं। विषम में 1 शालिग्राम का पूजन कर सकते है।

प्रतिमा के प्रकार

शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती।
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टाविधा स्मृता॥ (श्रीमद्भागवत्)

शिला, लकड़ी, लोहा, लेप्य (पुती हुई), लेख्य (चित्रित) सिकता (रेती) मनोमयी (मानसिक कल्पित प्रतिमा) तथा माणिकी ये आठ प्रतिमाओं का प्रकार कहा है। निर्णय सिन्धुकार ने सुवर्ण, रजत, ताम्र, मृत्तिका, पाषाण, धातुयुक्त पीतल, कांसा और शुद्ध काष्ठ की प्रतिमा पूजा में उत्तम कही गयी है।

अङ्गुष्ठपर्वादाराभ्य वितस्तिं यावदेव तु।
गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शास्यते बुधैः॥ (निर्णयसिन्धु)

अंगुठे के पर्व से आरम्भ कर वितस्ति (प्रादेशमात्र - 12 अंगुल) परिमाण तक घर में प्रतिमा करें। उससे अधिक न करें, ऐसा शास्त्रकारों ने कहा है।

देवीपुराण में सात अंगुल से प्रारम्भ कर बारह अंगुल तक घरों में पूजा करने को कहा है।

प्रयोग पारिजात में व्यास जी ने कहा है कि प्रतिमा और रेशमी वस्त्रादि में लिखित यन्त्रों

को नित्य स्नान न करावें।

नाक्षतैरर्चयेत् विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम्।
न दुर्वया यजेद्देवीं बिल्वपत्रैश्च भास्करम्॥

अक्षत (चावल) से विष्णु का पूजन तथा तुलसी से गणेश, दुर्वा से दुर्गा तथा बिल्वपत्र से सूर्य का पूजन करना निषिद्ध है।

एकं गणाधिपे दद्याद्द्वे सूर्ये त्रीणि शङ्करे।
चत्वारि केशवे दद्यात्सप्ताश्वत्थे प्रदक्षिणाः॥

गणेश की एक, सूर्य की दो, शिव की तीन, विष्णु की चार, पीपल वृक्ष की सात प्रदक्षिणा करनी चाहिए। शिव प्रदक्षिणा में सोमसूत्र (जलहरी) को नहीं लांघना चाहिए।

तृणैः काष्ठैस्तथा पर्णैः पाषाणैर्लोष्ठकादिभिः।
अन्तर्धानं पुनः कृत्वा सोमसूत्रं तु लङ्घयेत्॥

तृण, काष्ठ, घास, पत्थरों तथा किसी भी तरह से ढका हो तो सोम सूत्र को लांघ सकते हैं।

गणेश तथा दुर्गा को छोड़कर, अन्य देवी देवताओं की एक प्रदक्षिणा नहीं करनी चाहिए।

नाङ्गुष्ठैर्मर्दयेद्देवं नाध: पुष्पैः समर्चयेत्।
कुशाग्रैर्न क्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत्॥

अङ्गुठे से देव प्रतिमा का मर्दन नही करना चाहिये। नीचे भूमि पर गिरे हुये पुष्प से देव पूजा नही करनी चाहिये। कुश के अग्रभाग से पानी नही छिड़कना चाहिये। यह सारे कार्य वज्रपात दोष के समान हैं।

देवताओं को तीन बार एवं पितरों को एकबार धोकर अक्षत चढ़ायें।

प्रदक्षिणा करने के नियम-

पदान्तरे पदं न्यस्य करौ चलनवर्जितौ।
स्तुतिर्वाचि हृदि ध्यानं चतुरङ्गं प्रदक्षिणम्॥

धीरे-धीरे पांव रखते हुए हाथ को चलन रहित कर, वाचिक स्तुति करते हुए हृदय में ध्यान से युक्त होकर चतुरङ्ग प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

स्थानभेद में जप की श्रेष्ठता -

गृहे चैकगुणः प्रोक्तो गोष्ठे शतगुणः स्मृतः।

पुण्यारण्ये तथा तीर्थे सहस्रगुणमुच्यते।
अयुतः पर्वते पुण्यं नद्यां लक्षगुणो जपे।
कोटिर्देवालये प्राप्ते चानन्तः शिवसन्निधौ॥

घर में जप करने से एक गुना, गौशाला में सौ गुना, पुण्यमय वन में तथा तीर्थस्थल में हजार गुना, पर्वत पर दस हजार, नदी तट पर लाख गुना, देवालय में करोड़ गुना तथा शिवालय मे अनन्त गुना पुण्य प्राप्त होता है।

घर में स्नान करते समय इस मन्त्र का प्रयोग करें

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
कुरुक्षेत्र गया गङ्गा प्रभास पुष्कराणि च।
एतानि पुण्यतीर्थानि स्नानकाले भवन्त्विह॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी सारी नदियाँ इस जल में समाहित हुई है, कुरुक्षेत्र, गया, गङ्गा, प्रभास, पुष्करादि तीर्थ यहाँ उपस्थित है। ऐसी भावना करते हुये स्नान करना चाहिये।

स्नान काल में गङ्गाजी की प्रार्थना-

विष्णु पादाब्द सम्भूते! गङ्गे त्रिपथगामिनि।
धर्म्मद्रवेति विख्याते! पापं मे हर जाह्नवि॥

तुलसी स्तुति-

देवैस्त्वं निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनिश्वरैः।
नमो नमस्ते तुलसि पापं हर हरिप्रिये॥

हे माँ तुलसी! देवताओं के द्वारा आपका निर्माण किया गया हैं। पूर्व में ऋषि-मुनियों द्वारा आपकी पूजा-अर्चना हुई है। आपको बार बार नमन हैं तथा हे हरिप्रिया आप हमारे सारे पाप हर लो।

तुलसी तोड़ने का मन्त्र-

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।
केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने॥

हे माँ तुलसी! आप अमृतजन्मा हो और सदा श्री हरि की प्रिया हो। मैं आपको श्री केशव वासुदेव के लिये तोड़ रहा हूँ, आप सदा मुझ पर प्रसन्न रहें।

तुलसी को जल देने का मन्त्र-

(1) **त्वदङ्गसंभवेन त्वां पूजयामि यथा हरिम्।**
तथा नाशय विघ्नं मे ततोयान्ति परां गतिम्॥

आपके बिना श्री हरि की पूजा संभव नही हैं अतः आपकी पूजा भी श्री हरि की पूजा के समान ही श्रेय प्रदान करने वाली हैं इसलिये हे मातः! आप हमारे सारे पापों का नाश कीजिये जिससे हमें परा गति की प्राप्ति हो।

(2) **महाप्रसाद जननी सर्वसौभाग्यवर्धिनी।**
आधि व्याधि जरा मुक्तं तुलसी त्वां नमोस्तुते॥

हे भक्ति का प्रसाद देने वाली माँ! सौभाग्य बढ़ाने वाली, मन के दुःख, और शरीर के रोग दूर करने वाली तुलसी माता को हम प्रणाम करते हैं।

अष्टनाम स्तव (पद्मपुराण से तुलसी के आठ नाम)-

वृन्दावनी, वृन्दा, विश्वपूजिता, पुष्पसारा, नन्दिनी, कृष्णजीवनी, विश्वपावनी, तुलसी।

पीपल पूजन का मन्त्र-

अश्वत्थ हुत भुग्वाम गोविन्दस्य सदाप्रिय।
अशेषं हर मे पापं वृक्षराज नमोऽस्तुते॥

हे गोविन्द के सदा प्रिय अश्वत्थ! हमारे सारे पापों को आप हर लो। हे वृक्षराज आपको हमारा नमन हो।

(पूजा में उपयोगी ऐसे दीपक, घण्टा एवं शङ्ख पूजन के मन्त्र)

दीपक पूजन का मन्त्र-

भो दीप! देव अपरस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

घण्टा पूजन-

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु राक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयत्॥

शङ्ख पूजन-

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोस्तुते॥

❋ ॥ विविध द्रव्यों द्वारा शिवपूजन से अभीष्ट प्राप्ति ॥ ❋

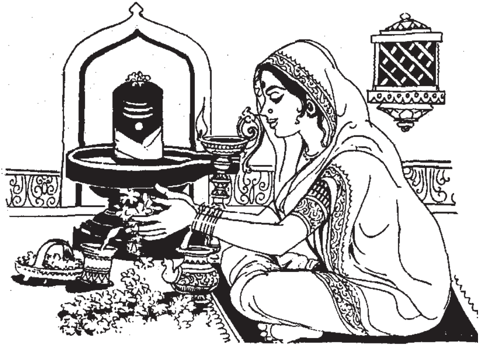

(1) **लक्ष्मी वृद्धि के लिए** – महादेव जी का चावलों से पूजन (चढ़ाने से) करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है। **तंडुलारोपणे नृणां लक्ष्मी वृद्धिः प्रजायते॥**

विशेष रूप से चावल चढ़ाने की विधि इस प्रकार है – चावल अखण्डित (अक्षत) होने चाहिए। इन्हें उत्तम भक्तिभाव से चढ़ाना चाहिए। रुद्रपूजा के विधान अनुसार **रुद्र प्रधान मन्त्र** से पूजा करके भगवान् शिव के ऊपर बहुत सुन्दर वस्त्र चढ़ायें और उसी पर चावल रखकर समर्पित करें। भगवान् शिव के ऊपर एक श्रीफल, गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि निवेदन करने से पूजा का पूरा-पूरा फल प्राप्त होता है। वहाँ शिव के समीप बारह ब्राह्मणों को भोजन कराने से मन्त्रपूर्वक साङ्गोपाङ्ग पूजा सम्पन्न होती है। जहाँ सौ मन्त्र जपने की विधि हो, वहाँ पर 108 मन्त्र जपने का विधान है। लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

(2) **संतान प्राप्ति** – गेहूँ के बने हुए पकवान से भगवान् शंकर की पूजा निश्चय ही बहुत उत्तम मानी गई है। एक लाख बार पूजन करने से संतान सुख में वृद्धि होती है।

(3) **धर्म-अर्थ-काम-भोग की वृद्धि** – इसके लिए प्रियंगु (कंगनी) द्वारा सर्वाध्यक्ष परमात्मा शिव का पूजन करने से सिद्धि होती है। उपासक को समस्त सुखों को देने वाली होती है।

(4) **रोग शान्ति के लिए** – उड़द की पूजा रोग शान्ति के लिए कही गई है। इसके साथ ही विधिपूर्वक पूजन करना भी शुभ होता है। इसके अतिरिक्त भक्तिभाव से विधिपूर्वक श्री शिवपूजन करके जलधारा समर्पित करनी चाहिए। ज्वर के कोप की शान्ति के लिए भी जलधारा विशेष शुभ होती है।

(5) **सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि के लिए** – शतरुद्रिय मन्त्र से, रुद्री के ग्यारह पाठों से, रुद्रमन्त्रों के जप से, पुरुष सूक्त से, छः ऋचावाले रुद्रसूक्त से, महामृत्युञ्जय मन्त्र से, गायत्री मन्त्र से अथवा शिव के शास्त्रोक्त नामों के आदि में प्रणव और अन्त में **नमः** पद

जोड़कर बने हुए मन्त्रों द्वारा जलधारा अर्पित करनी चाहिए। जैसे – **ॐ नमः शिवाय।** उत्तम भस्म धारण करके उपासक को प्रेमपूर्वक नाना प्रकार के शुभ एवं दिव्य द्रव्यों द्वारा शिवलिङ्ग की पूजा करनी चाहिए और शिव पर उनके सहस्त्रनाम मन्त्रों से घी की धारा चढ़ानी चाहिए। ऐसा करने से **वंश का विस्तार** होता है, इसमें संशय नहीं है।

(6) **प्रमेह आदि रोग की शान्ति के लिये** केवल दुग्ध की धारा शिवजी पर विशेषतः करनी चाहिए।

(7) **बुद्धि-उज्जवल करने के लिए** – भगवान् शंकर को शक्कर मिश्रित दुग्ध की धारा चढ़ाने से तथा दस हज़ार मन्त्रों का जप (पंचाक्षरी मन्त्र) करने से बृहस्पति के समान उत्तम बुद्धि प्राप्त हो जाती है।

विशेष रूप से गङ्गाजल की धारा तो भोग और मोक्ष दोनों फलों को देने वाली है। सभी प्रकार की धारा चढ़ाने के समय मृत्युञ्जय मन्त्र पढ़ते हुए चढ़ानी चाहिए। दस हज़ार जप का विधान है और ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

उपरोक्त विधि से शिवपूजन एवं पार्थिव लिङ्ग की पूजा करने से उपासक को तीन मास में सिद्धि हो जाती है।

नव ग्रहों के जपार्थ वैदिक मन्त्र

सूर्यः ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवोयानि भुवनानि पश्यन्॥

चन्द्रः ॐ इमं देवा असपत्नं सुवद्धं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रिस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा॥

मंगलः ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्।
अपां रेतां सिजिन्वति॥

बुधः ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेसं सृजेथामयञ्च।
अस्मिनत्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत॥

गुरुः ॐ बृहस्पतेऽतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

शुक्रः ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः।
ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु॥

शनिः ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः॥

राहुः ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठयावृता॥

केतुः ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्याऽपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

✻ ॥ 51 शक्तिपीठ ॥ ✻

शक्तिपीठों की संख्या इक्यावन कही गई है। ये भारतीय उपमहाद्वीप में विस्तृत हैं। “शक्ति” अर्थात देवी दुर्गा, जिन्हें दाक्षायनी या पार्वती रूप में भी पूजा जाता है। “भैरव” अर्थात शिव के अवतार, जो देवी के स्वांगी हैं। “अंग या आभूषण” अर्थात, सती के शरीर का कोई अंग या आभूषण, जो श्री विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र से काटे जाने पर पृथ्वी के विभिन्न स्थानों पर गिरा, आज वह स्थान पूज्य है, और शक्तिपीठ कहलाता है।

क्रम	शक्ति	अंग या आभूषण	भैरव	स्थान
1	कोट्टरी	ब्रह्मरंध्र (सिर का ऊपरी भाग)	भीमलोचन	हिंगुल या हिंगलाज, कराँची, पाकिस्तान से लगभग 125 कि.मी. उत्तर-पूर्व में
2	महिषमर्दिनी	आँख	क्रोधीश	शर्करे, कराची पाकिस्तान के सुक्कर स्टेशन के निकट, इसके अलावा नैनादेवी मंदिर, बिलासपुर, हि.प्र. भी बताया जाता है।
3	सुनंदा	नासिका	त्र्यंबक	सुगंध, बांग्लादेश में शिकारपुर, बरिसल से 20 कि.मी. दूर सोंध नदी तीरे
4	महामाया	गला	त्रिसंध्येश्वर	अमरनाथ, पहलगाँव, काश्मीर
5	सिद्धिदा (अंबिका)	जीभ	उन्मत्त भैरव	ज्वाला जी, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
6	त्रिपुरमालिनी	बांया वक्ष	भीषण	जालंधर, पंजाब में छावनी स्टेशन निकट देवी तलाब
7	जय दुर्गा	हृदय	बैद्यनाथ	बैद्यनाथधाम, देवघर, झारखंड

8	महाशिरा	दोनों घुटने	कपाली	गुजयेश्वरी मंदिर, नेपाल, निकट पशुपतिनाथ मंदिर
9	दाक्षायनी	दायां हाथ	अमर	मानस, कैलास पर्वत, मानसरोवर, तिब्बत के निकट एक पाषाण शिला
10	विमला	नाभि	जगन्नाथ	बिराज, उत्कल, उड़ीसा
11	गंडकी चंडी	मस्तक	चक्रपाणि	गंडकी नदी के तट पर, पोखरा, नेपाल में मुक्तिनाथ मंदिर
12	देवी बाहुला	बायां हाथ	भीरुक	बाहुल, अजेय नदी तट, केतुग्राम, कटुआ, वर्धमान जिला, पश्चिम बंगाल से 8 कि.मी.
13	मंगलचंद्रिका	दायीं कलाई	कपिलांबर	उज्जनि, गुस्कुर स्टेशन से वर्धमान जिला, पश्चिम बंगाल 16 कि.मी.
14	त्रिपुरसुंदरी	दायां पैर	त्रिपुरेश	माताबाढ़ी पर्वत शिखर, निकट राधाकिशोरपुर गाँव, उदरपुर, त्रिपुरा
15	भवानी	दांयी भुजा	चंद्रशेखर	छत्राल, चंद्रनाथ पर्वत शिखर, निकट सीताकुण्ड स्टेशन, चिट्टागौंग जिला, बांग्लादेश
16	भ्रामरी	बायां पैर	अंबर	त्रिस्त्रोत, सालबाढ़ी गाँव, बोडा मंडल, जलपाइगुड़ी जिला, पश्चिम बंगाल
17	कामाख्या	योनि	उमानंद	कामगिरि, कामाख्या, नीलांचल पर्वत, गुवाहाटी, असम
18	जुगाड्या	दायें पैर का बड़ा अंगूठा	क्षीर खंडक	जुगाड्या, खीरग्राम, वर्धमान जिला, पश्चिम बंगाल

19	कालिका	दायें पैर का अंगूठा	नकुलीश	कालीपीठ, कालीघाट, कोलकाता
20	ललिता	हाथ की अंगुली	भव	प्रयाग, संगम, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
21	जयंती	बायीं जंघा	क्रमादीश्वर	जयंती, कालाजोर भोरभोग गांव, खासी पर्वत, जयंतिया परगना, सिल्हैट जिला, बांग्लादेश
22	विमला	मुकुट	सांवर्त	किरीट, किरीटकोण ग्राम, लालबाग कोर्ट रोड स्टेशन, मुर्शीदाबाद जिला, पश्चिम बंगाल से 3 कि.मी. दूर
23	विशालाक्षी एवं मणिकर्णी	मणिकर्णिका	कालभैरव	मणिकर्णिका घाट, काशी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
24	श्रवणी	पीठ	निमिष	कन्याश्रम, भद्रकाली मंदिर, कुमारी मंदिर, तमिल नाडु
25	सावित्री	एड़ी	स्थनु	कुरुक्षेत्र, हरियाणा
26	गायत्री	दो पहुंचियां	सर्वानंद	मणिबंध, गायत्री पर्वत, निकट पुष्कर, अजमेर, राजस्थान
27	महालक्ष्मी	गला	शंभरानंद	श्री शैल, जैनपुर गाँव, 3 कि.मी. उत्तर-पूर्व सिल्हैट टाउन, बांग्लादेश
28	देवगर्भ	अस्थि	रुरु	कांची, कोपई नदी तट पर, 4 कि.मी. उत्तर-पूर्व बोलापुर स्टेशन, बीरभुम जिला, पश्चिम बंगाल
29	काली	बायां नितंब	असितांग	कमलाधव, शोन नदी तट पर एक गुफा में, अमरकंटक, मध्य प्रदेश
30	नर्मदा	दायां नितंब	भद्रसेन	शोन्देश, अमरकंटक, नर्मदा के उद्गम पर, मध्य प्रदेश

31	शिवानी	दायां वक्ष	चंदा	रामगिरि, चित्रकूट, झांसी-माणिकपुर रेलवे लाइन पर, उत्तर प्रदेश
32	उमा	केश गुच्छ: चूड़ामणि	भूतेश	वृंदावन, भूतेश्वर महादेव मंदिर, निकट मथुरा, उत्तर प्रदेश
33	नारायणी	ऊपरी दाड़	संहार	शुचि, शुचितीर्थम शिव मंदिर, 11 कि.मी. कन्याकुमारी-तिरुवनंतपुरम मार्ग, तमिल नाडु
34	वाराही	निचला दाड़	महारुद्र	पंचसागर, धरान, विजयपुर, नेपाल
35	अर्पण	बायां पायल	वामन	करतोयतत, भवानीपुर गांव, 28 कि.मी. शेरपुर से, बागुरा स्टेशन, बांग्लादेश
36	श्री सुंदरी	दायां पायल	सुंदरानंद	श्री पर्वत, लद्दाख, कश्मीर, अन्य मान्यता: श्रीशैलम, कुर्नूल जिला आंध्र प्रदेश
37	कपालिनी (भीमरूप)	बायीं एड़ी	शर्वानंद	विभाष, तामलुक, पूर्व मेदिनीपुर जिला, पश्चिम बंगाल
38	चंद्रभागा	आमाशय	वक्रतुंड	प्रभास, 4 कि.मी. वेरावल स्टेशन, निकट सोमनाथ मंदिर, जूनागढ़ जिला, गुजरात
39	अवंति	ऊपरी ओष्ठ	लंबकर्ण	भैरवपर्वत, भैरव पर्वत, क्षिप्रा नदी तट, उज्जयिनी, मध्य प्रदेश
40	भ्रामरी	ठोड़ी	विकृताक्ष	जनस्थान, गोदावरी नदी घाटी, नासिक, महाराष्ट्र
41	राकिनी: विश्वेश्वरी	गाल	वत्सनाभ: दंडपाणि	सर्वशैल:गोदावरीतीर, कोटिलिंगेश्वर मंदिर, गोदावरी नदी तीरे, राजमहेंद्री, आंध्र प्रदेश

42	अंबिका	बायें पैर की अंगुली	अमृतेश्वर	बनासकाँठा, गुजरात।
43	कुमारी	दायां स्कंध	शिवा	रत्नावली, रत्नाकर नदी तीरे, खानाकुल-कृष्णानगर, हुगली जिला पश्चिम बंगाल
44	उमा	बायां स्कंध	महोदर	मिथिला, जनकपुर रेलवे स्टेशन के निकट, भारत-नेपाल सीमा पर
45	कलिका देवी	पैर की हड्डी	योगेश	नलहाटी, नलहाटि स्टेशन के निकट, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
46	जयदुर्गा	दोनों कान	अभिरु	कर्नाट, अज्ञात
47	महिषमर्दिनी	भ्रूमध्य	वक्रनाथ	वक्रेश्वर, पापहर नदी तीरे, 7 कि.मी. दुबराजपुर स्टेशन, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
48	यशोरेश्वरी	हाथ एवं पैर	चंदा	यशोर, ईश्वरीपुर, खुलना जिला, बांग्लादेश
49	फुल्लरा	ओष्ठ	विश्वेश	अट्टहास, 2 कि.मी. लाभपुर स्टेशन, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
50	नंदिनी	गले का हार	नंदिकेश्वर	नंदीपुर, चारदीवारी में बरगद वृक्ष, सैंथिया रेलवे स्टेशन, बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल
51	इंद्रक्षी	पायल	राक्षसेश्वर	लंका, स्थान अज्ञात, (एक मतानुसार, मंदिर ट्रिंकोमाली में है, पर पुर्तगली बमबारी में ध्वस्त हो चुका है। एक स्तंभ शेष है। यह प्रसिद्ध त्रिकोणेश्वर मंदिर के निकट है)

✻ ॥ 18 पुराण (एक परिचय) ॥ ✻

क्रम	नाम	क्रम	नाम
1	ब्रह्म पुराण	10	ब्रह्मवैवर्त पुराण
2	पद्म पुराण	11	लिङ्ग पुराण
3	विष्णु पुराण	12	मत्स्य पुराण
4	शिव पुराण	13	कर्म पुराण
5	भागवत पुराण	14	स्कन्द पुराण
6	नारद पुराण	15	गरुड पुराण
7	मार्कण्डेय पुराण	16	नृसिंह पुराण
8	अग्नि पुराण	17	वराह पुराण
9	भविष्य पुराण	18	विष्णु-धर्मोत्तर पुराण

॥ 84 लाख योनियाँ ॥

क्रम	विवरण
1	20 लाख वृक्षादि
2	9 लाख जलचर
3	11 लाख कृमि
4	10 लाख पक्षी
5	30 लाख पशु
6	4 लाख वानर
7	1 मानव योनि

॥ भारत के चार धाम ॥

1	बद्रिकाश्रम (सतयुग)
2	रामेश्वर (त्रेतायुग)
3	द्वारिका (द्वापरयुग)
4	जगन्नाथ पुरी (कलयुग)

॥ उत्तराखण्ड के चार धाम ॥

1	यमुनोत्री	3	केदारनाथ
2	गङ्गोत्री	4	बदरीनाथ

✻ ॥ 14 लोक ॥ ✻

क्रम	नाम
ऊपर	
1	भूः
2	भुवः
3	स्वः
4	महः
5	जनः
6	तपः
7	सत्यम् (ब्रह्मलोक)

क्रम	नाम
नीचे	
1	अतल
2	वितल
3	सुतल
4	तलातल
5	महातल
6	रसातल
7	पाताल

✻ ॥ सप्तर्षि ॥ ✻

क्रम	ऋषियों के नाम
1	गौतम
2	भारद्वाज
3	विश्वामित्र
4	कश्यप
5	जमदग्नि
6	वशिष्ठ
7	अत्रि

✻✻✻✻✻

✻ ॥ दशावतार ॥ ✻

क्रम	अवतारों के नाम
1	श्री मत्स्य अवतार
2	श्री कूर्म अवतार
3	श्री वाराह अवतार
4	श्री नरसिंह अवतार
5	श्री वामन अवतार
6	श्री परशुराम अवतार
7	श्री राम अवतार
8	श्री बलदेव अवतार
9	श्री कृष्ण अवतार
10	श्री कल्कि अवतार

❋ षोडश संस्कार (एक संक्षिप्त परिचय)❋

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादि द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रत्ये चेह च॥

सब मनुष्यों को उचित है कि वेदात्म पुण्यरूप कर्मों से ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य अपने सन्तानों का षोडश संस्कार करें जिससे शरीर एवं मन की शुद्धि होती है तथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष रूपी चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति के योग्य बनें। मनुस्मृति के अनुसार यह 16 संस्कार इस प्रकार हैं-

1. **गर्भाधान संस्कार-**गृहाश्रमी होने पर संतान प्राप्ति के लिये वीर्य निषेचन द्वारा गर्भस्थापन करना।
2. **पुंसवन-**स्त्री के गर्भाधान के चिह्न प्रकट होने पर दूसरे या तीसरे मास में पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से यज्ञपूर्वक की जानेवाली विधि।
3. **सीमन्तोन्नयन-**गर्भ के चतुर्थमास में गर्भ स्थिरता पुष्टि एवं स्त्री के आरोग्य हेतु विधि।
4. **जातकर्म-**शिशु जन्म के समय किया जाने वाला संस्कार जिसमें सोने की शलाका से नवजात को थोड़ा सा मधु एवं घृत चटाया जाता हैं।
5. **नामकरण-**जन्म से 11, 12वें या किसी भी सुखमय दिन में बालक का नाम रखना।
6. **निष्क्रमण-**बालक को चतुर्थमास में घर से बाहर भ्रमण कराने ले जाना।
7. **अन्नप्राशन-**लगभग छठे मास में बालक को अन्न आदि सुपाच्य पौष्टिक भोजन देना।
8. **मुण्डन(चूड़ाकर्म)-**1 या 3 वर्ष बाद बालक का प्रथम बार मुण्डन कराना।
9. **उपनयन-**बालक का यज्ञोपवीत करना एवं वेदाध्ययन के लिये गुरु समीप निवास।
10. **वेदारम्भ-**गुरु के समीप रहकर वेदाध्ययन करना।
11. **केशांत-**युवावस्था के प्रारम्भ में केशकर्तन करना।
12. **समावर्तन-**स्नातक होकर शिक्षा समाप्त कर गुरुकुल छोड़ना।
13. **विवाह-**गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना एवं धर्मपूर्वक सन्तानोत्पत्ति में प्रवृत्त होना।
14. **वानप्रस्थ-**सन्तानों के स्वावलम्बी होने पर 50 वर्ष की आयु पश्चात् घर को त्याग, वन में तपस्या एवं ईश्वर चिन्तन करना।
15. **संन्यास-**सांसारिक भोग आदि की भावनाओं का त्याग कर परोपकरार्थ विचरण की दीक्षा लेना तथा ब्रह्म में लीन रहकर आत्मज्ञान व मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रयत्न करना।
16. **अन्त्येष्टि-**प्राणवियोग होने पर शरीर का दाहकर्म करना।

✻ आध्यात्मिक जीवन में गुरु का महत्त्व ✻

वैसे तो कोई भी शिक्षा गुरु के बिना अधूरी है किन्तु आध्यात्मिक जीवन में गुरु के बिना तो एक भी डग चलना अति दुष्कर है। गुरु साक्षात् इष्ट का स्वरूप होता हैं तथा गुरु को शिव तथा शिव को गुरु कहा गया हैं। विद्या के आकार में "योगेश्वर" शिव ही गुरु बनकर विराजमान है। जैसे शिव, वैसी विद्या तथा जैसी विद्या वैसे गुरु, इन सभी में अभेद दृष्टि रखनी चाहिये तथा शिव, विद्या तथा गुरु के पूजन से समान फल मिलता हैं।

जो गुरु तत्त्ववेत्ता, गुणवान्, विद्वान, परमानन्द प्रकाशक तथा ईश्वरभक्त हैं वही आनन्द का साक्षात्कार करा सकता है तथा ज्ञानरहित नाममात्रका गुरु ऐसा नही कर सकता।

जन्मानेकशतैः सदादरयुजा भक्त्या समाराधितो
भक्तैर्वैदिकलक्षणेन विधिना सन्तुष्ट ईशः स्वयम्।
साक्षात् श्रीगुरुरूपमेत्य कृपया दृग्गोचरः सन् प्रभुः
तत्त्वं साधु विबोध्य तारयति तान् संसारदुःखार्णवात्॥

✻ गुरु से मन्त्र ग्रहण तथा जप विधि (संक्षिप्त) ✻

आज्ञाहीन, क्रियाहीन, श्रद्धाहीन तथा विधिहीन जप निष्फल होता हैं अतः तदर्थ जिज्ञासु के लिये योग्य गुरु से मन्त्र की दीक्षा लेकर ही उसका जप करना श्रेयस्कर तथा महान फलदायी होता है।

जिज्ञासु को चाहिये कि वह पहले तत्त्ववेत्ता, जपशील, सद्गुणसम्पन्न, ध्यानयोगपरायण गुरु की शरण में जाकर शुद्ध मन से प्रयत्नपूर्वक उन्हें संतुष्ट करें। निश्छल भाव से गुरु की विधिवत् पूजा करके मन्त्र एवं ज्ञान का उपदेश क्रमशः प्राप्त करें।

शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र एवं सर्वदोष रहित शुभ योग में एकान्त स्थान में अत्यन्त प्रसन्नचित्त से उच्चस्वर में भलीभाँति उच्चारण कराकर गुरु शिष्य को सभी प्रकार से आशीर्वादपूर्वक मन्त्र प्रदान करें। इस प्रकार गुरुसे प्राप्त मन्त्र का नित्य प्रति अनन्यचित्त होकर यथाशक्ति जप करना चाहिये।

जिज्ञासु को स्नान करके शुद्ध स्थान में स्वच्छ आसन बिछाकर पूर्वाभिमुख बैठकर हृदय स्थान में गुरु तथा शिव का ध्यान करके जप में प्रवृत्त होना चाहिये। जप से पहले न्यासादि कर, तदनन्तर जप में प्रवृत्त होना चाहिये। **सभी जपों में मानस जप श्रेष्ठ है।**

❋ होमादि में अग्निवास ❋

किसी भी अनुष्ठान के पश्चात् हवन करने का शास्त्रीय विधान है और हवन करने हेतु भी कुछ नियम बताये गए हैं जिसका अनुसरण करना अति आवश्यक है, अन्यथा अनुष्ठान का दुष्परिणाम भी आपको झेलना पड़ सकता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात है हवन के दिन 'अग्नि के वास' का पता करना ताकि हवन का शुभ फल आपको प्राप्त हो सके।

तिथि की संख्या में 1 जोडें तथा वार की संख्या जोड़कर उसे 4 से भाग दें।

वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए।

उदाहरणार्थ-कृष्ण पक्ष की द्वितीया को मङ्गलवार को अग्निवास देखना हो तो हमें (कृष्ण पक्ष द्वितीया->17+1+3<-मङ्गलवार)=21:4, इस उदाहरण में जवाब को 4 से विभाजित करने पर 1 बचा जिससे हमें जानना चाहिये कि उस दिन अग्नि का वास आकाश में है तथा यज्ञ हानिकारक हो सकता है।

यदि शेष शून्य (0) अथवा 3 बचे, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होगा और इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है।

यदि शेष 2 बचे तो अग्नि का वास पाताल में होता है और इस दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है।

यदि शेष 1 बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है।

अतः यह आवश्यक है की होम में अग्नि के वास का पता करने के बाद ही हवन करें।

तदुपरांत गृह के 'मुख-आहुति-चक्र' का विचार करना चाहिए इसके लिए अपने परिचित ज्योतिषी से परामर्श कर लें।

नोट-नित्य प्रतिदिन हवन करने वालों के लिये यह नियम लागू नही होता।

अग्निवास का परिहार -

विवाहयात्रा-व्रत-गोचरेषु चूड़ोपनीति ग्रहणे युगादौ।
दुर्गाविधाने सुतप्रसूते नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्॥

अर्थात् नित्य नैमित्तिक कार्य, जन्म व मृत्यु के समय, विवाह में, यात्रा आरम्भ या यात्राकाल में, व्रतोद्यापन में ग्रहों की अनिष्ट गोचर स्थिति में मुण्डन, उपनयनादि संस्कार में, ग्रहण शान्ति, रोग-पीड़ा की शान्ति, नवरात्र-दुर्गा-पूजा, पुत्रादि सन्तान जन्मकाल में अग्निवास का विचार नही किया जाता।

❋ होमादि में शिववास ❋

शिव से सम्बन्धित होमादि अनुष्ठान यज्ञ करने के लिये शिव वास का विचार करना चाहिये। इसकी विधि निम्न प्रकार से है-

तिथि की संख्या को दोगुना करके उसमें 5 जोडें तथा उसे 7 से भाग दें।

तिथि की गणना शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए।

उदाहरणार्थ-कृष्ण पक्ष की द्वितीया को मङ्गलवार को शिववास देखना हो तो हमें कृष्ण पक्ष द्वितीया->(17x2)+5=39:7, इस उदाहरण में जवाब को 7 से विभाजित करने पर 4 बचा जिससे हमें जानना चाहिये कि उस दिन शिव का वास सभा में है तथा यज्ञ सन्तापकारक हो सकता है।

कैलासे लभते सौख्या, गौर्या सह सुखसम्पदा, वृषभे अभीष्ट सिद्धि स्यात्। सभासन्तापकारिणी, भोजने च भवेत्पीडा, क्रीडायां कष्टमेव च, श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेव विचिन्तयेत्॥

शिव का वास एवं शेष बचे हुये अंको का फल -

बचे हुये अंक	शिव का वास	फल
1	कैलास	सुखदायी
2	गौरी के साथ	सुखसम्पदा
3	नन्दी पर सवार	कार्यसिद्धि
4	सभा में	सन्तापकारी
5	भोजन में	पीडादायी
6	क्रीडा करते हुये	कष्टदायी
0	श्मशान में	अनिष्ट (मृत्यु)

❊ चतुर्युगों की व्यवस्था का वर्णन वि.सं. 2081 ❊

सतयुग – इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी (अक्षय-नवमी) बुधवार को हुई। इसकी आयु 1728000 वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म्म, वराह, नृसिंह – ये चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, वराह जी ने जलोद्धार किया, कूर्म जी ने पृथ्वी की रक्षा की और उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी। समय पर वर्षा थी, फसलें अच्छी होती थी। स्त्रियां पद्मिनी थीं, गौवें दूध अधिक देती थीं। पुण्य 20 विश्वे पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण 20000 चन्द्र ग्रहण 2000 थे।

त्रेतायुग – वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय-तृतीया), सोमवार को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 1296000 वर्ष थी। इस युग से तीन अवतार वामन, परशुराम, श्री रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समग्र पृथ्वी को 3 पैर में नाप कर राजा बली को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का 21 बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। पुण्य 15 विश्वे, पाप 5 विश्वे था। ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ट त्यागी थे। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रणी पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का था। सूर्य ग्रहण 20000 और चन्द्र ग्रहण 30000 थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग – माघ कृष्ण 30 (मौनी अमावस्या) शुक्रवार को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 7,64,000 वर्ष धी। इसमें 2 अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य 10 विश्वे था। सूर्य ग्रहण 24000, चन्द्र ग्रहण 36000 थे। स्त्रियां शांखिनी एवं शीलयुक्ता होती थी।

कलियुग – भाद्रपद कृष्ण 13, रविवार आधी रात को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु 432000 वर्ष है, इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार है, उनका काम धर्मका उद्धार करना है। पुण्य 5 विश्वे, पाप 15 विश्वे हैं, गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण 46000 होंगे। कलियुग के अन्त में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारिणी स्त्रियां अपने को सति कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ ब्राह्मण की हत्या से भी भय नहीं करेंगे। सन्तान का माता-पिता के साथ स्वार्थ के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। श्रीगंगा मुख्य तीर्थ होगी। शासन प्रबन्ध में धर्म का स्थान नगण्य होगा। स्त्रियों शाखिनी होंगी।

आपको किस दिन क्या करना शुभ है

	रविवार	सोमवार	मङ्गलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी	लेखनादि कार्य, मेडिकल शिक्षा सौन्दर्य प्रसाधन औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी	बिजली (इलैक्ट्रॉनिक), सर्जरी, शिक्षा, शास्त्र विद्या, अग्नि स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दन्त चिकित्सा	गणित, लेखनादि बौद्धिक कार्य, बैंक, वकालत, तकनीकी, ज्योतिष, वाहनादि चलाना, सीखना	दर्शन शास्त्र धर्म मंत्र, ज्योतिष, संस्कृत विद्यारम्भ, वकालत, उच्च पद, प्रशासनिक शिक्षा	नृत्य, गायन, कला, संगीत, एक्टिंग, गीत, काव्य, सौन्दर्य सम्बन्धी	तकनीकी शिल्प कला, मशीनरी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासन कार्य सेनाधिकारी, ज्वैलरी, औषधि, शास्त्र, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि, मेडिकल, मंत्रानुष्ठान	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी, डेयरी, फार्म, शंख, मोती, औषधि, स्त्री, धन, सम्पदा, सौन्दर्य प्रसाधन, सुगन्धि, विदेश पत्राचार	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बन्धित कार्य, बेकरी, लोहा तांबा, भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय शेयरों का क्रय, पुस्तक लेखन, शिक्षण, वकालत, शिल्प, सम्पादन कार्य	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि वाहनादि का क्रय विक्रय, विदेश गमन	संगीत, सिनेमा, विदेश यात्रा, टेलीविजन, श्रृंगारिक वस्तु, रुई, कपड़ा चाँदी, रसायन, सुगन्धि	मशीनरी, लोहा, चमड़ा, लकड़ी, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, ठेकेदारी शास्त्रों का क्रय विक्रय, आपरेशन, कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी

अन्य विविध मुहूर्त

नाम मुहूर्त	शुभ ग्रह्य तिथि	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चों को स्कूल में डालना (विद्यारम्भ)	2, 3, 5, 7, 10, 11, 12	उत्तरायण, भाद्र 5 वें वर्ष रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र	अश्विनी, पुनर्वसु, अश्लेषा, रेवती, अनुराधा, आर्द्रा, स्वाती, चित्रा
दुकान:बहीखाता शुरु	1 (कृ), 3, 5, 7, 10, 11, 13 शुक्ल पक्ष में	रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन	रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढा, उ०फाल्गुनी, उ०भाद्रपदा, हस्त, अश्विनी, रोहिणी, पुष्य
नौकरी करना	2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 15	रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र उत्तरायण में	अश्विनी, मृगशिरा, चित्रा, हस्त, पुष्य, अनुराधा, रेवती
स्कूटर, कार, सवारी खरीदना	1 (कृ), 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12, 13, शुक्ल पक्ष में	सोम, बुध, गुरु, शुक्र वारों में	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, हस्त, चित्रा, रेवती
गृहारम्भ (मकान बनाना)	2, 3, 6, 7, 10, 11, 12, 13, शुक्ल पक्ष में	सोम, बुध, गुरु, शुक्र, वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन	उत्तराषाढा, उ०फाल्गुनी, रोहिणी, उ०भाद्रपदा, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, अनुराधा, चित्रा, स्वाति, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती
शिलान्यास (नींव डालना)	गृहारम्भ वाली तिथियाँ	गृहारम्भ वाले वार मास, प्रविष्टा 15, 7, 9, 10, 21, 24, त्याज्य	गृहारम्भ वाले नक्षत्र (अश्विनी, श्रवण त्याज्य)
नव घर में प्रवेश	2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15 शुक्ल पक्ष में	वैशाख, ज्येष्ठ, मार्ग, माघ, फाल्गुन	मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, स्वाति, धनिष्ठा, श्रवण, मूल, उत्तराषाढा, उ०फाल्गुनी, उ०भाद्रपदा, रोहिणी, हस्त
भूमि खरीदने के लिए	1 (कृ), 5, 6, 10, 11, 15 शुक्ल पक्ष में	मंगल, गुरु, शुक्र	मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, मूल, रेवति, रोहिणी
ऑपरेशन कराने के लिए	2, 3, 5, 6, 7, 10, 12, 13	रवि, मंगल, गुरु	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, पुष्य, हस्त

अन्य विविध मुहूर्त

नाम वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण करना	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	अति शुभ	अशुभ	शुभ	अति शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

नोटः प्रतिदिन क्षौरकर्म (दाढ़ी) करने वालों के लिए शुभाशुभ गौण है।

अलंकार धारण विचारः

चित्रा, विशाखा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा,अश्विनी, हस्ता, रेवती, नक्षत्रों में रवि, शुक्र, वृहस्पति, बुधवार के दिन स्त्री के लिए सुवर्णादि अलंकार (जेवर) धारण करना शुभ होता है।

ग्रह राशि सम्बन्धी रत्न विचार

ग्रह	राशि	रत्न	रत्ती मात्रा	धातु	वार	नक्षत्र	किस उंगली में पहने
सूर्य	सिंह	माणिक्य	5	सोना तांबा	रवि	उत्तराषाढा, उ.फा., कृत्तिका	अनामिका
चन्द्र	कर्क	मोती	4, 6, 11	चांदी	सोम	रोहिणी, हस्त	अनामिका
मङ्गल	मेष वृश्चिक	मूंगा	6, 8, 12	तांबा	मङ्गल	मृगशिरा, चित्रा	अनामिका
बुध	मिथुन कन्या	पन्ना	3, 6, 7	सोना	बुध	ज्येष्ठा, अश्लेषा, रेवती	कनिष्ठिका
गुरु	धनु मीन	पुखराज	3, 5, 9, 12	सोना	गुरु	पुष्य, पुनर्वसु, विशाखा	तर्जनी
शुक्र	तुला वृष	हीरा	1, 3	चांदी	शुक्र	पुष्य, भरणी, पू.फा.	मध्यमा
शनि	मकर कुम्भ	नीलम	5, 7, 9, 12	लोहा	शनि	उ.भा., पुष्य, चित्रा	मध्यमा
राहु	कन्या	गोमेंद	5, 7, 9	सीसा, पञ्च धातु	शनि	शतभिषा, स्वाति, आर्द्रा	मध्यमा
केतु	मीन	लह-सूनिया	6, 8, 12	सीसा, पञ्च धातु	शनि	शतभिषा, स्वाति, आर्द्रा	अनामिका

ग्रह कृत अनिष्ट फल निवारण हेतु सूर्यादि ग्रहों के दानादि पदार्थ

ग्रह	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
धातु	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण	सुवर्ण
उपधातु	ताम्र	चाँदी	ताम्र	काँस्य	काँस्य	चाँदी	लोहा	सीसा	सीसा
रत्न	माणिक	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसूनिया
धान्य	गेहूँ	चावल	मसूर	मूंग	चना	श्याम मूंग, चावल	तिल	उड़द	उड़द
पशु	रक्त धेनु	श्वेत वृष	रक्त वृष	हाथी	अश्व	श्वेत अश्व	भैंस	घोड़ा	अजा
रस	गुड़	घृत	गुड़	घृत	शक्कर	घृत	तेल	तेल	तेल
वस्त्र	केशरी वस्त्र	श्वेत वस्त्र	रक्त वस्त्र	नील वस्त्र	पीत वस्त्र	चित्र वस्त्र	कृष्ण वस्त्र	नील वस्त्र	कृष्ण वस्त्र
पुष्प	रक्त कमल	श्वेत पुष्प	रक्त कमल	सर्व पुष्प	पीत पुष्प	श्वेत पुष्प	कृष्ण पुष्प	कृष्ण पुष्प	धुम्र पुष्प
जप संख्या	7 हजार	11 हजार	10 हजार	9 हजार	19 हजार	16 हजार	23 हजार	18 हजार	17 हजार
समिधा	आक्	पलाश	कदिर	अपामार्ग	अश्वत्थ	उदुम्बर	शमी	दूर्वा	कुश
देवता	शिव	दुर्गा	गणेश	विष्णु	कुलदेवता	इन्द्राणि	देवी	भैरव	भैरव

ग्रह दोष निवारण हेतु बीज मंत्र

ग्रह	जपनीय बीजमन्त्राः	जपकाल	जप संख्या	हवन समिधा
सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सूर्योदय	7000	आक् काष्ठ
चन्द्र	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्याकाल	11000	पलाश
मंगल	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	सूर्योदय से 54 मिनट	10000	खैर
बुध	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	सूर्योदय से 2 घण्टे	9000	अपामार्ग
गुरु	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्याकाल	19000	पीपल
शुक्र	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	16000	गूलर
शनि	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्याकाल	23000	शमी
राहु	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	18000	दूर्वा
केतु	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	17000	कुशा

॥ नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्॥

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे रविः॥1॥

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः॥2॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा।
वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः॥3॥

उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः॥4॥

देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः॥5॥

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडा हरतु मे भृगुः॥6॥

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥7॥

महाशिराः महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी॥8॥

अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः॥9॥

॥ इति ब्रह्माण्डपुराणोक्तं
नवग्रहपीडाहरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ नवग्रहस्तोत्रम्॥

सूर्य -

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

चन्द्रमा -

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥

भौम -

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥

बुध -

प्रियंगुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

गुरु -

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां तं नमामि बृहस्पतिम्॥

शुक्र -

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

शनि -

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

राहु -

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥

केतु -

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

अथ वास्तु प्रकरण

गृह निर्माण में वास्तु दिग्दर्शन

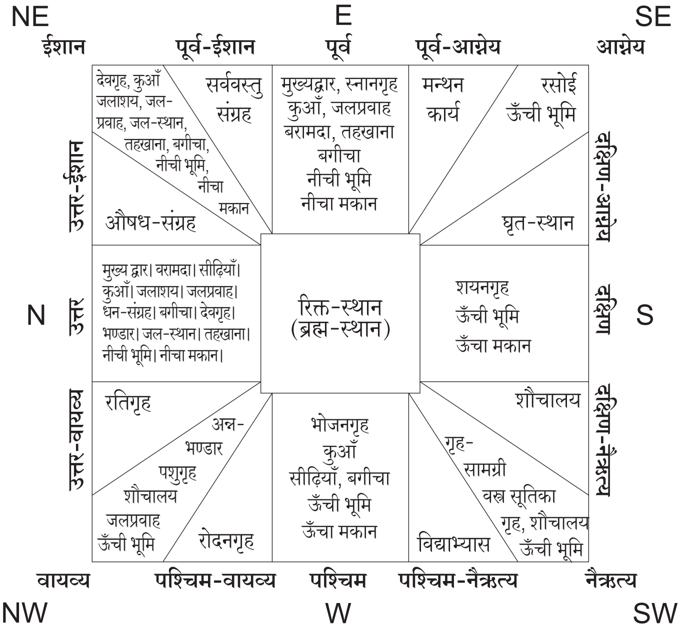

गृह निर्माण तथा वास्तु सम्बन्धी आवश्यक बातें

मकान पूर्व व उत्तर में नीचा और पश्चिम व दक्षिण में ऊँचा होना चाहिए। ऐसा होने से गृह स्वामि की उन्नति होती है।

1. मत्स्य पुराण में आया है कि दक्षिण दिशा में ऊँचा घर मनुष्य की सब कामनाओं को पूर्ण करता है।
2. जिस घर, देवालय, मठ आदि में सूर्य की किरणें और वायु प्रवेश नहीं करती वह शुभ नहीं होता।
3. किसी मार्ग या गली का अन्तिम मकान (जहाँ आगे मार्ग न हो) अशुभ है। ऐसा मकान कष्ट देने वाला है।
4. घर में टूटे-फूटे आसन (कुर्सी आदि) शयनिका और वाहन का होना भी अशुभ है।
5. गृहराम्भ और गृह प्रवेश के समय कुल देवता, गणेश, छत्रपाल और दिग्पति की विधिवत पूजा करें। आचार्य, द्विज और शिल्पी को विधिवत सन्तुष्ट करें। शिल्पी को वस्त्र और अलंकार दें। ऐसा करने से घर में सदा सुख रहता है।

वास्तु दोष दूर करने के लिए अद्भुत अनुभुत उपाय

यदि आपका भवन या निवास स्थान वास्तु सिद्धान्त के विपरीत हो तो कुछ निम्न दैनिक दिनचर्या में परिवर्तन कर आप शुभ फल प्राप्त तथा अनिष्ट प्रभाव से बच सकते है।

1. उत्तर-पूर्व की ओर अपना मुख रखकर पानी पीयें।
2. दक्षिण-पूर्व की ओर थाली रखें और पूर्वाभिमुख होकर भोजन करें।
3. दक्षिण-पश्चिम कोण में सोने से दक्षिण की ओर सिर कर के सोने से नींद गहरी और अच्छी आती है।
4. उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर मुख करके पूजा करने बैठें।
5. द्वार के उपर लक्ष्मी, गणेश, कुबेर, स्वस्तिक, ॐ आदि मांगलिक चिन्ह स्थापित करें।
6. यदि घर में कोई पूजास्थाल नहीं है तो उसे उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में रखें।
7. दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम कोण में कुआँ या ट्यूबवैल है तो उसे भरवाकर उत्तर-पूर्व कोण में कुआँ या ट्यूबवैल खुदवायें। अन्य दिशा में कुएँ को भरवा न सकें तो उसे प्रयोग में लाना बन्द करें अथवा उत्तर-पूर्व में एक और ट्यूबवैल या कुआँ लगवायें जिससे वास्तु का सन्तुलन हो सके।

8. दक्षिण-पश्चिम दिशा में अधिक दरवाजे और खिड़कियाँ हो तो उन्हें बन्द करके उनकी संख्या कम कर दें।
9. रसोई घर गलत स्थान पर हो तो अग्निकोण में एक बल्ब लगा दें।
10. दुकान की समृद्धि बढ़ाने के लिए प्रवेश द्वार के दोनों ओर गणपति की मूर्ति या स्टिकर लगायें। एक गणपति की दृष्टि दुकान पर पड़ेगी, दूसरे गणपति की बाहर की ओर।
11. द्वार दोष और वेध दोष को दूर करने के लिए शंख, सीप, समुद्र झाग, कौड़ी, ताम्बे या सोने की तुश लाल कपड़े में या मौली में बाँधकर दरवाजे पर लटकायें।
12. यदि मकान में चोरी होती हो या आग लगती हो तो भौम यन्त्र की स्थापना करें। यह यन्त्र पूर्वोत्तर कोण या पूर्व दिशा में, फर्श के नीचे दो फीट गहरा गड्डा खोदकर स्थापित किया जाता है।
13. घर के सभी प्रकार के वास्तु दोष दूर करने के लिए मुख्य द्वार पर एक ओर केले का वृक्ष, दूसरी ओर तुलसी का पौधा गमले में लगायें।
14. यदि किसी व्यक्ति को प्रयत्न करने पर भी निवास के लिए भूमि अथवा मकान न मिल रहा हो तो भगवान वराह के निम्न मन्त्र का जप करें -

।। ॐ नमः श्री वराहाय धरन्युद्धारणाय स्वाहा।।

15. घर में वास्तु दोष होने पर उचित यही है कि यथा सम्भव वास्तु शास्त्र के अनुसार ठीक करें। जहाँ तक हो सके तो निर्मित मकान में तोड़-फोड़ नहीं करनी चाहिए। तोड़-फोड़ करने से वास्तु-भंग दोष लगता है। यदि घर पुराना होने पर या अन्य किसी कारण से घर में पुनर्निर्माण या तोड़-फोड़ करना आवश्यक हो तो सोने से बने हुए नागदन्त (हाँथी दाँत) अथवा गाय के सींग से वास्तु पूजन करके गिरवाने से वास्तुभंग का दोष नहीं लगता।
16. घर में अखण्ड श्री राम चरित मानस पाठ या भगवन्नाम कीर्तन करने से वास्तु जनित दोष दूर हो जाता है।
17. मुख्य द्वार के उपर सिन्दुर से स्वस्तिक का चिन्ह बनायें। यह चिन्ह नौ अङ्गुल लम्बा तथा नौ अङ्गुल चौड़ा होना चाहिए। घर में जहाँ-जहाँ वास्तु दोष हो, वहाँ-वहाँ यह चिन्ह बनाया जा सकता है।

वास्तुदोष शान्ति के लिये उपयोगी मन्त्र

ॐ नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वदोष हर भव सुखं देहि। शान्ति देहि।
सर्वकामान् प्रयच्छ मे। ॐ वास्तुपुरुषाय नम:।।

मकान निर्माण हेतु पृथ्वी की शुभाऽशुभ परीक्षा

1. मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दिखने लगे या दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें। खोदते समय जमीन से पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो, अगर गुठली निकले तो धन नाश हो और अगर हड्डी, राख एवं बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा होती है।

2. एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उस में पानी भर दें। पानी भर कर उत्तर दिशा की और सौ कदम चलें। लौटने पर देखें। यदि गड्ढे में पानी उतना ही रहे तो वह श्रेष्ठ भूमि है। यदि पानी कुछ कम (आधा) रहे तो वह मध्यम भूमि है। यदि पानी बहुत कम रह जाय तो वह अधम भूमि है।

भूमि शयन ज्ञान

संक्रान्ति मिति दिन पाँचवें सप्तम नवम जोय।
10:21:24 में षड् दिन पृथ्वी सोय॥

संक्रान्ति के 5, 6, 7, 9, 10, 21 और 24वें दिन भूमि का शयन होता है। अतः इन दिनों भूमि पूजन वर्जित है।

खातारम्भ (नींव खोदना) दिशा निर्णय

नीचे विभिन्न राशियों में सूर्य की स्थिति के आधार पर राहु मुख की दिशा दी गयी है। घर की नींव राहु-मुख दिशा के पृष्ठ भाग में खोदना (आरम्भ करना) शुभ होता है। उदाहरण के लिए सौर वैशाख मास में सूर्य मेष राशि में होता है, उस समय राहु मुख नैऋत्य कोण में होता है। अतः नींव वायव्य कोण (पश्चिमोत्तर) से खोदना आरम्भ करना चाहिए।

राहु मुख की दिशा	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय
सूर्य की राशि	5, 6, 7	8, 9, 10	11, 12, 1	2, 3, 4
नींव खोदने की दिशा	आग्नेय	ईशान	वायव्य	नैऋत्य

❋ प्राकृतिक उपचार ❋

बच्चों के लिए

1. जब बच्चों के दांत निकल रहे हों तो भुना हुआ सुहागा, शहद, मुलैठी, प्रत्येक 2 ग्राम बारीक करके बच्चों के मसूड़ों पर एक सप्ताह मलने से दांत बिना कष्ट के निकल आते हैं।
2. तुलसी और अदरक का रस समान भाग लेकर थोड़ा सा गुनगुना करके पिलाने से बच्चों के पेट का दर्द ठीक हो जाता है।
3. बच्चों के पेट फूलना, अफरा, तथा खुलकर दस्त न लगने पर तुलसी और पान का रस समान मात्रा में थोड़ा सा गुनगुना कर के पिला दें, अफरा आदि तुरन्त ठीक हो जाएगा।
4. तुलसी के पत्तों का रस 5 या 10 बूँद नित्य थोड़े से पानी में डालकर पिलाने से बच्चों की मांसपेशियां व हड्डियां मजबूत बनती हैं।
5. बच्चों के कान में दर्द होने पर तुलसी के पत्तों का रस थोड़ा सा सहने योग्य गर्म कर कान में डालने से तुरन्त कान का दर्द शान्त हो जाता है।
6. बच्चों का श्वास रोग तुलसी के पत्तों का रस शहद में मिलाकर पीने से दूर होता है।

कब्ज सारी बीमारियों की जड़ हैं। इससे बचाव के लिए निम्नलिखित उपाय करें :-

1. सवेरे शौच से पूर्व, रात को तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी पीना चाहिये।
2. खाने में बेसन का प्रयोग करें।
3. भुने हुए छिलके वाले चने खूब चबाकर खाएं।
4. भोजन के साथ साथ या अलग कच्ची सब्जियां जैसे गाजर, मूली, पालक, खीरा, टमाटर, गोभी आदि का सेवन करें।
5. भोजन के बाद फलों का सेवन करें।
6. 1 या 2 केले कब्ज करते है जबकि अधिक केले खाने से कब्ज दूर होती है।

7. नीम के ताजा 10 पत्ते सुबह-सुबह 15 दिनों तक खाते रहने से रक्त विकार सम्बन्धी रोग जैसे खुजली, फोड़ा, फुनसी आदि में लाभ होता है।
8. रात के भोजन और सोने में कम से कम दो घन्टे का अंतर होना चाहिये।
9. भोजन के बाद 10 मिनट के भीतर लघुशङ्का जाने से गुर्दे का दर्द नहीं होता।

सर्दी जुकाम के लिए

अदरक का रस एक तोला (10 ग्राम), शहद एक तोला (10 ग्राम) गर्म करके दिन में 2 बार पिएं।

मूंह के छालों के लिए

1. एक केला गाय के दही के साथ सेवन करने से कुछ दिनों में छाले ठीक हो जाते हैं।
2. तुलसी के पत्ते तथा चमेली के पत्ते चबाने से मुँह के छालो में राहत मिलती हैं।
3. तुलसी के 6 पत्ते नित्य प्रतिदिन सुबह शाम खाकर ऊपर से पानी पीने से मुंह के छाले व दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

सिर चकराना

1. पेट की गैस से सिर चकराता हो, दौरा पड़ता हो, तो एक प्याली गर्म पानी में नीम्बू निचोड़कर आठ दिन तक पियें।
2. थोड़ी चीनी मिलाकर तुलसी के पत्तों का रस पीने से चक्कर आना दूर होता है।

कान दर्द

1. गर्म राख में प्याज भूनकर उसका पानी निचोड़ कर कान में डालने से दर्द से आराम मिलता है।
2. लहसुन पीसकर, तिल के तेल में मिलाकर कान में डालने से दर्द में आराम मिलता है।
3. तुलसी के पत्ते और मंजरी को पीसकर उसके रस की 4-5 बूँद सूजन वाले कान में डालने से तुरन्त आराम मिलता है।

दिल की धड़कन के लिए

1. दो केले, 1 तोला (10 ग्राम) शहद में मिलाकर खाने से दिल के दर्द से आराम मिलता है।
2. सवेरे 15 दिनों तक 50 ग्राम सेब का मुरब्बा, चांदी के वर्क में लगाकर सेवन करने से दिल की कमजोरी और दिल का बैठना ठीक हो जाता है।
3. यदि दिल बहुत धड़कता हो या घबराता हो तो 50 ग्राम आँवले के मुरब्बे पर दो चाँदी के वर्क लगाकर सुबह निहार मुँह (कुछ भी खाने से पूर्व) 15 दिन खाने से आराम मिलता है।

लू के लिए

1. राख में दो कच्चे आम भूनकर उसका गूदा निचोड़ कर 250 ग्राम पानी में थोड़ी बर्फ और चीनी मिलाकर दो बार पियें।
2. यदि लू लग गई हो तो तुलसी के पत्तों का रस चीनी में मिलाकर पीने से आराम मिलता है।

हैजा

1. दो तोले (20 ग्राम) आम के गर्म-गर्म पत्ते मसलकर आधा कीलो पानी में डुबाकर उबाल लें, जब पानी आधा रह जाए तो छान कर गर्मागर्म दो बार पियें।

2. काली मिर्च के साथ तुलसी के पत्ते पीस कर गोली बनाकर सेवन करने से हैजा दूर होता है।

पीलिया

मूली का तथा मूली के पत्तों का रस 125 ग्राम, 25 ग्राम शक्कर में मिलाकर सुबह के वक्त 15-20 दिनों तक पीने से पीलिया ठीक हो जाता है। खटाई का परहेज करें।

मुँहासे

12 ग्राम मलाई में चौथाई नींबू निचोड़ कर रोज चेहरे पर मलें।

उल्टी (वमन) के लिए

1. 50 ग्राम पानी में आधे नींबू का रस, एक ग्राम जीरा, एक ग्राम छोटी इलायची के दाने पीसकर मिलाकर दो-दो घन्टे में पिलाने से उल्टी बन्द हो जायेगी।
2. अदरक और प्याज का रस दो चम्मच पिलाने से उल्टी बन्द हो जाती है।
3. तुलसी के पत्तों का रस, छोटी इलायची का चूर्ण थोड़ी सी चीनी में मिलाकर खाने से उल्टी बन्द हो जाती है।

पेट दर्द के लिए

1. नमक, अजवायन, जीरा, चीनी सब दो-दो ग्राम बारीक करके नींबू निचोड़ कर गर्म पानी से खाने से पेट दर्द ठीक हो जाएगा।
2. तुलसी व अदरक का रस गर्म करके पीने से पेट दर्द ठीक हो जाता है।

दांत दर्द के लिए

1. डी.सी लौंग पीस कर नींबू निचोड़ कर दांत पर मलें।
2. खाने वाला सोडा दांत पर मलें।
3. तुलसी के पत्ते तथा काली मिर्च पीस कर गोली बना लें। इस गोली को दर्द वाले दांत के नीचे दबाने से तुरन्त लाभ होगा।

पेट की गैस

1. एक मीठा सेब लेकर उसमें 10 ग्राम लौंग चुभो दें। एक घन्टे बाद लौंग निकाल कर 3 लौंग प्रतिदिन चाय के साथ लें। चावल, प्याज आदि से परहेज करें।
2. लहसुन की 6-7 पोथियां छीलकर प्रतिदिन सुबह शाम जल से सेवन करें, वायु के दर्दों में लाभ होगा।

प्यास के लिए

प्यास अधिक लगती हो तो 40 ग्राम सेब का रस, 40 ग्राम पानी में मिलाकर दिन में एक बार एक सप्ताह तक पियें।

सिर दर्द के लिए

1. गाजर के पत्तों का पानी गर्म करके नाक और कान में डालें, आधा सिर दर्द बन्द हो जाएगा।
2. यदि सिर दर्द पुराना हो तो 15 दिन तक रोज एक मीठे सेब को काटकर नमक लगाकर 5 मिनट बाद खूब चबाकर खायें।
3. तुलसी के पत्तों और नींबू का रस, बराबर मात्रा में पीने से सर दर्द ठीक होता है।
4. सुबह शाम तुलसी के पत्तों का चूर्ण शहद के साथ लेने से आधा सिर दर्द ठीक होता है।

खाँसी के लिए

1. 5 ग्राम अनार का छिलका, थोड़े दूध में मिलाकर पीने से काली खाँसी से आराम मिलता है।
2. अदरक का रस (10 ग्राम), शहद (10 ग्राम) गर्म करके दिन में 2 बार, आठ दिन तक पियें। परहेज – खटाई, दही, लस्सी आदि।
3. तुलसी की मंजरी का चूर्ण बनाकर शहद के साथ लेने से खाँसी दूर होगी।

दमा व खाँसी में पीपल के पत्तों का प्रयोग

1. पीपल के सूखे पत्तों को खूब कूटें। जब चूर्ण बन जाये तब उसे कपड़े से छान लें। एक माह तक रोज सुबह लगभग आधा तोला (6 ग्राम) चूर्ण में शहद मिलाकर चाटने से दमा व खाँसी में स्पष्ट लाभ होता है।

पेट के कीड़े

1. दो सप्ताह रोज खाली पेट 125 ग्राम गाजर का रस पीने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं। बड़े आदमी को गर्म करके पिलाएं।
2. रात को दो मीठे सेब खाने से पेट के कीड़े मरकर निकल जाते हैं।

बाल-झड़ की समस्या

1. पके केले के गुदे में नीम्बु का रस मिलाकर सिर के उस भाग पर लगायें जहाँ पर बाल उड़ गये हो, कुछ ही दिन में बाल आने लगेंगे।

उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रेशर)

1. एक महीने तक रोज सवेरे खाली पेट कड़वे नीम के पके दो फल (निंबोली) पानी के साथ निगलने से उच्च रक्तचाप में लाभ होता हैं।
2. 8-10 किशमिश रात को पानी में भिगोकर सवेरे खाली पेट, चबाकर खाने से इस बिमारी में राहत होती हैं।

3. उच्च रक्तचाप में केवल गाजर का रस पीने से रक्तचाप शीघ्र ही संतुलित हो जाता है।
4. सर्पगंधा को कूट-पीसकर सुरक्षित रख लें। इस चूर्ण को प्रातः व सायं 2-2 ग्राम की मात्रा में खाने से बढ़ा हुआ रक्तचाप सामान्य हो जाता हैं।

खूनी बवासीर के लिये

1. सूखे आंवले को पीसकर 1 चाय का चम्मच-भर, सुबह शाम 2 बार छाछ या गाय के दूध से लेने से खूनी बवासीर में लाभ होता हैं।
2. अनार के छिलके का चूर्ण 8-10 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम ताजे पानी के साथ सेवन करने से रक्त गिरने की शिकायत दूर होती है।
3. रक्तस्रावी बवासीर में इमली के पत्तों का रस पीना लाभकारी होता है।
4. खूनी बवासीर, अजीर्ण और कब्ज में पका हुआ पपीता खाना परम लाभकारी है।

❊ मेथी के गुणकारी लाभ ❊

कितनी ही बीमारियाँ कब्ज के कारण ही होती हैं, जिस पर हम गौर नहीं करते और रोगों के चंगुल में फँस जाते हैं। कब्ज के कारण आँतों में जमा हुआ मल सडने लगता है। शरीर के विभिन्न अंगों में भी मल (सूक्ष्म-मल-क्लेद) जमा होने पर सड़ने लगता है। जिससे शरीर के वे अंग रोगग्रस्त होने लगते हैं। मधुमेह (डायबिटीज) में यह खासकर देखा जाता है, जिससे शरीर में से दुर्गंध आती है तथा खुजली होने लगती है। मेथी इस सूक्ष्म मल को भी निकालकर शरीर के विभिन्न अंगो को साफ कर देती है। इसलिये मधुमेह के रोगियों के लिये यह वरदानस्वरूप है।

मेथी के दानों के साथ मेथी की सब्जी, वह भी कच्ची सब्जी जरूर खानी चाहिये।

सुबह खाली पेट, दोपहर में तथा रात को भोजन के बाद आधा चम्मच (2 से 3 ग्राम) मेथी पानी के साथ फाँकने से जोड़ों में मजबूती आती है। जो व्यक्ति हर रोज नियमित रूप से पानी के साथ मेथी फाँकते हैं, उनके घुटने तथा शरीर के अन्य जोड़ मजबूत रहते हैं। उन्हें गठिया, लकवा, मधुमेह, कब्ज, पेट के विकार, निम्न रक्तचाप, उच्च रक्तचाप आदि नहीं होते। इस प्रयोग से कितनी भी भयंकर कब्ज दूर हो जाती है और सभी प्रकार के वात-विकारों में राहत मिलती है।

स्व. श्रीमति कमलादेवी रमेशचन्द्र सिंहल

जन्म – 15 जनवरी 1945 **स्वर्गवास – 07 मई 2021**

महू (इन्दौर)